ऐनीका उपन्यास

अनाथ

(मध्य एशियाके सोवियत क्रान्तिकी एक झलक)

(मूल ताजिकसे अनूदित)

राहुल सांकृत्यायन



इण्डिया पब्लिशर्स

प्रथम संस्करण : सन् १९४८



मूल्य २॥)



प्रकाशकः—इण्डिया पब्लिशर्स, ३३३ मोहतशिमगंज, प्रयाग।
मुद्रकः—रामशरण अग्रवाल, प्रगति प्रेस, ३ अ, ड्रमण्ड रोड, प्रयाग।

अनुवादककी ओरसे

"अनाथ" ऐनीका एक छोटा उपन्यास है, जिसे उन्होंने बालकोंके लिये लिखा है। यह मुख्यतः ताजिक और उ़ज्बेक बालक-बालिकोंके लिये लिखा गया है, जिनके प्रजातन्त्र अफगानिस्तानकी सीमापर पड़ते हैं। १९१७ की क्रान्तिसे १३-१४ वर्ष बादतक यह सीमान्त बहुत अशान्त रहा। जब अमीर बुखाराका तख्त डगमगाने लगा और सदियों-के शोषित-उत्पीड़ित अपने निष्ठुर शोषकोंके विरुद्ध उठ खड़े हुए, तो "धर्म डूबा" का नाम लेकर देशमें आग लगायी गयी, बच्चों-बूढ़ोंकी निर्मम हत्यायें की गयीं, गाँव-के-गाँव जला दिये गये, धर्म-योद्धा और ग़ाज़ी बनकर अत्याचारियोंने धर्मके नामपर जनतापर हर तरहका ज़ुल्म किया। इन अत्याचारोंका विस्तृत वर्णन ऐनीने अपने बड़े उपन्यासों "दाखुन्दा" और "जो दास थे" (गुलामों) में किया है। यहाँ भी उन आत्याचारोंका संक्षिप्त वर्णन आया है। ऐनीकी पुस्तक मुख्यतया सीमान्तके तरुण-तरुणियोंको यह हृदयस्थ करानेके लिये लिखी गयी है, कि मातृभूमिकी सीमा-रक्षाके लिये उन्हें कितना सजग रहनेकी आवश्यकता है। लेखकको कभी ख्याल नहीं आया होगा, कि उसकी यह पुस्तिका स्वतन्त्र भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें अनूदित होगी।

हमारे पाठकोंका इस पुस्तिका द्वारा कितना मनोरञ्जन होगा, इसे तो पाठक ही बतलायेंगे; लेकिन उनकी आँख इससे जरूर खुलेगी, और वह समझेंगे कि शोषक-वर्ग धर्मान्धताका कहाँतक आश्रय ले सकता है।

अमीर और उसके पिट्ठुओंको देश छोड़कर अफगानिस्तान भागना पड़ा। अफगानिस्तानका एक तटस्थ देशके तौरपर कर्तव्य था, कि अपनी भूमिको मध्य-एसियाकी नयी शक्तिके विरुद्ध युद्धकी तैयारी करनेका अखाड़ा न बनने देता, लेकिन यह नहीं हुआ। सोवियत मध्य-

एसियाके भगोड़े हथियार जमा करते थे, आदमी तैयार करते थे, फिर उन्हें सीमान्तकी नदी आमू (वक्षु) पार करा सोवियत देशमें लूट-मार करनेके लिये भेज देते थे। सोवियतको अधिकार था, यदि तटस्थ पड़ोसी तटस्थताका धर्म छोड़ देवे और दुश्मनोंको सिर्फ़ शरण नहीं दे बल्कि युद्धकी तैयारीकी सारी सुविधा देवे, तो उसके भीतरतक अपने दुश्मनोंका पीछा करे। यद्यपि अफ़गानिस्तान लारियाँ, पेट्रौल, तोपें नहीं दे रहा था, तो भी अफ़गानिस्तानके अमीरकी भगोड़े गाजियों-के प्रति सहानुभूति थी, तभी वह १९३१ तक कुछ-न-कुछ उपद्रव मचानेमें सहायता देनेमें समर्थ रहा। लेकिन धीरे-धीरे सारे सीमान्त-को इतना मजबूत कर दिया गया, कि गाजियोंके लिये कूदकर वहाँ पहुँचनेके लिये एक अंगुल भी जमीन न रह गयी। सीमान्तोंतक कलखोज (पंचायती खेतीवाले गाँव) भर गये, गाँवका हर एक परिवार एक सम्मिलित परिवार-सा होगया, सभी तरुण-तरुणियाँ जहाँ एक ओर शिक्षित होगये, वहाँ हथियार चलानेमें भी सिद्धहस्त बन गये।

"अनाथ" में सीमान्त-पारसे होनेवाले जिन उपद्रवोंका वर्णन आया है, उसका आरम्भ हमारी सीमापर भी कश्मीरमें हो गया है। पाकिस्तान अफ़गानिस्तानसे कहीं अधिक इस काममें भाग ले रहा है और हर जगह धर्मके नामपर उत्तेजित करके लोगोंको उसी तरह "मुजाहिद" (धर्म-योद्धा) बनाकर भेजा जा रहा है, जिस तरह अमीरकी मददके लिये अफ़गान (पठान) मुजाहिद बुखारातक पहुँचे थे और उन्हींकी सहायतासे अमीर भागकर सुरक्षित अफ़गानिस्तानमें पहुँच सका। वही अफ़गान मुजाहिद कश्मीरमें भी इस्लामकी रक्षा करनेके लिये पहुँचे है। हमें यह आशा नहीं रखनी चाहिये, कि एक बार कश्मीरसे इन मुजाहिदोंको निकाल देनेपर शान्ति स्थापित हो जायगी। पहाड़ोंमें कितने ही सालोंतक छिटपुट लूटमार जारी रहेगी, जिसका अन्त हम कश्मीरकी जनताको शिक्षित, और सुखी बना करके ही कर सकते हैं।

ऐनीके बारेमें पाठक जानना चाहेंगे। संक्षेपमें कहनेपर हम कह सकते हैं, कि ऐनी सोवियत मध्य-एसियाके प्रेमचन्द्र हैं। विशेष जिज्ञासा रखनेवालोंके लिये यहाँ उनके बारेमें हम कुछ और देते हैं। मेरे कहनेपर उन्होंने अत्यन्त संक्षेपमें अपनी जीवन-घटनायें लिख भेजी थीं, जिन्हें मैं यहाँ उद्धृत करता हूँ :

"मैं १८७८ में बुखारा जिलेके गिजदुवान तहसीलके साकतारी गाँवमें एक गरीब किसानके घर पैदा हुआ। बारह सालकी आयुमें अनाथ हो गया। बड़ा भाई (हाजी सिराजुद्दीन खोजा) बुखारामें पढ़ रहा था। उसने मुझे अपने साथ कर लिया। मैं वहाँ पेटके लिये काम करते पढ़ता रहा। मदरसा आलिमजानमें एक साल चौकीदारका भी काम किया। १९०५ से अध्यापकी करते मकतबोंके लिये पाठ्य पुस्तकें लिखता रहा। १९१५-१६ में एक साल क़िज़िल-तप्पाके कपासके कारखानेके कटाईके आफिसमें काम किया।

'१९१६' में बुखाराके एक मदरसेमें मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) नियुक्त हुआ। १९१७ के राष्ट्रीय आन्दोलन या फरवरी-क्रान्तिमें अमीर-के विरुद्ध भाग लिया। १६ अप्रैलको गिरफ्तार कर मुझे ७५ कोड़े मारे गये और "आबखाना"नामक जेलमें डाल दिया गया। रूसी क्रान्तिकारी सेनाने मुझे जेलसे निकाल कर कगानके अस्पतालमें रख दिया, जहाँ ५२ दिन रहकर स्वस्थ हुआ। १७ जून (१९१७) को समरकन्द आया। तबसे आजतक समरकन्द नगर मेरा निवास-स्थान है।

'मार्च १९१८ में कोलिसोफ़के सैनिक-आक्रमणके समय मेरे छोटे भाईको—जोकि मुदर्रिस था—पकड़वाकर अमीरने मरवा दिया। १९१८ से सोवियतके कालेजमें पढ़ाने लगा, साथही १९१७-२१ तक समरकन्द-के दैनिक और मासिक-पत्रोंमें साहित्यिक सम्पादकका भी काम करता रहा। बुखाराकी क्रान्तिमें भाग लिया और अमीरके विरुद्ध जनताको भड़काया। १९२२ में मेरे बड़े भाई (सिराजुद्दीन) को साकतारी गाँवमें बासमच्चियों (मज़हबी डाकुओं) ने मार डाला। १९२१ के अन्तसे

१६२३ तक सोवियत जन-प्रजातन्त्र बुखाराके वकील (गवर्नर) के नायबके तौरपर समरकन्दमें काम करता रहा।

"१६२३ के अन्तसे १६२५ तक समरकन्दमें सरकारी व्यापारका डायरेक्टर (संचालक) रहा। फिर १६२६-३३ तक तिर्मिज़में साहित्यिक और आनुसंधानिक डायरेक्टरका काम करता रहा। सितम्बर १६३३ में ताजिक सरकारने मुझे पेन्शन देकर कामसे छुट्टी दे दी, जिसमें कि मैं घरपर रहकर स्वतन्त्रतापूर्वक अपना साहित्य और अनुसन्धान-सम्बन्धी काम कर सकूँ।

"१६३५ से मैं उज्बेकिस्तानके ऊँचे शिक्षणालयों—उज्बेक सरकारी यूनिवर्सिटी (समरकंद), समरकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द ला-कालेज, मध्यएसिया यूनिवर्सिटी (ताशकन्द) के एम्. ए., डाक्टर-उम्मीदवार और डाक्टरकी परीक्षाओंका परीक्षक तथा सलाहकार होता हूँ। इस वक्त मध्य-एसिया यूनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी इब्राहीम मोमिनोफ़, उज्बेक यूनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी वाहिद अब्दुल्ला, डाक्टर-उम्मीदवारके विद्यार्थी मिर्ज़ाज़ादा, तथा ताशकन्द ट्रेनिंग कालेजके एम्. ए. विद्यार्थी मरदन शरीफ़ज़ादा और सदारत अयूबजानोफ़ मेरी देख-रेखमें अपने निबन्धोंके बारेमें अनुसन्धान कर रहे हैं।

"१६२३ में मैं ताजिक सोवियत समाजवादी प्रजातंत्रकी केन्द्रीय समितिका मेम्बर चुना गया। १६२६-३८ तक मैं उसका मेम्बर रहा। १६३१ में ताजिक सरकारने मुझे "लाल श्रम-ध्वज" का पदक प्रदान किया। १६३५ में ताजिक सरकारने एक मोटर और एक निवास-गृह प्रदान किया। इसी समय उज्बेक सरकारने सनद और रेडियो दिया।

"१६२३ में अखिल सोवियत लेखक-संघका मेम्बर चुना गया। १६३४-४४ तक अखिल सोवियत-लेखक-संघके प्रधान-मण्डल (प्रेसीदियम्) और ताजिकिस्तान तथा उज्बेकिस्तानके लेखक-संघोंकी ऊपरी समितियोंका भी मेम्बर रहा। अप्रैल १६४१ में सोवियत-सरकारने

"लेनिन-पदक" प्रदान किया। १९४३ में उज्बेक साइन्स-अकदमीका माननीय-सदस्य निर्वाचित हुआ। (युद्धसमाप्तिके बाद) "हिम्मतके कामके लिये" पदक मिला। १९३९ में स्तालिनाबादकी तरफसे सोवियत पार्लियामेंटका मेम्बर चुना गया। २६ अक्तूबर १९४० में "ताजिकिस्तान-सोवियत-समाजवादी-प्रजातंत्रका सम्मानित साइन्सी नेता" की उपाधि मिली। अक्तूबर १९४६ में उज्बेक यूनिवर्सिटी (समरकन्द) की साहित्य-फेकल्टीका डीन (अध्यक्ष) बनाया गया।

(समरकन्द) २३ अप्रैल, १९४७ 'ऐनी'

इस संक्षिप्त पत्रसे ऐनीके जीवनके बारेमें कितनी ही बातें मालूम हो जाती हैं। ऐनीका लड़कपन बहुत कष्टका जीवन था। उस समय स्कूलोंके नामपर मस्जिदोंमें मकतब हुआ करते थे, जहाँ लड़के पढ़ते कम और मुल्लाके डंडे ज्यादा खाते थे। ऐनीने अपने मकतबके बारेमें एक छोटी पुस्तक लिखी है, जिसमें एक जगह बतलाया है--"६ सालकी उम्रमें माँ बाप मुझे मस्जिदके मदरसेमें ले गये—मदरसेका मकान केवल ६×६ वर्ग गजका था, जिसे लकड़ीके कटघरोंसे ९ भागोंमें बाँट दिया गया था। विद्यार्थी इन्हीं ९ कटघरोंमें ढोरोंकी तरह बैठते थे। मुल्लाका डंडा सदा सिरपर तैयार रहता था। विद्यार्थी बिना समझे-बूझे कुरानकी आयतोंको जोर-जोरसे दुहराया करते थे। मैंने अपने जीवनमें दो स्वतंत्रताओंका अनुभव किया है, जिनमें एकको ४२ सालकी उम्रमें, जबकि ७५ कोड़े खाकर जेलमें पड़े मुझे छुड़ाया गया, और दूसरी उससे ३६ साल पहले ६ सालकी आयुमें, जब कि मुझे मकतब न जानेकी आज्ञा मिल गई। मैं नहीं कह सकता, दोनोंमें किसको मैंने अधिक पसन्द किया।"

१२ सालकी उम्रमें ऐनी भाईके साथ बुखारा चले गये। बुखारा सातवीं सदीसे ही इस्लामी-दुनियाका एक बहुत बड़ा शिक्षा-केन्द्र बना चला आया था, जबकि बनारसको यह सौभाग्य चार सदी बाद मिला। इस्लामी विद्याके लिये बुखाराका वही स्थान था, जो हिंदुओंके लिये

बनारसका। अमीरकी राजधानी और सरदारों तथा धनियोंका निवास-स्थान होनेसे वहाँ एक ओर विलासमें पानीकी तरह पैसा बहाया जाता था, तो दूसरी ओर भारी संख्यामें लोग असह्य दरिद्रता भोग रहे थे। एक ओर सैकड़ों वर्षसे स्थापित बड़े-बड़े मदरसोंमें प्राचीन विद्याके कितने ही धुरंधर विद्वान विद्या-दान कर रहे थे, तो दूसरी ओर घोर अज्ञानान्धकार छाया हुआ था। कुछ नौजवानोंमें तुर्कीके "नौजवान तुर्कों" की हवा लगी थी, और वह अमीरकी निरंकुशताको हटानेकी बात सोचने लगे थे। लेकिन बुखारा सिर्फ एक निरंकुशताके नीचे दबकर कराह नहीं रहा था। उसके ऊपर सबसे बड़ी निरंकुश जारशाहीकी छाया भी फैली हुई थी। तुर्कोंकी देखा-देखी बुखारामें भी "जदीद" (नवीनतावादी) आन्दोलन भीतर ही भीतर शुरू हुआ। ऐनी और उसके भाई आन्दोलनके संस्थापकोंमें से थे, इसीके कारण दो भाइयोंको बलि चढ़ना पड़ा।

बासमची ऐनीका तो कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे, क्योंकि वह सोवियतके इलाके (समरकंद) में रहते थे। उनके बड़े भाईको जब साकतारी गाँवमें बासमचियोंने मारा, तो चाहते थे कि उनके बाल-बच्चोंका भी सफाया कर दें; लेकिन साकतारीके खोजा (सैयद) लोगोंका धार्मिक दुनियामें बहुत सम्मान था। उनके खानदानके बुजुर्गोंकी समाधियाँ पूजी जाती थीं। जब गाँवके खोजा लोगोंको मालूम हुआ, तो वे बासमचियोंके पास गये और कहा: पहले हमें मार दो फिर इन बच्चों और स्त्रियोंका सफाया करना। बासमचियोंकी इतनी हिम्मत न हुई, इस तरह खानदान बाल-बाल बच गया।

ऐनी ग्रन्थ ही नहीं लिखते रहे हैं, बल्कि पंच-वार्षिक योजनाओंके समय जगह-जगह घूमकर वहाँ होते निर्माणके सम्बन्धमें पत्रोंमें लेख लिखते रहे, जिनमें वक्षु-उपत्यकाकी नहर और बिजलीके कारखाने भी सम्मिलित हैं। ताजिक नौजवानोंकी दूसरी पीढ़ीके निर्माणमें ऐनीका खास हाथ है। लेखक और कवि अपनी कृतियोंके हस्तलेखोंको उनके

पास भेजते हैं और वह उन्हें परामर्श देते हैं। १९४७के चुनावमें ऐनी ताजिक पार्लियामेंटके मेम्बर चुने गये।

ऐनीके उपन्यास 'दाखुन्दा' (हिन्दी अनुवाद छप चुका है) के बारेमें लिखते हुए दयाकोफ़ने कहा है: "सदरुद्दीन ऐनीका उपन्यास 'दाखुन्दा' अमीरके जमानेके पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान) के जीवनपर पहला सबसे बड़ा ग्रन्थ है। हमने ऐनीको पहले-पहल उपन्यासकारके तौरपर 'आदीना'में देखा, लेकिन 'दाखुन्दा' दूसरी चीज है। "दाखुन्दा' साहित्य-कलाकी एक बहुमूल्य कृति ही नहीं हैं, बल्कि उसका महत्त्व इस बातमें है कि इसमें बुखारा और ताजिकिस्तानकी सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और वर्गयुद्धका चित्र खींचा गया है। दाखुन्दामें वर्णित घटनाएँ सदा अपना राजनीतिक महत्त्व रखेंगी।

"इस उपन्यासका लेखक जदीद-आन्दोलनका एक नामी व्यक्ति और बुखाराके क्रान्तिकारी-आन्दोलनमें शुरूसे ही काम करनेवाला रहा है। इसलिये बुखारा-क्रान्तिकी घटनाओंका विवरण उसके मुँहसे सुनना, उसकी कलमसे पढ़ना एक खास महत्त्व रखता है।

"ऐनी यद्यपि उन व्यक्तियोंमेंसे है, जिन्होंने बुखारामें जदीद-आन्दोलनकी नींव डाली; लेकिन वह जदीदों और उनके आदर्शोंका रंगीन चित्र नहीं खींचता, बल्कि जदीदोंके असली चित्रको बिलकुल तटस्थताके साथ घटनाओंके आधारपर पाठकोंके सामने रखता है। ऐनीने दाखुन्दामें कलापूर्ण किन्तु सीधी-सादी भाषामें बतलाया है: जदीद मध्यमवर्गके सुधारक-समुदायके प्रतिनिधि थे; कष्टोंसे पीड़ित साधारण जनतासे उनका कोई सम्बन्ध न था और न वे उनके हकोंकी हिमायत करते थे। 'दाखुन्दा'में पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान) में बासमचियोंका पैदा होना, अनवर पाशाका आकर उनमें मिल जाना, तथा जदीदोंके अनवर तथा बासमचियोंसे सम्बन्ध को बड़े विस्तारके साथ बतलाया गया है। इसलिये 'दाखुन्दा'को सिर्फ एक साहित्यिक-कलाकी कृति नहीं समझना चाहिये, बल्कि मध्य-एसियाकी एक बहुत

महत्त्वपूर्ण क्रान्तिके इतिहासकी एक ऐतिहासिक कृतिके तौरपर देखना चाहिये।"

१६ नवम्बर १९३५को स्तालिनाबाद और दूसरी जगहोंमें ऐनीके लेखक-जीवनकी तीससाला जुबली मनाई गई। उसमें ताजिक सरकारके एक मंत्रीने भाषण देते हुए कहा :

"सामन्तशाही प्राचीमें रूदकी, फिरदौसी, सादी, उमर-खैयाम, हाफिज-जैसे कितने ही महान् विचारक और साहित्यकार पैदा हुए, लेकिन यदि वे फाँसीपर चढ़नेसे बच पाये, तो भी हमेशा उन्हें कष्ट दिया जाता रहा या वे देश-निर्वासित होकर रहे। विश्व-कवि और दार्शनिक नासिर खुसरोकी जीवन-घटना है। एक दिन वह नेशापुर नगरमें पहुँचे। दूरसे पैदल चलकर आये थे, इसलिये जूते फट गये थे। उन्होंने उन्हें सीनेके लिए मोचीको दे दिया। इसी समय शहरमें हो-हल्ला मचा। मोची अपने हथियारोंके साथ उस तरफ भागा। घंटा भर बाद अपने रक्त-रंजित उदर-आवरकके साथ लौट आया। 'वहाँ क्या बात हुई?'—नासिर खुसरोने पूछा। मोचीने जवाब दिया—'एक अधर्मी अनीश्वरवादी आदमी—जिसका नाम भी लेनेसे पाप होता है—का शिष्य हमारे नगरमें आया है।' कविने आग्रहपूर्वक पूछा—'जैसे भी हो, उसका नाम बताओ।' मोचीने जवाब दिया—'उस पापीका नाम नासिर खुसरो है। अभी धर्म-युद्ध घोषित हुआ और उसके शिष्यकी बोटियाँ-बोटियाँ उड़ा दी गयीं। मैं जरा देरसे पहुँचा और सिर्फ अपने उदरावरक ही को उसके खूनसे तर कर पाया। इसमें भी पुण्य है, मगर उतना नहीं।' 'बहुत ठीक' कहते कविने उत्तर दिया, किन्तु इस घटनाको सुनकर उसका दिल काँप रहा था। वह सोचने लगा, यदि मेरे शिष्यके साथ ऐसा कर सकते हैं, तो जान पानेपर मेरी क्या गत बनायेंगे। वह एका-एक अपनी जगहसे उठ चिल्लाकर बोला, 'नहीं, मैं इस नगरमें नहीं ठहर सकता, जहाँ ऐसे पतितके शिष्य रहते हैं, और जूतेको बिना लिये

नगरसे नंगे पाँव चला गया। यह था सामंतशाही प्राचीमें महान् कलाकारोंके साथ बर्ताव।

"आदीना" (ऐनीका प्रथम उपन्यास) ताजिकी साहित्यका यदि पहला उपन्यास है, तो सदरुद्दीनका दूसरा उपन्यास 'दाखुन्दा' निश्चय सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। ऐनीका नया उपन्यास 'जो दास थे' (गुलामान) इतिहासके एक भागका बहुत ही ज्ञानपूर्ण चित्रण है, और यह शुरूसे लेकर प्रजातंत्रमें कलखोजोंकी स्थापना और नये जीवनके निर्माणतक पाठकोंको ले जाता है।...ऐनीकी क्या कुछ विशेषता है, ऐनी किस तरहका श्रेष्ठ लेखक है? सबसे पहले और बड़ा काम ऐनीका है लम्बे ऐतिहासिक कालमें भीतर आ घुसे अरबीके शब्दोंसे ताजिक भाषाको शुद्ध करना। इसीलिये सर्व-साधारणके लिये समझनेमें सरल उनकी पुस्तकोंसे जनताने भारी संख्यामें लाभ उठाया।

"ताजिक-सोवियत्-समाजवादी-प्रजातंत्रकी केन्द्रीय कार्यसमितिके स्थायी सदस्यके तौरपर ऐनीने हमारे प्रजातंत्रकी संस्कृतिके निर्माण और स्कूलोंकी समस्याको हल करनेमें भारी काम किया है।...हमारे माननीय गुरू सदरुद्दीन ऐनी अधिक वर्षोंतक हममें रहें और शत्रुओं-को भयभीत कर हमारी समाजवादी जन्म-भूमिकी भलाईके काममें दत्तचित्त रहें।"

ऐनीकी जीवनीको देखनेसे मालूम हो रहा है, कि सोवियत् शासन-में लेखकों और कलाकारोंके लिये कितना ऊँचा स्थान है।

प्रयाग
३०-४-४८

राहुल सांकृत्यायन

प्रथम भाग

१

सन् १६२१ फरवरीका महीना था। आमूद (वक्षु) दरियाके किनारेका वृक्ष-वनस्पति-हीन समतल बयाबान निर्जीव-सा दिखलाई पड़ता था। सिर्फ दक्षिणसे अफगानी हवा सनसनाहट करती आ रही थी, जो इस निर्जीव भूमिमें मृत्युकालकी गति-सी जान पड़ती थी। हवाके साथ उड़ती धूलने काले बादलकी तरह सूर्यको आच्छादित कर रखा था और दिन रातकी तरह जान पड़ता था और वहाँ कोई चीज दिखलाई नहीं पड़ रही थी।

अनाथकी आयु अभी बारह वर्ष भी पूरी नहीं हुई थी। उसने आंधीके आरम्भ होते ही हौज-जैसे बने भेड़खाने में बायकी भेड़ोंको लाकर रखा और स्वयं द्वारपर पहरा देने लगा। उस आंधीमें बाहर खड़े बच्चेकी आँख-मुँहमें बालू भर गयी। वह आँखोंको हाथसे मजबूतीके साथ ढाँक मुँहको नीचेकी ओर करके जमीनपर लेट गया।



"उस आँधीमें बाहर खड़े बच्चे"

अभी आँधी शान्त न हुई थी, कि हिममिश्रित वर्षा पड़ने लगी और बच्चेके पतले और चगदा-चगदा हुये कंचुकसे होकर बूंदें उसके बदनको बेधने लगीं।

लड़का इस यातनाको न सह सका और अपने शिरको जमीनसे उठाकर सीधे बैठ गया। बयाबानके एक किनारे जहाँ कि वर्षाके कारण गर्द और धूलि साफ हो गयी थी, भेड़-बकरियोंके गिरोह, घोड़ों और पशुओंके गल्ले दिखलाई पड़े। जानवर उत्तरसे दक्षिणकी ओर, आमू नदीकी तरफ दौड़े जा रहे थे। भेड़खानेमें बंद भेड़ोंने इन भागते मालोंकी खुरोंकी आवाज सुनी, तो उनमें भी हलचल मच गयी।

लड़का डरने लगा। उसका शरीर सर्दीसे सूज गया था और अब भयसे काँपने लगा। वह सोचने लगा: "यदि मेरे हाथमें सौंपी भेड़ें तूफानमें भगे जाते इन जानवरोंके साथ भाग चलीं, तो मालिक मुझे मारे विना न छोड़ेगा"।

बच्चा मदार और दूसरी झाड़ियोंको लेकर कूरा (भेड़खाना)-के मुँहको मजबूतीसे बाँधकर हाथमें चरवाहोंकी लाठी ले रखवाली करते घूमने लगा।

भागकर आये जानवर कूराके सामने आ उसकी दोनों ओरसे हो निकले। कूराके भीतरकी भेड़ें उन्हें देखकर बाहर आनेका प्रयत्न करने लगीं, लेकिन लड़केने डंडा मारमारकर उन्हें बाहर नहीं आने दिया।

जानवरोंके निकल जानेपर उनके पीछे भाला हाथमें लिये पचीस-तीस घोड़सवार आये। उनमें से एक सवारने कूराके पास पहुँच घोड़ेसे उतरकर उसके मुँहपर रखी शाखाओं और झाड़ियोंको बाहर फेंक दिया और भेड़ोंके बाहर निकलनेका रास्ता खोल दिया। यह देखकर लड़केने उस आदमीकी तरफ निगाह करके कहा—चचा!

क्या कर रहे हो, क्यों हमारी भेड़ोंको भगा रहे हो ? यदि इनमें से एक भी गुम हो गयी, तो बाय मुझे मारे बिना न छोड़ेगा।

आदमी ने जवाब दिया—जनाब-आली (बुखाराके अमीर) बोलशेविकों (के डर) से भागकर नदी पार हो गये हैं। उनके पीछे-पीछे बाय (सेठ-जमीदार) अपने घरके निर्जीव-सजीव मालको ले नदी (वक्षु) पार कर गये। हम बयाबानमें रह गये जानवरोंको नदी पार करानेके लिये यहाँ थे और तेरी भेड़ोंको भी उन्हीं प्राणियों-के साथ नदी पार करायेंगे। तू क्यों डर रहा है ?

भेड़ोंके कूरासे निकलकर दूसरे जानवरोंके साथ हो जानेके बाद आदमी अपने घोड़ोंपर सवार हो उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

--मेरी माँको क्या हुआ होगा ? हाय मेरी मादरजान ! वह बायके पास थी। कहाँ है मेरी मैया--कहते बच्चा रोने लगा।

तेरी मां भी नदी पार हो गयी—वहाँ पहुँचे दूसरे सवारने बच्चे-से कहा। लड़केने इस सवारकी ओर देखकर उसे पहचान लिया। वह उसके मालिकका साला शाकुल था। बच्चेको निश्चय हो गया, कि उसकी माँ भी नदी पार हो गयी, उसे भी नदी पार हो माँके पास पहुँचनेकी इच्छा हुई और पशुओंको हाँककर ले जानेवाले आदमियोंके पीछे-पीछे वह भी चल पड़ा।

२

आमू नदीके पासवाले एक गाँवमें एशानकुल नामका एक बाय रहता था। उसके पास बहुत धरती-पानी था और उसकी खेती-में बहुतसे मजूर काम करते थे, लेकिन उसकी आमदनीका सबसे अधिक साधन पशुपालन था। बायके नौकरोंमें एक मुराद भी था, जो चरवाही करता था। वह चालीसके करीब पहुँच चुका था, लेकिन अभी तक उसने ब्याह नहीं किया था--या कहना चाहिये,

ब्याह नहीं कर सका था। वह बायके घरमें २५ सालसे काम करता आ रहा था, लेकिन मजूरीमें से कुछ बचा नहीं सका। बायसे जो कुछ उसे मिलता था, उससे वह कठिनाईसे अपनी दादी फातिमा बीबी और उसकी अनाथा पोती साराके हर रोजके खानेको जुटा पता था। फातिमा बीबी अपने पोतेकी नेकीको नहीं भूली, बायोंके खरीदकर अपनी बीवी बनानेकी इच्छा प्रगट करनेपर भी उसने अपनी पोती साराको एक कटोरा पानीके बदले मुरादको ब्याह उसे घर-जमाई बनाया।

ब्याह होनेके बाद कभी-कभी ही वह बायका काम छोड़कर अपने घर जाता। जानेपर भी रात भर वहाँ रह सूर्योदयसे पहले ही स्वामीकी सेवामें आ पहुँचता था।

ब्याह होनेके एक-आध साल बाद फातिमा बीबी मर गयी। उस वक्त मालिककी भेड़ोंको वह बयाबानमें चरा रहा था। उसे दादीके मरनेकी खबर मिली, लेकिन मुर्देके पास वह पहुँच नहीं सका। जिस आदमीने उसे यह खबर पहुँचायी थी, उस आदमीको मालिकके पास किसी दूसरे आदमीके भेजनेके लिये कहकर बहुत विनती की, जिसमें भेड़ोंको सौंपकर वह मुर्देके पास जा सके। लेकिन बायकी ओरसे कोई नहीं आया। लाचार मुराद भेड़ोंको हाँके बायके घर की ओर चला और सूर्यास्तसे एक घंटा पहले, अर्थात् प्रतिदिनके घर आनेके समयसे एक घंटा पहले वह बायकी हवेलीमें पहुँचा। एशानकुल बाय हवेलीसे निकलकर शामकी नमाजके लिये मस्जिद जा रहा था। उसने चरवाहेको आता देखकर पूछा—क्यों इतना सवेरे मालोंको लौटा लाया?

—क्या आपको नहीं मालूम कि मेरी दादी दुनियासे चल बसी—मुरादने बायके जवाबमें पूछा।

—मालूम है, लेकिन इससे क्या हुआ, एक बुढ़िया मर गयी मर गयी, क्या तेरे जल्दी आनेसे वह जी जायगी? क्या उसके मरनेके

कारण मेरी भेड़ोंको भी भूखा मारना चाहता है ?—बायने गर्म हो-कर कहा—मेरी एक-एक भेड़ तेरी दश बुढ़ियों से बढ़कर है।

मुरादने बायकी इन बातोंका जवाब नहीं दिया, लेकिन भेड़ों-को हवेलीके भीतर करते समय वह कुरकुरा रहा था—तेरी भेड़ें तो दूर, तेरे-जैसे बायोंके सौ शिरोंको भी अपनी मृत दादीके एक केश के बदले नहीं लूँगा।

मुरादने भेड़ोंको उनकी जगह कर दिया और प्रति दिन जो बाय-के घर रोटी-पानी मिलता था, उसे भी खाये बिना दादीके घरकी ओर दौड़ पड़ा।

फातिमा बीबीके मुर्देको दफनानेके बाद दूसरे दिन मुरादने उस गाँवको बिलकुल छोड़ देनेका निश्चय किया, क्योंकि उसका मन नहीं चाहता था, कि वह अपनी जवान बीबीको मालिकके घर-मे दूरके एक गाँवमें रख छोड़े। उसे अपनी स्त्रीपर पूरा विश्वास था, लेकिन लुहेड़ोंसे डरता था। इसलिये दादीके जमा किये कपड़े-लत्ते और सामानकी मोटरी बाँध अपनी स्त्रीको लिये बायके गाँवमें आया। वहाँ गाँवके एक कोनेमें एक बेमालिकका टूटा-फूटा घर था; उसे कुछ ठीक-ठाक कर मेहरियाको वहाँ रख फिर पहलेकी तरह बायकी सेवामें जाने लगा।

× × ×

बायको अपने मध्यवयस्क नौकरकी तरुण स्त्रीको देखनेकी इच्छा हुई। उसने उससे कहा—तेरी स्त्री मेरी बहू-जैसी है, बहूके स्वागतके लिये मुझे कुछ करना चाहिये, मैं उसका आतिथ्य करूँगा।

दूसरे दिन सबेरे मुराद अपनी स्त्रीको मालिकके घरमें रखकर भेड़ोंको हाँके चराने ले गया।

बायकी स्त्रियोंने साराको घरमें लाकर बड़ा भोज-भाज किया, जिस घरमें उसे बैठाया गया, वह बायकी छोटी स्त्रीकी कोठरी थी,

किन्तु उसके स्वागतके लिये सबसे अधिक कोशिश बायकी बड़ी स्त्री कर रही थी। पाहुनीके सामने तरह-तरहकी चीजें रखकर उसे खिलाया गया। बायकी बड़ी स्त्रीने अपने हाथसे मांसखंडको ले कर उसके हाथमें दिया, रोटीके ऊपर मक्खन डाला, ठंडी चायको फेंककर प्यालेमें गरम चाय रखके उसके सामने रखा।

लेकिन सारा इस सारी आवभगत और सम्मानसे अलग रही, मानो सचमुच ही वह नयी-नवेली बहू थी, और शिर नीचा किये बैठी रही। हाँ, नयी बहुओंकी तरह घरके मालकिनोंको हर एक बातमें अपनी जगहसे उठकर सलाम नहीं करती थी। उसने बहुत कम खाया। स्वामि-पत्नीके मांसखंडको भी संमान-प्रदर्शनके लिये उसके हाथसे लेके शिर झुकाकर धन्यवाद दिया, किन्तु उसे खाये बिना रोटीके ऊपर रख दिया। स्वामि-पत्नीने तीसरी बार ठंडी हो गयी चायको फेंककर प्यालामें फिर गरम चाय डाली, लेकिन साराने एक भी प्यालेसे ओठ नहीं भिगाया और भोजनके अंतमें दस्तरखानके कोनेमें रखे पानीके कटोरेसे दो घूंट पिया।

भोजन समाप्त होनेके बाद दस्तरखान (परोसनेकी चादर) के लिये फ़ातिहा (कुरानका एक मंत्र) पढ़ा जाने लगा। इसी समय "हमदम!" की आवाज़ आयी।

यह आवाज बायकी थी। जिस समय बीबियाँ छोटी बीबीकी कोठरीमें साराका आतिथ्य कर रही थीं, उस वक्त बाय बड़ी बीबीकी कोठरीमें बच्चेके साथ खाना खा रहा था। आवाज सुनते ही बड़ी बीबी "जी हाँ, अभी आयी" कहते अपनी जगहसे उठकर पतिकी ओर दौड़ी।

हमदम बायकी बड़ी बीबीका नाम न था। उस समय पति अपनी स्त्रियोंको नाम लेकर नहीं पुकारते थे, क्योंकि स्त्रीके मुँहकी तरह उसके नामको भी छिपाना जरूरी समझा जाता था, यदि नाम पुकारा जाता, तो बेगाना आदमी सुन लेता। इतना ही नहीं, वह दीवार और

घरको भी बेगानाकी तरह समझकर वहाँ भी बीबीका नाम नहीं पुकारते थे। स्त्रीका नाम केवल दो बार लिया जाता था और वह भी दमुल्ला इमाम (पुरोहितजी) की ओरसे : एक बार निकाह (व्याह)-की रातको, और दूसरी बार उसके मरनेके दिन जब कि मुल्लोंको दान देकर जिन्दगी भरके पापोंको बेंचा जाता था।

"हमदम" बायके लड़केका नाम था, जो बड़ी बीबीके व्याहके आनेपर पहली बार पैदा हुआ और बचपन हीमें मर गया था। बाय इसी नामसे हमदमकी माँको पुकारा करता था। पीछे जब छोटी बीबीसे शादी की, तो उससे अलग करनेके लिये भी वह उसे उस नामसे पुकारने लगा। छोटी मेहरियाको जब बेटवा पैदा हुआ, तो उसका नाम रुस्तम् रखा और तबसे छोटी बीबीको "रुस्तम्" कहके पुकारने लगा।

बायकी बड़ी बीबी हमदम पतिके हाथमें मिठाई देखकर उसे ले लौट आयी और सारासे कहा—"तेरे चचाने अब तक किसी-को अपनी मिठाईमें से नहीं दिया था। उन्होंने कहा है कि इसे बहू-को देकर मेरे सामने ले आ, कि मैं उसकी मुँहदिखाई करूँ।"

साराने बायकी इस अकारण कृपाके बारेमें कुछ नहीं कहा और न उसके चेहरेपर प्रसन्नता या अप्रसन्नताका कोई प्रभाव ही दिखलाई पड़ा; किन्तु बायकी छोटी बीबीकी अवस्था दूसरी हो गयी, वह तिरछी निगाह किये अपनी सौतकी ओर देखने लगी। बड़ी बीबी इसका अर्थ समझती थी, तो भी अनजान बनकर उसने मिठाई डाल दो प्यालोंमें चाय बना एक प्याला सौतके सामने और दूसरा सारा-के सामने रखा।

—मैं मीठी चाय नहीं पीती—छोटी बीबीने गर्म होकर कहा—बहू-को दो, चचाने मिठाई इसके लिये भेजी है।

—अच्छा, तुम नहीं पीती हो तो मैं पीती हूँ—कहकर बड़ी बीबी-ने सौतके सामनेसे मीठी चाय लेकर और भी कहा— चचाने बहू-

के लिये मिठाई भले ही भेजी हो, किन्तु कहावत नहीं सुनी है "शाली-की बदौलत घास भी पानी पा जाती है।"

—लेकिन मैं तुम्हारी तरह घास नहीं हूँ। मैं धान हूँ, "फले-फूले धानकी तरह खड़ी हूँ।"—कहते छोटी बीबीने गुस्सा होकर अपने मुँहको दीवारकी तरफ फेर लिया और दीवारपर लटकते दर्पणपर दृष्टि डाल अपने अश्रुपूर्ण मुखको देखती आँखकी कोरसे साराकी ओर देखने लगी। लेकिन सारा उससे अधिक अल्पवयस्का और सुन्दरी दीख पड़ी, जिससे उसका क्रोध चिन्तामें बदल गया। वह सारा-की ओरसे दृष्टि हटाकर चिन्तित भावसे नाखूनके नोकसे घरमें बिछे गिलमको कुरेदने लगी।

—ख्याल रखना कि फलते-फूलते मंडगिल्ला न बन जाना—बड़ी बीबीने सौतके क्रोधपर व्यंग करते कहा।

दोनों सौतोंका मौखिक द्वन्द्व बढ़ते-बढ़ते हाथापायीपर पहुँच रहा था, इसी समय "हमदम, बहूको जल्दी ले आ" कहकर बायने आवाज दी और झगड़ा वहीं खतम हो गया।

"अच्छा, आती हूँ" कहकर बड़ी बीबीने अपनी जगहसे उठ फिर जरा झुककर साराके सामने ठंडी पड़ी चायको एक घूँटमें पी डाला और "उठो बहू, अपने चचाको बहुत प्रतीक्षा न कराओ" कह-कर साराको हाथसे पकड़ जबर्दस्ती धकेलते अपने पतिके सामने ले गई।

उन दोनोंके चले जानेके बाद "मुझे दबाना चाहती है" कहती छोटी बीबीने उठकर दर्पणके पास जा अपने मुख, केश, आँख और भौंहको एक बार अच्छी तरहसे देखा और अपनेको तसल्ली देते हुये कहा— ने, नहीं कर सकती।

इसी समय इस्तमूने "आचा! दादाके पास जंगा (भाभी) बैठी है" कहते घरमें आकर छोटी बीबीके ध्यानको दर्पणसे हटा दिया।

उसने इस्तमूकी ओर निगाह करके कहा—वह जंगा नहीं है, वह भी तेरी आचा बनेगी।

—वह गन्दी है, वह मेरी मा नहीं बनेगी—इस्तमूने नाराज़ होकर कहा।

अपने बेटेके मुंहसे साराके लिये "गंदी" शब्द सुनकर छोटी बीबी-को कुछ संतोष हुआ और इस्तमूको गोदमें लेकर मीठी चायकी चायनिकके पास बैठ उसे प्यार करते सोचने लगी "मैं व्याहता बीबी हूँ, मेरा पुत्र उसकी प्रिय संतान है, चाहे वह कैसा भी कामान्ध हो, किन्तु मेरे सामने भुक्खड़की लड़कीसे कैसे प्रेम कर सकता है?"

छोटी बीबीने इन बातोंसे अपने दिलको तसल्ली दे चायनिक (चायदानी) में बची मीठी चायको दो प्यालोंमें डाल एकको स्वयं ले दूसरेको इस्तमूके हाथमें दिया।

बड़ी बीबीने साराको बायके सामने लाकर कहा—अपने चचा बायको सलाम करो।

साराने अपने शिरको झुकाकर मुंहको अपनी आस्तीनसे छिपा शिर हिलानेके संकेतसे बायको सलाम किया।

बायने मुसकुराते हुए साराकी ओर निगाह करके कहा—विराजो मेरी बहू!

बायके इस कहनेपर भी सारा अचल रही, किन्तु बायकी बीबीने उसे जोरसे दबाकर बैठा दिया। बैठते वक्त सारा जहाँतक हो सका बायसे दूर दीवारके पास बैठी और दाहिने जानुको भूमि-पर रख बायें जानुको उसके ऊपर झुकाया और दाहिने हाथको लिलारपर रखकर मुंहको दीवारकी तरफ आधा झुकाये बैठ रही। बायने बहुत देखनेकी कोशिश की, किन्तु वह साराके मुहको ठीकसे नहीं देख सका, क्योंकि उसके मुंहका एक भाग दीवारकी तरफ था और दूसरा हाथके आस्तीनसे छिपा हुआ था।

बायने पासमें बैठे अपने तीनसाला पुत्र इस्तमूको उठाकर साराकी ओर निगाह करके कहा "जा जंगाके पास, वह तुझे चुम्बन देगी।"

बच्चा शर्माते-शर्माते साराके पास गया, किन्तु उसने उसे चुम्बन न दिया, न उसे हाथमें लिया, न ही उसकी ओर ताका। बच्चा बाप-की ओर निगाह करके खड़ा रहा, मानो वह पूछना चाहता था कि उसकी इस हरकतपर अब उसे क्या करना चाहिये।

—जा मेरे बच्चे! अपनी माके पास, वह तुझे अपना चुम्बन देगी—बायने कहा। बच्चा दौड़कर घरसे बाहर चला गया।

बायने एक चौपती गुलनारी रूमालको बालिशपरसे उठाकर साराकी ओर बढ़ाते हुए कहा: "ले बेटी इस रूमालको। यह मेरी ओरसे तेरी मुंह-दिखाई है।"

साराने मानो बायकी बात ही नहीं सुनी, वह न बोली, न हिली-डोली।

बाय अपनी जगहपर जानुके बल हुआ और अपने ऊर्ध्वकाय-को साराकी ओर झुकाकर हाथकी रूमाल को उसके पास ले जाकर कहा—"मेरी प्यारी बेटिया, मधुर-प्राण! ले इस रुमलियाको, ले मुंह-देखाई।"

अबकी बार साराने मुंहको दीवारके और भी नज़दीक करके शरीरको दीवारसे चिपकाकर आँखोंसे बायकी ओर देखा। वह सियार-देखे मुर्गेकी तरह वैसे ही निश्चल खड़ा रहा।

बाय किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। यदि अब भी साराके और नज़दीक हो उसके हाथमें या बगलमें जबर्दस्ती रूमाल रखे और वह खड़ी होकर भाग जाय, तो क्या होगा? बाय स्वयं उसके पास जाकर और मिन्नत करनेके लिये तैयार न था, क्योंकि नौकरकी बीबी और किसी भुक्खड़की लड़कीसे तिरस्कृत होनेको वह अपमान समझता था।

लेकिन बाय-पत्नीने इस कठिन समयमें सहायता की। उसने साराको अपनी जगहसे उठाकर कहा:

—जा अपने चचा बायके हाथसे रूमाल लेकर धन्यवाद कर और उसे अपने घर ले जाकर होनेवाले अपने पुत्रके लिये "मेरा पुत्रभी बाय चचाकी तरह धनी होवे" कहते अभिलाषा कर।

साराने लज्जासे लाल हो बायके हाथसे रूमाल ले ली और घरसे निकलकर उस कोठरीमें गयी, जिसमें उसकी मेहमानी की गयी थी।

पहले तो बायने साराको ठीकसे नहीं देखा था, किन्तु हाथसे रूमाल लेते वक्त उसने ध्यानसे देखा : उसकी आँखें और भौंहें काली, पलकें लम्बी और ऊपरकी ओर कुंचित, लम्बे काले बाल बारीक मीढ़ोंमें बंटे, और सेब-जैसा लाल मुख—देखकर बाय चकित रह गया। अपने पुराने वस्त्रोंमें सारा उसे बालू-मिट्टीके भीतर पड़े सुवर्ण-खंडकी तरह चमकती जान पड़ी। उसका प्रकाशपूर्ण मुख काले बालोंके भीतर अभ्रसे अर्ध-आच्छादित पूर्ण चन्द्रकी तरह शोभित था; काली भौंहोंके नीचे उसकी चमकीली आँखें भिनसारके अंधेरेमें चमकते शुक्र ताराकी तरह थीं और देखनेवालेको मुग्ध किये बिना नहीं रह सकती थीं।

× × ×

स्वागतके दिनसे ही बाय साराको हाथमें करनेके लिये प्रयत्न करने लगा। इस काममें बीबियोंकी प्रतिद्वन्द्विताने सहायता की। जबसे बायने छोटी बीबीसे व्याह किया था, तबसे बड़ी बीबी उसके मनसे उतर गयी थी। अपने रूप-सौन्दर्यसे आकृष्टकर छोटी बीबी अपने पति द्वारा सौतको खूब कष्ट दिलाती और स्वयं भी झगड़ती रहती। लड़ने-भिड़नेमें बड़ी बीबी अपनी सौतसे पीछे नहीं थी, लेकिन छोटी बीबी पतिसे शिकायत करती और वह उसकी ओरसे बड़ी बीबीको फटकारता और कभी-कभी मारता भी।

अब बड़ी बीबीको सौतसे बदला लेनेका मौका मिला। वह किसी दूसरी तरुणीके बीचमें पड़कर बायसे सम्बन्ध कराना चाहती

थी, जिसमें कि वह स्त्री उसकी सौतको पींड़ा दे, अपनी तरह शत्रुके दिलको भी जलावे। बड़ी बीबीकी इच्छा-पूर्तिके लिये साराका आना बहुत अच्छा था। उसने बायकी दुष्ट इच्छापूर्तिका भार अपने ऊपर लिया और स्वागतके दिन साराके हाथमें रूमाल दिलाना उसका पहला क़ारनामा था। उसके बाद पतिसे सलाह करके साराको फँसानेका प्रयत्न उसने फिर शुरू किया।

वह प्रतिदिन साराको बुलवाकर घरके कामोंमें मदद लेती, बीच-में चाय पीनेकी छुट्टीके समय मौका पाकर बायकी प्रशंसा करती— बाय शुद्ध हृदयसे स्त्रियों और लड़कियोंसे स्नेह रखता है। विशेषकर साराके प्रति वह पैतृक वात्सल्य रखता है। यह कहते वह साराको नसीहत देती थी कि वह बायसे न शर्माये और उसके हृदयको जाननेकी कोशिश करती। इसी तरह वह एक दिन नसीहत दे रही थी :

—यदि बाय तेरे साथ कोई दूसरी इच्छा रखता, तो क्या मैं अपने घरमें तुझे आने देती? कौन ऐसी स्त्री है, जो अपने पतिसे अनुचित सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये दूसरी स्त्रीको मौका देगी?

बड़ी बीबी जो रास्ता तैयार कर रही थी, उसीके अनुसार बाय दोस्ती और मेहरबानी करते बातचीत करता और बातको कभी-कभी हँसी-मज़ाक तक पहुँचा देता। बड़ी बीबीकी बातोंको सुनकर सारा बायकी ओरसे कुछ-कुछ शंकारहित हो चली थी, लेकिन छोटी बीबीके व्यवहारसे उसका संदेह दूर नहीं होने पाता था। वह हर समय सारा-पर व्यंग छोड़ती और बायके घरमें आने-जानेके लिये कभी-कभी सीधे फटकारती। सचमुच छोटी बीबीका बर्ताव साराके साथ एक सौत-जैसे था।

कुछ समयतक संकेतसे बातचीत करते बायने अपने भावको सीधे खोलके रखना चाहा। एक दिन सारा बायके घरसे निकलकर

अपने घरकी ओर जा रही थी, बाय बाहरी और भीतरी हवेलीके बीचमें एकाएक उससे मिला और उसने अपने एक हाथसे उसके हाथको पकड़कर दूसरे हाथसे उसकी अँगुलीमें एक चाँदीकी अँगूठी पहनाना चाही। साराने कुपित हो अपने हाथको खींचकर बायसे कहा—यह बुरा है, अफसोस है तुम्हें, शर्म कीजिये।

साराने यह ऊँची आवाजमें कहा। बड़ी बीबीने यद्यपि सुनीको अनसुनी कर दिया, लेकिन छोटी बीबी सुनकर "क्या बात, क्या बात" कहती वहाँ पहुँच गयी, लेकिन मेहरियाके वहाँ पहुँचनेके पहले ही सारा बायके घरसे निकलकर चली गयी थी।

साराने अपने घरमें जाकर मुँह-दिखाईके लिये बायकी दी हुई रूमालको—जिसे उसने अबतक इस्तेमाल नहीं किया था—उठा लिया और लौटकर बायकी बाहरी हवेलीके सामने उसे फेंक दिया। उस दिन जो साराने बायके घरको छोड़ा, तो फिर उसने उधर पैर नहीं रखा।

× × × ×

यद्यपि साराने बायके घरकी ओर पैर रखना बिलकुल छोड़ दिया था, लेकिन बायने अब भी आशा नहीं छोड़ी थी। वह अब साराको सोलहो आना अपने हाथमें करनेका दाँव सोच रहा था। लेकिन इसके लिये मुरादको संतुष्ट करने और मधुर व्यवहारसे अपनी ओर खींचनेकी ज़रूरत थी।

उस दिन जब शामको मुराद भेड़ोंको लेकर लौटा, तो बायने मेहमानखानेमें अपने और साराके बीच जो घटना उस दिन हुई थी उसे इस तरह दोहराया :

—मैं तेरी बीबीको अपनी बेटी अपनी बहू-जैसी समझता हूँ और इसीके अनुसार व्यवहार करता हूँ। आज उसे पैतृक स्मृतिके तौरपर एक चाँदी की अँगूठी देना चाहता था, नहीं जानता उसे क्या

संदेह हुआ, उसने मुझे खरी-खोटी सुनाई और तेरी भाभियोंके सामने मुझे अपमानित किया।

मुराद इस घटनाको सुनकर अपने विचारोंमें डूब गया। बायने उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते फिर कहा--साराकी बातोंको सुनकर कहीं तू मुझसे नाराज न हो जाय, इसीलिये मैंने तुझसे सीधे बात की। उसको समझा दे, कि वह फिर मेरी हवेलीमें न आये-जाये।

मुरादको कहीं यह ख्याल न हो जाय, कि बाय उसे नौकरीसे छुड़ा देगा, इसलिये बाय बहुत नर्मीसे बोला--मेरी इस बातसे तू यह न समझ कि मैं तुझसे या सारासे नाराज हो गया। उसके आने-जानेके लिये मना करनेका मेरा मतलब यही है, कि औरतोंके बीच बेकार कहा-सुनी न हो, अन्यथा मैं उसके व्यवहारको बच्चेकी बात समझकर दिलमें नहीं लाता। आगे भी तुम्हारी जो कुछ भी भलाई कर सकता हूँ, उसे करनेसे उठा न रखूँगा। पहले जब तू एक शिर और एक शरीर था, उस वक्त "तुझे क्या पैसा-कौड़ी चाहिये" पूछकर मैंने तेरी ठीकसे सहायता नहीं की, लेकिन अब तू गृहस्थ है, एक दूसरे आदमीकी रोजी भी तेरे शिरपर है; मैं अब इसका ख्याल रखूँगा।

बाय चुप हो गया। मुरादने समझा कि बायकी बात समाप्त हो गयी और वह अपनी जगहसे उठने लगा। बायने फिर मुँह खोला। मुराद बैठकर फिर सुनने लगा :

---जो सुना है---बायने कहा---उससे जान पड़ता है, कि जल्दी ही तुम तीन शिर होनेवाले हो। इस बातको सुनते ही, मैं एक दुधार बकरीको तेरे होनेवाले पुत्रका ख्याल करके रख रखे था। जिस दिन गदेला (बच्चा) प्रगट होगा, उसी दिन इस बकरीको तुझे दूँगा कि घर ले जा बच्चेको दूध पिलाये। मेरी नेकियाँ यदि सारा नहीं मानती, तो कोई बात नहीं "वह नहीं जानती, तो खुदा तो जानता है।"

थोड़ी देर रुककर बायने फिर कहा—अच्छा, अब अपने घर जा, विश्राम कर और साराके संदेहको दूर कर।

मुराद अपने घरकी ओर चला। उसके दिलमें हजारों संदेह और विचार आ रहे थे। लेकिन घर जाकर सारे संदेह दूर हो गये। इससे पहले साराने बायकी सारी बातें मुरादसे नहीं कही थीं। आज उसने अपने और बायके बीच हुई सारी बातोंको आदिसे अंततक कह सुनाया। सुनकर मुराद बायकी बुरी नीयतको अच्छी तरह समझ गया।

जिसने उसकी इज्जतको बर्बाद करना चाहा, ऐसे आदमीके घर-में काम न करनेका संकल्प उसने कर लिया, लेकिन उसे जल्दी कार्य-रूपमें परिणत करनेमें वह सफल न हुआ। बायके काम छोड़नेपर किसी दूसरी जगह काम पकड़नेकी ज़रूरत थी, लेकिन एक बायके घरसे काम छोड़नेवाले नौकरको दूसरे बाय अपने घर नौकर न रखते थे। गाँवके दूसरे गरीब किसान अपने ही दूसरेके द्वार पर चाकरी करते थे, उनके पास कहाँसे काम मिलता। दूरके गाँवोंमें काम ढूँढ़नेके लिये जाना मुरादको ठीक नहीं लगा, क्योंकि तब उसे अपनी बीबीको अकेली छोड़कर जाना पड़ता और यह भयावह चीज थी, क्योंकि गाँवका सबसे बड़ा बाय उसके ऊपर आँख गड़ाये हुए था। उसने सोचा चाहे झूठ भी हो, किन्तु बायने कहा था "मैं तेरी स्त्रीपर कुदृष्टि नहीं रखता, उसे अपनी बेटी और बहूकी तरह समझताहूँ।" इसी बहानेसे अनजान बन अभी बायके पास ही काम करना ठीकहै। जब कोई दूसरा अनुकूल स्थान मिल जायगा तो यहाँसे चल दूँगा। इस तरह मुराद फिर पहलेकी तरह बायके घरमें काम करने लगा।

३

अँगूठीवाली घटनाके चार-पाँच मास बाद सारा एक पुतवाकी मां बनी। नवजात पुत्रके पधारनेके कारण मां-बापके आनन्दका कोई ठिकाना नहीं था। इसी आनंद या शादीका ख्याल करके उन्होंने बच्चेका नाम "शादी" रखा।

पुत्र-प्रसवके समय साराको जो कष्ट हुआ और जो कि हर माता-को प्रथम प्रसवके समय होना स्वाभाविक है, उससे त्रास और भय खाते भी एक फूलकी तरहका बेटवा प्राप्तकर सारा सारे कष्ट भूल गई। इसके साथ ही, सारा एशानकुल बायके उस दुर्व्यवहारको भी करीब-करीब भूल गयी; विशेषकर बायने जब उसके बाद फिर कोई दुश्चेष्टा नहीं की और ऊपरसे हर तरहकी मदद देनेमें कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। इससे मुरादका भाव बायके प्रति बदल गया और उसके प्रयत्नसे साराने भी खिंचावको दूर कर दिया। दोनों समझने लगे थे कि बायकी वह चेष्टा शैतानका क्षणिक बहकावा था, उसके बाद बायने अपने कामको नापसन्द कर तौबा कर लिया। जब बच्चेके जन्मको सुनकर बायने उसी दिन जनी एक बकरीको मुरादके घर भेजा, तो मुरादका विश्वास और दिल-पूरी और भी दृढ़ हो गयी।

बायकी बड़ी बीबी बच्चेको देखनेके लिये साराके घर आयी और रवाजके अनुसार सूफ़ी* की सिली हुई एक कुर्ती लायी। वह बच्चेके लिये आयु और धन, साराके लिये स्वास्थ्य और बलकी कामना करके अपने घर लौट गयी। इस बार उसने बाय या उसकी नेकी या मेहरबानीकी बात नहीं कही। उसने ऐसा दिखलाया कि बायके सम्बन्धमें जो प्रशंसा और दूसरी बातें सारासे की थीं, उसके लिये वह लज्जित है और शैतानके बहकावेमें पड़कर ही बायने उसे साराके सामने लज्जित कराया।

बाय-पत्नीके इस व्यवहारने भी बायकी दुश्चेष्टाको शैतानका बहकावा समझनेमें सहायता दी और साराने बहुत कुछ बायको क्षमा भी कर दिया।

× × ×

---

*मूल्यवान वस्त्र

प्रसव-पीड़ाके उन दिनोंके बीत जानेपर साराकी भूख बहुत बढ़ गयी। जो चीज भी खाती, मानो वह सब दूध और मांस बन जाती—दूध उसके प्राण-प्रिय बच्चेको तृप्त और पुष्ट करता और मांस उसके शरीर-में मिलकर उसे और पीवर तथा कमनीय बनाता।

सारा प्रतिदिन बच्चेको कपड़ेमें लपेटकर स्वच्छ खुली हवामें घुमाने ले जाती। नवजात बयाबानमें खिले लालों और खेतोंके किनारेकी हरियालीको देखकर आनन्दित होता। जब साराके पास आनेपर तितलियां हरियाली और फूलोंसे उड़तीं, तो शादी भी मानो उनके साथ उड़नेके लिये अपनी मांके गोदमें उछलने लगता; न जाने क्यों गुलाब और लालाके फूलों, हरियाली और तितलियोंको देखकर नवजात इतना उल्लसित होता, कि अर्ध-विकसित कलीकी भांति वह अधखुले अधरोंसे हँसने लगता।

करुणामयी माँ सारा अपने प्राण-प्रिय बच्चेपर जी जानसे न्यौछा-वर थी और नवजातके लिज़ारको फूलपर बैठी मधु-मक्खीकी तरह चूमते न अघाती थी; जैसे मधु-मक्खी फूलपर बैठी अपने दोनों सूंडों-से फूलको पकड़कर चूसती है, वैसे ही सारा भी बच्चेके मुंहकी दोनों ओर अपनी दोनों अंगुलियोंको बड़ी कोमलताके साथ लगाकर उसके हासको और भी मधुर, और भी लावण्यमय बना देती।

अपने नवजातको देख-देखकर साराका हर्ष इतना बढ़ता गया कि उसने उसे इस प्रकार पद्योंमें बाँध दिया :

शादी-जान मेरा मेहरबान मेरा।
तुझे न दुख हो कभी जान मेरा।
लाला बढ़ा है हरितावली है।
गुलाब सा हंसता - शादी-जान मेरा।
बसन्ती हवाएं जगत में चलीं।
है जान मेरा शादी-जान मेरा।

... जब शादी कुछ और बड़ा हुआ और अपने हाथ-पैरोंको स्वतन्त्रतापूर्वक घुमा सकता था, तो साराको शादी (प्रसन्नता) और भी अधिक हुई। कभी-कभी सारा घासके ऊपर अपने पैरोंको फैलाके बैठती और शादीको भी अपने सामने जानुओंपर बैठाती। उस वक्त सारा बच्चों लायक छोटे-छोटे गीत अलग-अलग अक्षरोंके उच्चारणके साथ गाती :

शादी जान मेरा, मेहरबान मेरा।
तुझे न दुख हो, कभी जान मेरा।

शादी गीतके साथ-साथ हाथ पैर और सारे शरीरको हिलाकर उसे गतिमें दुहराता। वह अपने पंजोंको फैलाये, हाथोंको ऊपर उठाये ऐसे ताली बजाता, कि ताली स्वरके अनुरूप पड़ती और इसी वक्त शिरको उठाकर हिलाता, मानो वह उठकर नाचना चाहता। सारा शादीको प्रसन्न देखकर और भी खुश हो गाती :

तेरी काली आँख काकको, माँ न देखे दागको।
मेरी आँख मेरा चिराग, प्रकाशित हो तेरा बाग।

साराके गीत गाते वक्त थोड़ी देर सुस्ता शादी भी गीतके अनुसार शरीरको चलाने लगता।

इस तरह बच्चोंके संगीतके अन्तमें सारा सदा इन लोरियोंको गाया करती :

हा दूरसी दूरसी दूरसी[1], जा तू ऊपर कुरसी।
तेरे रूपका है गुलाम गुलाब, तेरी सुन्दरता है कमाल।
कम न हो तेरा मिलन।
हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।
तेरी सुगन्ध बसन्त सी, तेरा मुँह है अनार-सा।
तेरे केश जैसे कस्तूरी।

---

[1]दूर हो।

हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।
तेरा मुख उल्लसित हो, शोक तेरे मनसे दूर हो।
शत्रु तेरा अन्धा हो।
हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।

जिस समय सारा इन लोरियोंको गा रही थी, शादी भी अपने अंगोंको हिलाते अपने बैठनेकी जगह चक्कर काट रहा था, जिसमें उसका शिर और हाथ ही नहीं, बल्कि अलग-अलग सारे अंग आँख-भौंह-पीठ-मांस और नस-नस एक तानमें हिल रहे थे। साराकी प्रसन्नता और बढ़ी और वह अपनी जगहसे उठ बच्चेको हाथमें उठाकर हवामें उछालने-पकड़ने लगी और उसके हाथ-पैर-शिर-गर्दन-आँख-मुँह सभी जगहको स्नेहसे चूमने लगी। जान पड़ता, शादीको भी कृपामयी माँके इस व्यवहारसे हर्ष हो रहा था। इसीलिये वह खा-खाकर हँसता था। भाषासे अपरिचित होनेपर भी वह अपने भावोंको अङ्-उङ् करके प्रगट करता और दूसरे अज्ञात शब्दों द्वारा भी अपने अन्तरको खोलना चाहता। सारा भी अपने प्राणप्रिय शिशुके गालों पर नरम-नरम अँगुलियोंको लगाकर उसी तरहकी अपरिचित ध्वनियोंमें जवाब देती। ध्वनियोंका अर्थ चाहे माँको न भी मालूम हो, लेकिन वाणी-हीन शादी उसे समझता था। इसीलिये ऐसी ध्वनियोंके बोलते समय शादी कान देकर सुनता। जब माँ चुप हो जाती, तब वह खखा करके हँसता और फिर अव्यक्त ध्वनियों द्वारा कृपामयी माँको जवाब देता।

× × × ×

बकरी और बकरीका बच्चा भी सारा और शादीके लिये एक भारी मनोरंजनके कारण थे। जब शादी सो जाता, तो सारा खेतों, नहरों और मैदानसे हरी घासोंको लाती। बकरीको खिला-पिलाकर उसने उसे खूब मोटी-ताजी और दुधार बना दी थी। जब सारा शादीको उठाये बकरीके पास जाती, तो वह बकरी, विशेषकर बच्चेको देखकर

प्रसन्न होती। बच्चा साराके इशारेपर चारों तरफ दौड़ता, तनूरके ऊपर चढ़कर कबूतरकी तरह हवामें छलांग मारता और अगले दो पैरोंको उठाकर आदमीकी तरह खड़ा होता, पेड़ पानेपर उसपर छलांग मारता, मुरादके झोपड़ेकी दीवार तो मानो उसके खेलनेके लिये ही बनायी गयी थी, और वह एक कूदानमें उसके ऊपर पहुँच जाता और साँपकी तरह उसके ऊपर दौड़ता।

कूचेमें एक तूतका वृक्ष था, जिसकी शाखायें दीवारके ऊपर फैली थीं। वह बच्चेके लिये खेल भी थीं और भोजन भी। बच्चा दीवारपरसे उस जगह पहुँचकर पिछले दोनों पैरोंपर खड़ा हो अगले दोनों पैरोंको उन शाखाओंपर रख अपने मुँहसे मरकत-जैसे हरे पत्तोंको चुनता और दांतोंसे कुतुर-कुतुर कर खाता।

माँ-बकरी बच्चेकी इस चेष्टासे मानों नाराज होती और वह नीचे खड़ी उसी तरह चिल्लाती, जैसे माँ छत या पेड़पर चढ़े अपने बच्चोंके गिरनेके भयसे चिल्लाती है। लेकिन यह बच्चा मानव बच्चेकी तरह माँकी बात माननेसे इन्कार न करता, शायद इसका कारण यह भी हो सकता है, कि वह इस तरहके खेलोंको बुढ़ापेतक खेल सकता था। थोड़ी देरमें खेलसे ऊबकर वह अपने चारों पैरोंको चारों तरफ फैला, जिस तरह पानीमें खेलनेवाला पेड़के ऊपरसे गहरे पानीमें कूदता है, उसी तरह छलांग मारकर जमीनपर कूद माँके पास दौड़ जाता, फिर अपने दोनों अगले पैरोंको नीचे मोड़ मुँहको माँके स्तनसे लगाता, लेकिन स्तनमें बँधा थैला उसे दूध पीनेमें बाधा देता। दो-चार बार माँके स्तनमें मुँह चला क्षीरसे निराश हो वह माँकी बगलमें लेटकर आराम करने लगता।

अब शादीको बच्चेके साथ खेलनेका अवसर मिलता था। सारा उसे उठाकर बच्चेके सामने दोनों पैरोंपर बैठा देती, अपने पंजोंसे बच्चेके कस्तूरी जैसे काले बालोंमें कंघी करती और अपने नखोंसे उसके शिर-मुँह और लिलारको खुजलाती। शादी भी माँकी क्रियाओंका अनुकरण करता और अपने सहजात बच्चेके शरीरको सहलाना चाहता। बच्चेकी

इच्छा देखकर सारा उसे मेमनेके नजदीक ले जाती। शादी अपनी लाल कोमल अँगुलियोंसे मेमनेके काले बालोंको खींचता और अपने कोमल नखोंसे उसके ओंठों, दाँतोंको छूता। शादी का यह काम बच्चेको भी पसन्द था और वह बदलेमें शादीकी अँगुलियोंको चाटता, उसकी हथेलीको चूमता और कभी-कभी धन्यवाद-सा देते "में" भी करता। शादी उसे सुनकर प्रसन्न हो झूमकर "अङ्-उङ्" कहता और अपने ओंठ और हाथोंको हिलाकर अपने दिलकी बात माँको सुनाता।

माँ, मानों दोनोंकी बातोंको समझती थी और वह मेमनेकी बातको शादीको सुनाते हुए कहती, वह कहता है--मैं तुझे प्यार करता हूँ। मैं और तू एक समय पैदा हुए, मेरी माँ भी तुझसे प्रेम करती है। वह माँकी तरह तुझे क्षीर देती है। हम दोनों सिर्फ जोड़ीदार और साथ खेलनेवाले ही नहीं हैं, बल्कि दोनों एक दूसरेके क्षीरपायी भाई हैं।

फिर शादीके मुँहसे मेमनेको कहती :

मैं तुझे प्यार करता हूँ, मैं तेरे मुँह तेरे गन्धको
प्यार करता हूँ।
मैं तेरे लोम तेरी आँख, तेरी द्वेषरहित आँख और खुरको
प्यार करता हूँ।
मैं तेरे सारे काम, तेरे कारबार।
तेरी गति और चाल, तेरी मस्त अँखड़ियोंको
प्यार करता हूँ।

× • × × ×

मुरादने अपने हाथसे लकड़ीका एक तख्ता बनाया। तख्ता बहुत सीधा-सादा था। उसने कहींसे तीन-चार मीतर लकड़ी पाकर उन्हींको काटकर ऊपरसे छोटा तख्ता कांटीसे जोड़कर उसे बच्चोंके तख्तेका रूप दे दिया था। एक दिन जब मेमना दीवारपर खेल रहा था, तो साराने तख्तेको घरसे लाकर बाहर रख दिया। हरी घास दिखलानेसे मेमना भी

दीवारसे कूदकर चला आया। दो-तीन गाल घास खा लेनेपर साराने मेमनेको उठाकर तख्तेपर रख दिया।

साराने ताली बजाकर गाना शुरू किया, शादी अब बैठ सकता था। वह माँके पास बैठ गया और उसीकी तरह ताली बजाने लगा। सारा गा रही थी :—

हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।

मेमनेने जरा देर कान देकर सुना, फिर तालीके स्वरके अनुसार तख्तेके ऊपर घूमने लगा। किन्तु वहाँ जगह कम थी, इसलिये अपने खुरोंको जल्दी-जल्दी एक ओर रखते घूमने लगा। यह खेल शादीको भी, साराको भी और मेमनेको भी बहुत पसन्द आया। पहले सारा बच्चेको तख्तेके ऊपर रखती, किन्तु पीछे उसे आदत हो गयी और वह स्वयं तख्तेपर चला जाता, जब कि सारा गाने लगती :

हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।

मुरादने धीरे-धीरे बायके प्रति अपने पहलेके विचारोंको बिलकुल भुला दिया। बाय हमेशा मुरादके साथ अच्छा वर्ताव करता, उसके पुत्र शादीको भी दिलसे नहीं भुलाता, और कभी-कभी घीमें पके मांस-खंडको मुरादके हाथमें देकर कहता "ले इसे बेटवाको देना।" बाजार (हाट) की रात शादीके लिये एक कटोरा आश-पलाव (पोलाव) देना कभी नहीं भूलता। अँगूठीकी घटनाको दो साल बीत गये थे। अब उसकी स्मृति बिलकल लुप्त हो गयी थी, यहाँतक कि साराके दिलसे भी वह दूर हो गयी थी। बायने कभी साराका नाम भी नहीं लिया। इन बातोंसे मुरादको दिन-प्रतिदिन दृढ़ विश्वास हो गया, कि बायने उस कामको शैतानके बहकावेसे किया था और उसके लिये वह लज्जित तथा पश्चात्तप्त है।

४

मुरादको बायके यहाँ सेवा करते ३० साल हो गये थे। उसे सदा सूखी जूठी रोटीके टुकड़े और रूखा-सूखा बचा खाना मिला करता

था। गरम भजनकी जगह ठंडा और देगका धवन-जैसा आश (खिचड़ी) उसके भाग्यमें बदा था, लेकिन अब बाय मुरादको गेहूँ-की मुलायम रोटी और गर्म आशसे परितृप्त करता और कभी-कभी चरभूमिमें भी मुरादके लिये गरम रोटी या गरम आश भेजता। मुरादके लिये गरम रोटी और आश बायका साला—बड़ी बीबीका भाई शाकुल ले जाता।

शाकुल एक बाय-बच्चा (जमीन्दार-पुत्र) अपने पिताका एकलौता पुत्र था। शाकुलके पिता सुबहानकुलकी माल-मिलकियत और धरती-पानी ईशानकुल बायके बराबर न होनेपर भी वह गाँवका एक बाय और मुखिया (कलाँ शवँदा) समझा जाता था। उसने अपनी ज्येष्ठ पुत्री सानियाको गाँवके सबसे बड़े बाय एशानकुलको देकर अपने मान-सन्मानको और बढ़ाया था।

सुबहानकुल बाय कुछ नौकरों और चरवाहों द्वारा अपना काम करवाता था और अपने एकलौते पुत्र शाकुलसे कोई काम नहीं लेता था। शाकुल बापके एक घोड़ेपर सवार हो भोज और तमाशा देखता फिरता। सुबहानके मरनेपर बापकी सारी मिलकियत शाकुलको मिली। एशानकुल बायने अपनी स्त्री सानियाका दायभाग माँगा, लेकिन शाकुलने कुछ नहीं दिया। साले-बहनोईमें कुछ दिनोंतक काजी (मुकदमा)-बाजी रही, लेकिन एशानकुल कुछ नहीं पा सका; क्योंकि एक ओर शाकुल काजी और हाकिमका दरबारी और पैसा खर्च करनेवाला था और दूसरी तरफ असली दावादार उसकी बहन सानिया सौत ले आनेसे अपने पतिपर नाराज थी, इसलिये उसने कह दिया कि मेरी माल-मीरास मेरे भाईके हाथ ही में रहे।

इसकी वजहसे एशानकुल और शाकुलके बीच अच्छा सम्बन्ध नहीं रह गया था। जब-तब शाकुल बहनको देखने आता भी, तो ऐसे समय जबकि बहनोई घरपर नहीं होता। यदि कभी भेंट भी हो जाती,

तो उसे एक सूखा सलाम दे बहनके घरमें चला जाता और फिर वहाँ-से लौट जाता ।

बापके मरनेके बाद शाकुलका कारबार और खराब हो गया, क्योंकि बापके वक्त उसे काम देखनेकी आदत नहीं थी, जो अब भी वैसी चल रही थी । उसका सारा समय सैर-तमाशामें बीतता, या कभी-कभी बंदूक ले शिकार खेलने चला जाता ।

आज भी उसकी सवारीमें सदा एक घोड़ा रहता, लेकिन वह बाप-के जमाने-जैसा राशका घोड़ा नहीं बल्कि मामूली टट्टू था, जो न शिकारमें काम आता न कूबकारी[1] में । तो भी जब शाकुल सैर-तमाशेसे लौटकर गाँवमें आता, तो अपने घोड़े, अपनी बंदूक और अपनी हुनरमन्दी (चतुराई) की तारीफ करते न थकता । जिस दिन किसी कूबकारीमें शामिल होता, तो लौटनेपर गाँववालोंसे बातें मारता, दश शिर बकरी छीन निकलनेकी बात कहकर अपने घोड़े-की तारीफ़ करता । जब शिकारसे लौटता तो कहता "मैंने आज बंदूक-से तीन हरिन मारे और दोको घोड़ा दौड़ाकर पकड़ लिया ।"

उसकी झूठी गपोंसे गाँववाले भी परिचित हो गये थे । उस दिन एकने उससे पूछ दिया—तो वह पाँच शिर हरिन कहाँ हैं, एक हम भी पाते, कबाब बनाकर खाते और दुआ देते : तुम्हारा घोड़ा इससे भी जादा तेज और तुम्हारी बंदूक इससे भी जादा निशान-वाली हो ।

शाकुलको जवाब देनेके लिये कोई दिक्कत न थी । उसने चट कह दिया : अमुक गाँवमें एक दोस्तके घर विश्राम करने लगा, वहाँ मेरे खानेके लिये एक हरिनका कबाब बनाया गया और बाकीको उसी दोस्तको इनाम देकर चला आया । बात समाप्त करते उसने

---

[1] मध्य-एसियाकी घोड़-दौड़, जिसमें हर सवार इनाममें रखी भेड़-बकरी या बछड़ेको छीनकर भागना चाहता है ।

कहा—मेरी यह आदत है कि हाथमें यदि कोई चीज आयी तो जो कोई पहले आया उसे दे दिया, लौटाकर घर लाना मुझे पसन्द नहीं।

लेकिन असल आदत दूसरी थी।

एक दिन शाकुलने अपने एक नौकरको हुकुम दिया, कि कुदाल लेकर दरीचीके सामनेके यूनुच्काको कोड़ दे, लेकिन इस बातका ख्याल रखे, कि नये उगे यूनुच्का (घास) की जड़ उधर न आये, जिसमें कि मुर्गियां उसे खाकर खराब कर दें। नौकरने कोड़ाई की, लेकिन मौका पाकर बायकी मुर्गियां वहाँ पहुँचकर नये अंकुरोंको खाने लगीं। नौकरने मुर्गियोंको भगानेके लिये सेब-बराबर पत्थर फेंका। संयोगसे पत्थर एक मुर्गके शिरपर लगा और वह वहीं फड़-फड़ाकर मर गया।

शाकुलको जब यह बात मालूम हुई, तो उसने नौकरको बरामदेके खम्भेसे बांध दिया और कुछ कदम दूरपर खड़े हो उसी पत्थरको नौकरकी ओर फेंका। नौकरने आँख और शिरको बचानेके लिये हाथोंसे ओड़ा, लेकिन पत्थर जाकर उसके मुँहमें लगा और सामनेके दो दाँत टूट गये और ओठोंसे खून बहने लगा। उस नौकरका असली नाम एरगश था, लेकिन इस घटनाके बाद उसे एरगश बेदाँत कहा जाने लगा।

× × ×

अंतमें शाकुलसे मेल-मिलापके लिये स्वयं एशानकुल बायने कोशिश की। उसने एक दिन अपनी बीबी सानियासे कहा :

—अपने भाईसे कह, कि मुझसे झगड़ना छोड़ दे। उसने जो कुछ मेरा अपमान किया, मैंने उसे क्षमा कर दिया। अब मुझसे बंधुत्व स्थापित करे और मेरे घोड़ोंमेंसे एक अच्छा घोड़ा सवारीके लिये ले जाया करे। मुझे लोगोंके सामने यह देखकर शर्म आती है, कि मेरा साला टुटहे टट्टूपर कूबकारीके लिये जाय और रासके घोड़ोंके पीछे व्यर्थ ही इधर-उधर दौड़ता फिरे।

सानियाके बीचमें पड़नेसे साले-बहनोईमें फिरसे दोस्ती हो गयी। बायने इसके उपलक्षमें शाकुलको मित्र-भोज दिया और उसे नया जामा पहिनाया। तबसे शाकुल प्रतिदिन एक बार बायके घर आता और यदि कूबकारी या शिकारमें जाना होता, तो बायके एक अच्छे घोड़ेपर सवार होकर जाता। शिकारके लिये कभी-कभी बायकी पंच-गोलिया बंदूक भी ले जाता और उससे हरिन, भेड़िया या दूसरे वन्य पशुओंको मारता। अब गाँववाले उसकी आत्म-श्लाघाको लेकर उपहास नहीं करते, क्योंकि वह कूबकारी की एक दो बकरी भी अपने घोड़ेसे लटकाये ला चुका था, शिकारसे भी सूखे हाथ नहीं आता था, कभी हरिन, कभी तीतर, कभी भेड़िया, कभी लोमड़ीको अपनी जीनसे लटकाये लाता।

शाकुल अपने नौकरों-चरवाहोंकी देखभाल नहीं करता और वे क्या खाते-पहनते हैं, इसकी पूछताछ नहीं करता था, तो भी एशानकुल बायके कामोंमें सहायता देता था। इस तरह कूबकारी या शिकारमें जाते वक्त वह मुरादके लिये आश-रोटी देकर हाल-चाल पूछता।

५

सारा और मुरादका जीवन हँसी-खुशीसे बीत रहा था। शादीके जन्म-समय बायने जो बकरी दी थी, उससे तीसरे साल दश शिर हो गये थे। घर क्षीर-दही-मट्ठा-मस्कासे भरा हुआ था। तीन वर्षका शादी दूध-दही-मट्ठा-मस्कामें पला था, इसलिये देखनेमें वह चार-पाँच सालके बच्चेसे भी अधिक मालूम होता था। मुरादने भी फिरसे जवानी पैदा की थी। सुन्दर योग्य स्त्री, समझदार और स्वस्थ पुत्र, झोपड़ा होने-पर भी अपना निजी घर, दश शिर बकरियां—जिनसे बीबी-बच्चेको काम भी मिला था—इन सबके कारण उसका मन प्रसन्न और जीवन सुखी था।

मुराद हर सबेरे मालिकके घर जाता, प्रातराशके बाद भेड़ोंको हाँककर चराने जाता, शामको भेड़ोंको घर लौटा और व्यालू खाकर

अपने घर लौटता। कभी-कभी बायके घरसे बेटवाके लिये मांस या आश भी ले आता। यह चरवाहीके हकमें शामिल न था और पहले उसे मिलता भी न था।

मुराद अपनी सारी सुख-समृद्धिको अपनी पत्नीके शुभ चरण और पुत्रके सौभाग्यके कारण समझता था, इसलिये उनसे बहुत प्रेम तथा उनके आरामका बहुत ध्यान रखता था। जब मुराद अपने घर आता तो उसकी दिन भरकी थकावट दूर हो जाती। बीवी उसके लिये चाय क्षीर या दधि लाती, पुत्र गोदमें आ उसकी दाढ़ीसे खेलता, उसका मुँह चूमता या अपनेको चुमाता।

शादी अपने बापसे इतना हिलमिल गया था और उससे इतना प्रेम करता था, कि जबतक बाप घरमें रहता, वह एक क्षण भी उसके पाससे नहीं हटता, नींद आनेपर भी अपनी जगह जाके नहीं सोता, हर रात बापकी गोदमें सो जाता और फिर उसे उठाकर बिस्तरेपर ले जाना पड़ता।

सारा भी अपनेको बहुत सौभाग्यवती समझती थी। मुरादसे ब्याह होनेके बाद उसे शरीरकी चिन्तासे छुट्टी मिल गयी, शादीके जन्मके बाद माँ-बापकी जुदाई और बन्धु-बांधवोंकी मृत्युका शोक दिलसे जाता रहा।

उसके पास शादी था, इसलिये सारी चीजें उसके पास थीं। उसे खास तौरसे मुरादकी भांति ही अपने शादीपर गर्व था, क्योंकि उसके जन्म लेते ही घर और परिवारका भाग्य खुल गया।

शादी तीन सालका होनेपर भी उसका रंग-ढंग बड़ोंकी तरहका था। वह एक ओर अपनेको परिवारका अंग समझता तो दूसरी ओर कर्त्तव्यकी बातें भी समझता, इसलिये अब खेल हीमें नहीं बल्कि काममें भी माँका सहायक बनता। यदि वह देखता, कि माँ दूध दूहना चाहती है, तो बच्चोंको पकड़के रखता; यदि देखता कि माँ खीर पकाना चाहती है, तो चूल्हेके पास लाकर ईंधन रखता; यदि

देखता कि माँ मस्का बिलोने जा रही है, तो वह गड़वेमें पानी भरके ला देता; यदि देखता कि माँ कपड़ा धोना चाहती है, तो वह देगसे गरम पानी ला देता।

× × ×

एक दिन सवेरे मुराद समयसे पहले उठा। अभी उसकी बीबी नहीं जगी थी। उसने हाथ-मुँह धोनेके बाद स्त्रीको जगाके कहा :

—मैं चाहता हूँ कि आज रातको मालिकके घर खाना न खा घर आ तुम्हारे साथ खाना खाऊँ। आज दूधको पकाकर दही न बना शामको खीर अच्छी तरह पकाना, जरा समयपर तैयार करना, क्योंकि आज मैं समयसे पहले आऊँगा।

मुराद अपने कामपर चला गया। सारा भी उठकर अपने काम-काजमें लगी। शादीके जगनेसे पहले ही उसने अपने और बच्चेके लिये खाना तैयार कर रखा।

शादीने जागकर अपने बिस्तरेपर खड़े हो माँको पुकारा—आचा, बकरियोंको दूहा?

—दूहा, क्या हुआ?—माँने जवाब देते हुए पूछा। वह हवेलीके बाहर झाड़ू दे रही थी।

—छोटी बकरियाको भी दूहा?

—उसे अगले साल दूहूँगी, अभी वह बच्चा है, माँ नहीं हुई है, जब माँ होगी तो खूब क्षीर देगी।

—ने, ने, मैंने देखा वह क्षीर देती है—कहते शादी अपनी जगह-से उठकर बाहर आनेके लिये तख्तेके कठघरेसे चिपक गया, लेकिन वह निकल न सका और ठोकर खाकर काले चिरागको लेते गिरा। चिरागका तेल घरके फर्शपर फैल गया, और शादी रोने लगा।

सारा चिराग गिरनेकी आवाज और शादीके रोनेको सुनकर

"क्या हुआ, क्या हुआ" कहती दौड़कर घरके भीतर आयी। उसने फर्श और बिस्तरेपर तेल फैला देखकर कहा— रो मत, मैं तुझे नहीं मारूँगी, लेकिन आगे खबरदार रहना और किसी चीजको न गिराना।

—क्यों कहती है कि छोटी बकरी दूध नहीं देगी? मैं तख्तेसे उतरना चाहता था, उसी वक्त गिर पड़ा।

साराने चकित हो शादीकी ओर देखा। उसकी विशाल काली आँखोंकी चमक अश्रु-बिन्दुओंको झलका रही थी। जान पड़ता था, ओस-कणसे भरे गुलाबके फूलपर तरुण रविकी किरणें पड़ रही हैं और भय और लज्जासे उसका श्वेत आरक्त मुख ताजे गुलाबकी पंखुरियोंकी तरह शोभा दे रहा था।

सारा अपने प्राणोंसे प्रिय पुत्रके इस अनुपम सौन्दर्यको देखकर अपनेको थाम न सकी और शादीको अंकमें ले उसने उसके मुँह और आँखोंको दिल भर चूमा। जब बच्चेका कुर्ता साराके हाथमें लगा, तो पता लगा कि वह भीगा है। उसने उसे अपनेसे दूर करके कहा "तूने आज रातको बहुत बुरा काम किया, इसीलिये रोता है न?" और शादीके लिये दूसरा धुला कुर्ता ले आयी।

—मैंने नहीं भिगोया, छोटी बकरीके क्षीरने भिगो दिया—कहते उसने माँको फिर आश्चर्यमें डाल दिया।

—कहो, बतला क्या हुआ जो छोटी बकरीके दूधने तेरे कुर्तेको भिगा दिया?—अपने बच्चेको नया कुर्ता पहनाते हुए साराने पूछा।

—मैंने सपनेमें देखा—शादीने कहना शुरू किया—तख्ता हवेली-के सामने रखा है। मैंने कहा :

हा दूरसी दूरसी दूरसी जा तू ऊपर कुरसी

छोटी बकरी उठकर तख्तेपर आ गयी और उसके स्तनसे क्षीर गिरने लगा। मैंने अपने कुर्तेको उठाया कि जिसमें क्षीर जमीनपर न गिरे, लेकिन क्षीर कुर्तेसे पार हो पायजामा भिगाते जमीनपर गिर पड़ा।

साराने पुत्रके स्वप्न और कर्तबको सुनकर उसके जवाबमें पद कहा :

बकरिया ऊपर तेरे सूथन भिगाया तेरा।
अगले साल देगी क्षार तेरे लिये।

—ने, छोटी बकरिया मुझे इसी साल क्षीर देगी, इसी समय क्षीर देगी, तू तख्तेको घरके सामने रख तो, फिर देख वह कैसे क्षीर देती है—कहते शादी माँके न मारनेसे ढीठ होकर बोला।

साराने बेटवाकी इच्छा न भंग करते तख्तेको ले जाकर हवेली के सामने रख दिया।

शादी तख्तेके सामने खड़े होकर गाने लगा :

हा दूरसी दूरसी दूरसी जा तू ऊपर कुरसी।

गाना सुनकर सबसे पहले शादीकी समवयस्का बकरी, जोकि अब दो बच्चोंकी माँ थी, दौड़कर आयी और तख्तेके ऊपर चढ़कर चक्कर काटने लगी। छोटी बकरी, जोकि उसकी द्वितीय संतान थी, भी दौड़कर आयी और तख्तेके ऊपर चढ़ने लगी। माँने उसके लिये स्थान खाली करते तख्तेसे छलांग मार दी। छोटी बकरी तख्तेपर खेलने लगी, लेकिन क्षीर नहीं दिया। शादीने ध्यान लगाकर देखा, लेकिन बकरीका स्तन नहीं दिखाई पड़ा। शादीने उदास स्वरमें कहा—आचा! इसने क्षीर नहीं दिया। इसके पास थन भी नहीं है।

—क्या मैंने कहा नहीं था कि इस साल दूध नहीं देगी?—साराने कहा।

शादीने सपनेमें झूठी धोखा देनेवाली बकरियाको तख्तेसे नीचे ढकेल दिया और उसकी जगह दूसरी छोटी बकरियोंको एक-एक करके ले आकर खेलने लगा।

साराने झाड़ू-बहारु खतमकर हाथ-मुँह धो आवाज दी—आ खाना खायें।

शादी बकरियोंके खेलको छोड़ माँके पास दौड़ा। साराने उसका हाथ-मुंह धो खानेपर ले जाकर बैठाया।

× × ×

खाना खानेके बाद सारा घरमें ताला लगा बकरियोंको चरानेके लिये घरसे निकली। शादी भी हाथमें एक डंडा ले बकरियोंके पीछे-पीछे चला। बकरियोंके आचा-बच्चाको हाँकते दोनों चर-स्थानपर पहुँचे। शादी डंडेको हाथमें लिये खेतोंके किनारे खड़ा हुआ, जिसमें बकरियां लोगोंके खेतोंमें न जाँयें, साथ ही वह खेतकी मेंड़पर उगी घासोंको उखाड़-उखाड़कर वकरियोंकी तरफ फेंकता था।

सारा एक ऊँची-सी जगहपर बैठकर सूत कातने लगी। सूत कातनेके लिये बहुत सीधा-सादा ढेरा (तकला) मुरादने एक लकड़ीमें डंडी बाँधकर तैयार कर दिया था। सारा अपने कुर्तेके आँचलमें धुने बकरीके बाल रख लाई थी। उसमेंसे एक-एकको निकालकर सूतके सिरेको तकलीके सिरेपर लगाती, फिर बाँयें हाथको ऊपर उठा दाहिने हाथसे ढेरेको घुमाती और इस तरह बालकी रस्सी (सूत) बनाती जाती। जब एक बार सूतमें ऐंठन लग जाती, तो सारा उसे लपेट लेती और फिर कातना शुरू करती।

सूर्य चढ़कर शिरपर आया, बकरियोंने अघाकर चरना बंद कर दिया। साराने बाल और ढेरेको संभालकर बच्चेको आवाज दी—बकरियोंको हांक, चल कुंडपर चलें।

बकरियोंके आचा-बच्चाको कुंडपर ले जा पानी पिलाया। पानी पीनेके बाद बकरियां लेट गयीं। सारा और शादीने घरसे लायी रोटीको पानीसे भिगोकर खाया और फिर अंजुलीसे कुंडका पानी निकालकर पिया।

खाना खानेके बाद साराने फिर रस्सी बटना शुरू किया। अबकी बार शादी भी काममें उसका सहायक बना; शादी रस्सीको ढेरेके साथ घुमाता और सारा बालको पहलेसे समान करके उसमें लगाती। चक्कर



"शादी भी काममें उसका सहायक...(पृष्ठ ४३)

कातनेसे रस्सी जितनी ही बनकर लम्बी होती जाती, उतना ही पीठकी ओरसे हटता शादी भी मांसे दूर होता जाता। पचास कदम दूर जानेपर मां बुलाती और कती रस्सीको ढेरे (तकले)में लपेटते वह मांके पास चला आता, और फिरसे काम शुरू होता।

एक घंटातक बकरियोंने आराम किया। इसी बीचमें साराने बेटेकी मददसे बकरीके बालोंकी उतनी रस्सी बांट ली, जितनी कि वह सवेरेसे दोपहरतक बाँट पाई थी।

बकरियाँ लेटते वक्त जुगाली करती रहीं। चरते वक्त आधा चबाकर रख रखे भोजनको फिरसे दोबारा चबाकर उदरमें पहुँचाती रहीं। अब उनका पेट कुछ खाली हो गया था और वह फिर आहारके लिये अपनी जगहसे उठीं। सारा भी अपना काम समेटकर बच्चेके साथ बकरियोंको हांके चरनेकी जगह गयी।

× × × ×

सारा बहुत देरतक बकरियोंको चरा न सकी, धूल-गर्दा उड़ाती आँधी शुरू हो गयी और थोड़ी देर बाद पहाड़ोंकी ओर मोटे काले बादल दिखाई पड़े। रसोईघरके धूम सदृश अभ्र उठकर तेजीसे दौड़ता गाँवकी ओर आया।

साराने हवाकी आवाजसे समझ लिया, कि जल्दी ही आँधी-पानी शुरू होनेवाला है, उसने जल्दी ही उठकर बच्चेके साथ बकरियोंको घरकी तरफ हाँका। वह अभी अपने दरवाजेतक नहीं पहुँची थी, कि बिजलीकी गड़गड़ाहट आकाशमें सुनाई दी और बकरियोंको घरमें करते ही पानी भी बरसने लगा।

सारा बकरियोंको उनकी जगह करके बच्चेको ले घरमें आयी, उसके भीगे कुरतेको हटा सूखा कुरता पहनाया और अपने भी भीगे वस्त्रोंको बदला। वर्षा मूसलाधार पड़ रही थी, जिसके साथ बिजलीकी गड़गड़ाहट और चमक भी थी और वह भय संचार कर रही थी।

सारा और शादी दोनों आचा-बच्चा घरमें बैठे सामने खुले द्वारसे वर्षाकी ओर देख रहे थे। जब बिजली बहुत कड़कती, तो शादी माँके अंकमें छिपकर अपने शिर-आँख-मुँह-कानको उसके कंचुकके भीतर ढाँक लेता। दिन बीता, प्रकृति शान्त हुई, वर्षा भी बंद हुई। साराने द्वारके पानीको उलीचा, फिर चूल्हेको सुखाकर खीर पकाना शुरू किया।

वह पतिकी इच्छानुसार आज कुछ जल्दी भोजन पकाना चाहती थी और चाहती थी कि सारा घर इकट्ठा बैठकर खाये। उसने चूल्हेमें आग जलायी। माँके नहीं करनेपर भी शादीने लाकर चूल्हेके पास ईंधन रखा। लेकिन घरके सामने रखा ईंधन इतना भीग गया था, कि नहीं जलता अथवा धूँआ देकर जलता था। साराने शादीसे कहा--मेरी मदद करना चाहता है, अच्छा जा; बकरी-खानेसे ईंधन ले आ, वहाँ सूखा ईंधन पड़ा हुआ है।

शादी पानी और कीचड़में पैर थपथपाता जाकर ईंधन ले आया और उसकी माँ आश पकाने लगी। सारा क्षीर और चावल पकाकर आगको धीमी करके घरके भीतर गयी। शादीने आज नमदेपर तेल गिरा दिया था। साराने उसे धोकर फैला दिया, जिसमें दाग दिखलाई न पड़े। बाहर पड़े भीग गये तख्तेको कपड़ेसे पोंछकर घरके भीतर ला रखा। दीपकाको साफ कर तेल डाल उसे दीवटपर रख दिया। खानेके समय पतिके बैठनेकी जगहपर एक गद्दा बिछा दिया। गद्देके नीचे उसीके ऊपर दस्तरखान फैला दिया और फिर उसके ऊपर एक रोटी रखकर ढांक दिया।

घरके भीतर खानेकी व्यवस्था ठीक कर सारा चूल्हेके पास गई। चूल्हेमें एक-आध लकड़ी लगा आँचको और तेज कर दिया, पतीली फिर उबलने लगी। साराने खीरको अच्छी तरह चला उसमें घी डालकर फिर चूल्हेपर रख दिया। वह बकरी दूहने गयी, जिसमें शादीने भी उसे हस्तावलम्ब दिया।

× × ×

सूर्यास्त होगया, खीर भी तैयार थी, लेकिन अभी भी मुरादका कहीं पता न था। साराने चूल्हेकी आग बुझा घरके भीतर जा चिराग जलाया और बच्चेको लिये पतिके स्वागतार्थ कूचेमें गई।

गायोंके आनेकी बेला थी। दूरसे आने-जानेवालोंको ठीकसे देखा नहीं जा सकता था। सारा जिस किसीको भी दूरसे आते देखती, समझती उसका पति आ रहा है; लेकिन उसके दरवाजेके सामनेसे गुजरनेपर जानती, कि वह उसका पति नहीं है।

शादीको नींदका जोर था। वह नींदकी पिनकमें बार-बार गिरने लगता, लेकिन माँके खबरदार करनेपर झुँझलाकर पूँछता—दादा कब आयेगा ?

दो घंटेकी प्रतीक्षाके बाद भी मुराद नहीं आया, सारा बच्चेको घरमें ले आयी और उसे वहां रखकर चूल्हेके पास गयी। खीर जमकर ईंट-सी बन गयी थी। एक थालीमें शादीके लिये खीर निकाला और चाहा कि बच्चेको जगाकर खिलाये, लेकिन वह नहीं जगा सकी। उसने बच्चेको बिस्तरेपर सुला दिया और फिर पतिको देखने कूचेमें गयी। लेकिन अब कूचेमें कोई आ-जा नहीं रहा था, रात काफी हो गयी थी।

सारा बहुत देरतक सूने कूचेमें बैठी रास्तेकी ओर आँख गड़ाये मुरादके आनेकी प्रतीक्षा करती रही, फिर बच्चा कहीं डर न जाये, यह विचारकर घरके भीतर गयी। बच्चा गहरी नींद सो रहा था, लेकिन साराके दिलको चैन कहाँ ? वह घरमें बैठ न सकी, फिर कूचेमें गयी और फिर लौटकर घरमें। कितनी बार कूचा और घरमें आना जाना करती, अंतमें वह अपने बच्चेके पास बैठकर उसके मुँहपर आँख गड़ाये चिन्ता करने लगी—उसे क्या हुआ ?

सारा अपने प्रश्नका जवाब नहीं पा सकी थी, इसी समय घरके बाहर पैरकी आहट सुनाई दी।

"आखिर आया" कहती प्रसन्न हो सारा अपनी जगहसे उठ पतिके स्वागतके लिये तैयार हुई। साराने खड़ी होकर देखा, कि सामने बायकी

बड़ी बांबी खड़ी है। सारा उसे देखते ही आशंकित हो कांप उठी। प्रसन्नताके बाद एकदम निराशा उसके सामने आयी। उसने अपनेको संभालकर बायकी बीबीकी ओर देखा। बाय-बीबीने पूछा—मुराद भाई कहाँ है?

बाय-बीबीका यह प्रश्न साराके लिये मानों उसके शिरपर एक पतीली उबलता पानी उंड़ेलना था, शिरसे पैरतक उसका शरीर जलने लगा। उसने मनपर बहुत जोर लगाकर पूछा—मैं उसकी खबर तुमसे जानना चाहती थी।

बाय-बीबीने बतलाना शुरू किया —आँधी-पानी शुरू होनेके बाद तेरे चचा बायने शाकुलको बुलाकर उसे मुरादकी खबर-लेनेके लिये बयाबानमें भेजा और यह भी कहा कि आँधीमें यदि भेड़ें इधर-उधर बिखर गयी हों, तो उन्हें जमा करके लानेमें मुरादकी मदद करना। मुराद भूखा होगा यह सोचकर मैंने शाकुलके हाथ दो रोटी भी भेज दी।

—शाकुलने उसे बयाबानमें नहीं पाया?—अधीर हो साराने बीबीकी बातको काटकर पूछा।

—धीरज धर, मैं सब बतला देती हूँ—कहते बाय-बीबीने अपनी बात जारी की—शाकुल चरभूमिमें गया, लेकिन वहाँ न मुरादका पता था, न भेड़ोंका। फिर उसने चारों ओर बयाबान, नहरों, शर-वनोंको ढूंढ़ना शुरू किया। सूर्यास्तके समय भेड़ोंमेंसे कुछको उसने शर-वन (रसकण्डा वन) के भीतर देखा...

—ददेश् भेड़ोंके पास नहीं था?—साराने फिर उतावली होकर पूछा।

—धीरज धर, कहती हूँ। शाकुलने एक भेड़ियेको देखा। वह एक भेड़के पेटको फाड़कर खा रहा था। उसने बंदूकसे भेड़ियेको मार गिराया और फिर मुराद तथा दूसरी भेड़ोंको ढूंढ़ने लगा। बहुत कोशिश की, किन्तु पता नहीं लगा। अँधेरा होनेपर हाथ आयी भेड़ोंको हाँकते घर आया।

--आखिर मुरादको क्या हुआ ?--साराने कहा। उसके शिरपर मानों भारी चट्टान गिर गयी।

--कहा तो--बाय-पत्नीने जोरसे कहा--उसका कोई पता नहीं लगा।

--तुम्हारे विचारमें उसको क्या हुआ, यह पूछना चाहती हूँ--साराने भी बीबीकी तरह ऊँची आवाजमें कहा।

--तेरे चचा बायका कहना है, शायद बहुत अधिक भेड़ोंके नष्ट होनेसे वह डरकर छिप गया या किसी तरफ चला गया। लेकिन दैवी आफतके लिये मैं उसे दंड नहीं दूंगा और मुझसे कहा कि सारासे जाकर कह, कि अगर मुराद आये तो उसे मेरे पास भेज दे, मैं उससे नाराज न हूँगा।

--मैं उसका पता कहाँसे पाऊँ--साराने बाय-पत्नीकी तसल्ली देने-वाली बात सुन कुछ शान्त होकर कहा।

--मैं कल सवेरे ही फिर शाकुलको उसे ढूंढ़नेके लिये बयाबानमें भेजूंगी--कहती बायकी मेहरिया चली गयी।

× × ×

दूसरे दिन बाय-बीबी फिर साराके पास आयी और अबकी बार भी बेवक्त रातमें सोनेके वक्त। आज जो खबर लायी थी, वह कलसे भी बुरी थी। उसके कथनानुसार आज भी शाकलने बयाबानमें जाकर जाँच-पड़ताल की, किन्तु मुरादका कहीं कुछ पता नहीं चला। थककर वह उसी शर-वनके पास आया, जहाँ पिछले दिन भेड़ें मिली थीं। शर-वनको भी एक छोरसे दूसरे छोरतक देख डाला। वहाँ भी कोई पता नहीं चला, लेकिन जब नहरको देखकर लौट रहा था, तो कुछ शरों (सरकंडों) के नीचे उसे खूनके चिह्न और फटे वस्त्रोंके साथ आदमीकी हड्डियाँ दिखाई पड़ीं।

इस समाचारको सुनकर साराके ऊपर जो गुजरी उसका चित्र लेखनीसे नहीं खींचा जा सकता। उसने "वाय" कहकर अपने हाथों-को छातीपर मारा, मानों वहाँ से अपने कलेजेको पकड़कर निकालना चाहती हो। फिर जैसे उसके नीचे बारूदकी आग लगी हो, एकाएक उठ खड़ी हुई और अपनेको न संभालकर जमीनपर गिर पड़ी। कुछ देर तड़फड़ानेके बाद उसका रंग सफेद हो गया, हाथ-पैर फैल गये और वह लम्बी पड़ गयी। फिर कोई शब्द या गति उसमें दिखाई न पड़ी।

बाय-बीबीने समझ लिया, कि वह मर गयी, लेकिन जब जेबसे दर्पण निकालकर उसके मुँहके सामने रखा, तो दर्पण धूमिल हो गया। पता लगा, कि अभी वह मरी नहीं।

शादी भी माँकी चिल्लाहट सुन उसे जमीनपर गिरती देखकर रोता हुआ उसके ऊपर आ गिरा। बाय-बीबी जिस वक्त घरसे बाहर चली, वहाँ बेटवाके रोनेके शब्दोंके सिवा और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था।

६

मुरादके गुम होनेके एक सप्ताह बाद एशानकुल बायने साराके पास इमाम (पुरोहित) और अक़सक्क़ाल (मुखिया) को मंगनीके लिये भेजा। उन्होंने मुरादके भेड़िया द्वारा खाये जानेपर शोक प्रगट करते बायका विवाह-संदेश साराके पास पहुँचाया, और कहा कि मुराद-की मृत्युपर बायको बहुत अफसोस हुआ है; मुरादकी आत्माको शान्ति देने तथा उसकी सेवाओंके बदले, उसके पुत्रका बाप बननेके लिये बाय चाहता है, कि साराको धर्मानुसार अपनी विवाहिता बनावे।

सारा उनकी इन बातोंको सुनकर रो पड़ी और कुछ देर रोकर दिल हलका करनेके बाद बोली :

—पहले तो अभी यह मालूम नहीं, कि मेरे पतिको भेड़ियेने खाया है; दूसरे यदि मेरे पतिको भेड़ियेने खा लिया हो, तो भी अभी मैं पति करना नहीं चाहती; मेरे बच्चेके लिये सौतेले पिताकी आवश्यकता

नहीं। यदि उसकी आयु है तो हमारे देशमें जैसे और बहुत-से बेबापके बच्चे हैं, उसी तरह यह भी किसी तरह सयाना हो जायगा।

एशानकुल बायकी बातको साराने अस्वीकार कर दिया। बाय इसके लिये कोई दूसरा उपाय सोच रहा था, इसी समय खबर मिली कि उस गांवसे बहुत दूर नीचेकी ओर आमूके तटपर पानीमें बहकर आया एक मुर्दा मिला है। खबर लानेवालेने कहा, कि मैंने मुर्देको अपनी आँखों देखा, वह मुरादकी शकल-सूरतका था। उसने यह भी बतलाया, कि आदमी स्वयं नदीमें गिरकर नहीं डूबा, बल्कि उसे गोली मारके नदीमें फेंक दिया गया था।

सारा इस खबरको सुनकर अपने बच्चेको कंधेपर लिये नदीके किनारे-किनारे उस गांवमें पहुँची। मुर्देको तबतक दफना दिया गया था, उसने कब्रको खुलवाकर देखा—मुर्देका शरीर बिलकुल फूल गया था और पहचानमें नहीं आता था; इसलिये सारा नहीं जान सकी, कि वह मुर्दा मुरादका है या दूसरेका; तो भी उसको संदेह हुआ कि उसके पतिका ही मुर्दा है, इसलिये उसे देखते ही वह फिर बेहोश हो गयी। होशमें आकर फिर उसने मुर्देको इधर-उधर करके देखा, किन्तु वहां बहुत जगह छेद थे, जिससे वह निश्चय नहीं कर पायी, कि उसमें गोली का कोई निशान है या नहीं।

सारा पतिके जीने-मरनेके बारेमें कोई भी निश्चय न कर आँखोंसे रोती, हृदयसे जलती, तनसे काँपती अपने घर लौटी। पतिको गुम हुए देर हो गयी, वह भेड़िये या गोलीका शिकार हुआ, इस खबरका कहींसे इन्कार नहीं हुआ। इसलिये वह शोक मनानेके लिये सूतकमें बैठ गई।

× × ×

अभी सूतकके दिन बीत न पाये थे, कि एशानकलने दोबारा मंगनी-के लिये आदमी भेजा और अबकी बार और साफ आवाजमें। घटकोंने

जाकर सारासे यह भी कहा—तू अपने पतिके मुर्दको अपनी आँखों देख आयी है, अब पति करनेके लिये कोई बहाना नहीं है। यदि अब भी तू पति न करनेकी बात करती है, तो हम इसके लिये राजी नहीं हैं, कि एक जवान स्त्री बिना पतिके जीवन बिताये और उसके कारण गांवके जवान पापमें पड़ें। इसलिये पति करना आवश्यक है। बायसे बढ़कर कोई दूसरा पति होने लायक आदमी इस गांवमें नहीं है।

साराने भी अबकी बार अपनी आवाज बदल दी, घटकोंको बेशरम बनाया और बायको बेइज्जत कर उसपर अपने पतिके मारनेका आरोप किया, साथ ही जो भी शब्द उसके मुँहमें आया सब उनके सामने कह दिया।

लेकिन बाय इतनेसे चुप होनेवाला नहीं था। उसने पहले गांवके बड़ोंके कंठमें घी लगाया, फिर शाकुलके अधीन गांवके कितने ही गुँडोंको भेजकर रातके वक्त जबर्दस्ती साराको पकड़ मंगवाया; फिर इमामको बुलाकर निकाह पढ़वा लिया। इस तरह सारा उसकी व्याहता बन गयी।

× × ×

यद्यपि सारा अब बायकी निकाही बीबी थी, लेकिन बायका बर्ताव उसके साथ पत्नी-जैसा न था। उसकी आसक्ति भी उसके प्रति वैसी नहीं थी, जैसी कि पहले देखनेपर हुई थी। इस समय साराको अपने हाथमें करनेसे बायके दो उद्देश्य थे: पहले यह कि वह साराको दिखलाना चाहता था, कि बाय लोग और खास कर एशानकुल बाय जिस बातपर अड़ गये, उसे पूरा करके रहते हैं और जो कोई उनके रास्तेमें बाधा डाले, वह साराकी तरह ही अंतमें नाक रगड़नेके लिये मजबूर होता है; दूसरे यह कि इस तरह मुरादकी जगह बिना पैसे-कौड़ीके एक दासी और गुलाम-बच्चा हाथ आयेगा।

इसीलिये निकाहके दूसरे दिनसे ही उसने साराको घर और बया-

बानके कड़े कामोंमें लगा दिया। सारा पहले हीसे एशानकलकी बीबी बनना नहीं चाहती थी और अब भी वह उसे अपना पति नहीं मानती थी; इसलिये निकाहकी रातको जो नया कुर्ता उसे जबर्दस्ती पहना दिया गया था, अकेले होते ही उसे उतारकर फेंक दिया और फिर उन्हीं पेवंद लगे अपने पुराने कुर्तेको पहनने लगी, जिसे कि वह घरपर पहना करती थी। बायके घरमें साराकी जिन्दगी उस समयकी मेहनत-कश स्त्रियोंके काम करते-करते मरनेवाले जीवनसे और भी अधिक कष्ट-मय थी। जैसे दासता-युगकी दासियां सिर्फ काम करनेके लिये ख़रीदी जाती थीं, उसी तरह सारा भी सदा काम करनेके लिये मजबूर थी। वह बिना ठीकसे खाये, बिना ठीकसे सोये काम करती, बाय और उसकी बीवियोंकी गालियों और मारोंसे "आह" भी न कहते काम करती।

बाय शादीका बाप बना था, लेकिन उसके घरमें उसकी जिन्दगी बेबापके बच्चोंसे भी बुरी थी। जिस तरह कूचेमें पैदा हुए बेमालिकके पिल्ले हर एककी ठोकर खाते जिन्दगी बिताते हैं, उसी तरह शादी भी जिन्दगी बिताने लगा। जिस तरह मछलीका बच्चा पानीसे दूर बालूमें पड़ा तड़पता है, उसी तरह शादी भी तड़पते हुए जिन्दगी बिताने लगा। शादीको सबसे अधिक दु:ख बायका पुत्र इस्तम् देता था। वह शादीसे तीन साल बड़ा था, इसलिये अपने बलसे फायदा उठा दिनमें कई बार उसे मारता था। यदि शादी रोता, तो इस्तमूकी माँ रोनेके लिये उसे और मारती।

शादी जब कुछ बड़ा हुआ और उसमें इतना बल आया कि इस्तमूके पैरमें हाथ डाल उसे उठाकर चबूतरेके नीचे फेंक दे; तब इस्तमूकी माँ उसके इस अपराधके लिये अपने ही मारनेसे संतोष नहीं करती, बल्कि अपने पतिसे भी पिटवाती। एक बार उसपर इतनी मार पड़ी, कि उसका सारा बदन सूज गया और बीमार पड़कर एक महीना मौतकी बाट ज़ोहता रहा। आगे भी कोई दिन नहीं जाता, जब बाय

और उसकी बीबियाँ उसे न पीटतीं। मार खाते-खाते शादीको उससे बचनेके लिये एक ही उपाय सूझा, कि मालिकके सामने न आये और इसके लिये वह घासकी ढेर या दूसरी जगह जाके सो रहता। सारा बच्चेको प्राणोंसे भी प्रिय समझती थी और उसका जीवन उससे बँधा हुआ था। वह शादीकी इस हालतको देखती, लेकिन उसकी कोई सहायता न कर सकती थी, यहाँतक कि अपने भूखे रह सूखी रोटीका एक टुकड़ा भी देना मुश्किल था।

बाय जबसे साराको अपने घरमें लाया, एक बार भी उसने शादीको उसके नामसे नहीं पुकारा। वह उसे "अनथवा" कहकर पुकारता, "अनथवा" कहकर काम अढ़ाता और "अनथवा" कहकर पीटता। बायके मुँहसे सुनकर उसके घरके दूसरे व्यक्ति भी उसे "अनथवा" कहने लगे। जब शादी कुछ बड़ा हो गया, तो "वा" निकाल दिया गया और उसे "अनाथ" कहने लगे। शादी उसका नाम था, यह बिलकुल ही भुला दिया गया और उसकी जगह लोग उसे अनाथ कहने लगे, यहाँतक कि उसने खुद भी अपना नाम कहना छोड़ दिया और किसीके पूछनेपर अनाथ कहकर जवाब देता।

७

फरवरीका महीना था। आकाशसे हिमकणकी वर्षा हो रही थी और कभी-कभी कड़ी हवा भी चल पड़ती। उसी समय एक विशाल मैदानमें बहुत-से आदमी नंगे शिर खड़े थे। नदीके किनारे कोई छाया नहीं थी कि वह उसके नीचे बैठते, वहाँ न गाँव-गिराँव था, न इमारत, न गुफा थी, सिर्फ एक चादर (तंबू) दिखलाई पड़ती थी, जिसके ऊपर बेल-बूटेदार आलवानोंके टुकड़े सिले हुए थे और चादरके पास एक ओसारेवाला शामियाना ताना हुआ था।

तंबूके भीतर कोई नहीं था, किन्तु शामियानेके नीचे दो-तीन पहरेदार खड़े थे। इनके शिरपर शलगमी आकारका सैनिक

साफा था, बदनपर बुखारी ज़हकलानी जामा और पैरोंमें अमेरिकन बूट था। इनकी कमरमें सफेद संगीका कमरबंद बँधा था, जिससे जान पड़ता था, कि वह अमीरके निम्न श्रेणीके दरबारी थे। आदमी तँबूके चारों ओर निगाह डालते खड़े थे और किसीको वहाँसे सौ कदम नजदीक नहीं आने देते थे। यदि कोई उधर ध्यानसे देखने लगता, तो पहरेदारोंमेंसे एक बोल उठता "इधर निगाह न कर, अपनी आँखोंको बंद कर।"

दूर एक सवार आता दिखलाई पड़ा। वहाँ बैठे सभी आदमियोंकी नजर आगन्तुकके ऊपर गड़ गयी। सवार तंबूके पास पहुँच शामियानेके नीचे खड़े लोगोंसे "श्री दरबार कूच कर रहा है" कहकर घोड़ेके मुँहको पीछे फिरा लौट गया। दो मिनट और बीता, एक सवार घोड़ा दौड़ाते आया और "श्री चरणोंने घोड़ा माँगा है" कहा और फिर घोड़ेका मुँह मोड़ दौड़ाते लौट गया। दो मिनट बाद फिर एक सवार आया और "श्री शरीरने अश्वके ज़ीनको शोभित किया" कहकर घोड़ा दौड़ाते लौट गया। इसके बाद हर दो मिनटके बाद एक-एक सवार घोड़ा दौड़ाते आये और बिना कुछ कहे घोड़ा दौड़ाते लौट गये।

इस तरहकी व्यर्थकी घोड़दौड़ देरतक नहीं हुई कि एक सवार आया, जिसके पीछे घोड़ेके ज़ीनके ऊपर छोटे पैरोंवाली मोड़कर रखी चारपाई भी बँधी थी।

वहाँ जमा हुए आदमियोंमेंसे एक फटा पुराना जामा पहिने आदमीने अपने पास खड़े सैनिकसे पूछा--यह क्या है?

—यह श्रीचरणोंकी अपनी चारपाई है। जब श्रीचरण सोना चाहते हैं, तो इसीके ऊपर पौढ़ते हैं—सैनिकने जवाब दिया।

चारपाईवालेके बाद एक दूसरा सवार आया, वह अपने आगे घोड़ेपर काली देग रखकर घोड़ा दौड़ाये आया। उसी आदमीने फिर पूछा—यह क्या है?

यह ताजा पोलावसे भरी देग चूल्हेसे उतारकर लाई गई है--सैनिकने

कहा—यदि श्रीचरण दो मंजिलोंके बीचमें भोजन करनेकी कृपा करें, तो इसीसे निकालकर देते हैं।

इसके बाद फिर एक सवार आया, जिसके घोड़ेपर एक जोड़ा दो-दो खानेवाला लकड़ी का ढाँचा था। हर एक खानेमें एक एक कूजा (सुराही) यानी सब मिलाकर चार कूजे रखे थे। कूजोंके ऊपर सवार बैठा था जिसके हाथमें एक चीनीका कटोरा भी था। सवार पैरोंको घोड़ेकी गर्दन की तरफ लटकाये घोड़ा दौड़ाये आया।

—यह क्या है? —उसी आदमीने पूछा।

इस आदमीको "सूफी आब-कश" कहते हैं—सैनिकने जवाब दिया—इन कूजोंमें खास तौरसे पानी भरके रखा गया है, कि जिस समय भी श्रीचरण पानी माँगें, कूजासे कटोरेमें डालकर उन्हें दिया जाय।

उसके बाद फिर घोड़ा दौड़ाते एक सवार आया। इस सवारने एक प्यालेको रूमालके भीतर रख रूमाल के चारों छोरोंको हाथ में पकड़कर ऊपर उठा रखा था।

—यह क्या है?

—यह "शर्बतदार" है। रूमालके भीतरके प्यालेमें शर्बत भरा हुआ है। यदि श्रीचरण शर्बत पीनेकी इच्छा प्रगट करें तो शर्बतदार तुरन्त इस प्यालेको श्रीचरणोंके सामने रख देता है।

रास्तेके किनारेको बिलोंसे ऊदबिलाव चेहरा निकाले हुए थे। कुछ तमाशबीनोंने उनके ऊपर ढेला-पत्थर फेंका। एक ऊदबिलाव लोगोंसे डरकर रास्तेमें भगा। शर्बतदारका घोड़ा दौड़ता हुआ उसके पास आया और उसे देखते ही भड़ककर पिछले पैरके बल खड़ा हो गया। शर्बतदार सँभाल नहीं सका और उसके हाथसे प्यालेवाली रूमाल छूटकर तमाशाबीनोंके सामने गिरी। प्याला टूटकर टूक-टूक हो गया, किन्तु उसमें शर्बत-मर्बत कुछ नहीं था।

—यह प्याला खाली था क्या? फटे पुराने जामेवाले आदमीने

अपने पास खड़े आदमीसे "शर्बत भरा" कहनेके लिये झूठा कहनेके स्वरमें पूछा।

सैनिकका मुँह लाजसे लाल हो गया, लेकिन उसकी ओरसे बोलते दूसरे आदमीने कहा—हो सकता है, अमीरने उस चारपाईपर कभी एक बार भी सोया न हो, वह देग भी खाली और कूजे भी बेपानी हों; लेकिन लोगोंके सामने बादशाही दबदबा दिखलानेके लिये इन चीजोंको इसी तरह लिये दौड़ते हैं।

अब रास्तेसे अकेले-अकेले सवार नहीं, बल्कि बहुत-से सवार भारोंसे लदी घोड़ा-गाड़ियोंके साथ चारों ओर एक-दूसरेके ऊपर रास्तेकी कीचड़ उछालते आये। इन घोड़ा-गाड़ियोंमेंसे एक घोड़ा-गाड़ी (अराबा)-पर ओहार पड़ा हुआ था, ओहारके ऊपर बड़ा नमदा डालकर गाड़ीको खूब अच्छी तरह ढाँक दिया गया था।

—यह उर्दा (अन्तःपुर)का अराबा है—सैनिक पोशाकवाले आदमीने बिना किसीके पूछे ही कहना शुरू किया—इसके भीतर श्रीचरणोंका माननीय अन्तःपुर और खास बीबियाँ बैठी हैं। जिसमें निषिद्ध व्यक्तियोंकी नजर उनके ऊपर न पड़े, इसलिये अराबाको चारों ओरसे खूब ढाँक दिया गया है।

अराबा जाकर चादर (तम्बू) केपास खड़ा हुआ। शामियानेके नीचे खड़े खिदमतगारोंमेंसे एकने आकर नमदेको खोल दिया और उसके भीतरसे कई सोलह-सत्रह साला लड़के एकके पीछे एक निकलकर तम्बूमें चले गये। लड़कोंकी पोशाक बहुत अच्छी थी, लेकिन उनका रंग बहुत उड़ा हुआ था और चेहरेसे जान पड़ता था, कि बहुत समय जेलमें रहकर अभी-अभी बाहर निकले हैं या सालोंकी बीमारीके बाद अभी-अभी उठे हैं।

—ये कौन हैं?—कहकर फिर उस फटे जामेवालेने पूछा, जो मानों हर एक चीजको जानना चाहता था, लेकिन इस अराबाको उर्दाका अराबा कहनेवाले आदमीने मुँहको दूसरी ओर फेर लिया था, मानों

उसने कुछ सुना ही नहीं; लेकिन किसी दूसरे आदमीने प्रश्नका जवाब देते हुए कहा :

—यह वह लड़के हैं, जिन्हें अमीरने जोर-जुलुमसे उनके माँ-बापसे छीनकरके अलग रखा है; यह जुल्मके सताये वह अभागे हैं, जिन्हें कि अमीरने अपने दरबारी भ्रष्टाचारके कीचड़में डालकर अपनी पाशविकता-का शिकार बना रखा है; यह वह नवजात हरे अंकुर हैं, जिन्हें अमीरके गन्दे जूतोंने पामाल कर रखा है; यह वह नवोत्फुल्ल कलियाँ हैं, जो अन्यायीके तापके नीचे मुरझा गये हैं। यह दरबारी जीवनसे घृणा रखते हैं, यह उत्पीड़ित हैं, रंज और शोक सहनेवाले हैं; इसीलिये जिन्दा होनेपर भी इनके मुँहका रंग मुर्दे की तरह है।

सवारों और अराबोंके गुजर चुकनेपर अमीरका निजी सेनादल दिखलाई पड़ा। इनकी पोशाक कफ़काज़ (काकेशस)वालों जैसी थी और इन्हें "कफ़काज़" का नाम भी मिला था। कफ़काज़ सैनिक दलके निकल जानेपर अमीरके उदेची और शगावुल दिखलाई पड़े। इनके हाथों में सोना-मढे चोब (सोटी) थे और वह सुनहली डोरी और अगाड़ी-पिछाड़ीवाले घोड़ोंपर सवार थे। वह अपने घोड़ोंको न दौड़ाकर कुछ धीरे-धीरे चला रहे थे। उनमेंसे एकने ऊँची आवाजसे कहा :

—"हजरत अमीर विजयी और जयशाली हों!" फिर दूसरेने चिल्लाकर कहा—"हजरत अमीर (श्रीमहाराज) विश्व-विजयी (जहाँगीर) होंवे, उनका खड्ग तीक्ष्ण और उनकी यात्रा निर्विघ्न हो!"

तीसरेने उनके जवाबमें कहा—"इलाही! आमीन" (भगवान्! एवमस्तु!)

फटे जामेवाला इन चिल्लाहटोंको सुनकर ठठाकर हँसा।

—क्यों हँस रहा है?—एकने उससे पूछा।

—अमीर अपने देशके उत्पीड़ित मेहनतकशोंके साथ विजय नहीं प्राप्त कर सका। उन्होंने इसे देशसे नष्ट करनेके लिये हथियार उठाया

है; उनके साथ इसने विजय न पायी और न पायेगा। यहाँ हम आँखों देख रहे हैं, कि अपने देशसे कैसी बेइज्जती और रसवाईके साथ निकाला जाकर दूसरे देशमें भागा जा रहा है। और अब भी ये लोग "श्री महाराज विजयी और जयशाली हों, उनका खड्ग तीक्ष्ण हो और वह विश्व-विजयी हों" कहते चिल्ला रहे हैं। क्या यह हँसी आनेकी बात नहीं है?—फटे जामेवालेने कहा।

—हाथमें हथियार उठाये उत्पीड़ित मेहनतकशोंके हाथसे सलामतीके साथ भाग निकलना भी अमीरके लिये एक विजय है--एक दूसरे आदमीने कहा--चाहे जहाँगीर (विश्व-विजयी) न भी हों, किन्तु परदेशमें जाकर दर-बदर भटकते "जहाँ-गर्द" (विश्व-अटक) तो हो सकते हैं।

अब एक भारी दल प्रगट हुआ, जिसे देखकर लोगोंने कहना शुरू किया—इन्हींके भीतर अमीर आ रहा है। लेकिन चारों ओर हथियार-बंद अफगान घेरे हुए थे, इसलिये उसे कोई देख नहीं सकता था।

--क्यों अमीरने अफगानोंको अपना रक्षक बनाया?--फिर फटे जामेवालेने पूछा।

—अमीरने अपने लोगोंपर बहुत जुल्म किया है, इसलिये उनसे बहुत डरता है, यहाँतक कि अपने निजी सैनिकोंपर भी विश्वास नहीं रखता। इसीलिये लोगोंके लूटे मालसे इन परदेशियोंको खरीदकर अपना मददगार बना भाग रहा है—एक दर्शकने कहा।

अमीर तम्बूके पास जा घोड़ेसे उतर पड़ा और फिर तम्बूके भीतर गायब होगया। कुछ मिनट बाद एक पेशखिज़मत (खिदमतगार) एक अमलदार (अफसर) को आवाज देकर अमीरके पास ले गया। पाँच मिनट बाद उस अमलदारने दर्शकोंके पास आकर स्थानीय बायों (सेठ--जमीदारों), अरबाबों (चौधरियों), अक़सक़ालों (मुखियों),

मुल्लों (पुरोहितों) और अमलदारोंको अलगकर एक ओर लेजा उन्हें अमीरका सलाम देकर कहा:

--श्रीचरण भाग्य, नसीबा और भगवान्‌की इच्छाके अनुसार पड़ोसी देशमें जा रहे हैं और श्रीचरण नहीं चाहते, कि उनके सच्चे गुलाम बोलशेविकोंके हाथसे कष्ट सहें; इसलिये उन्होंने कहनेकी कृपाकी है "वाय लोग अपनी सभी चल-संपत्ति, नगद पैसा और पशुओंका अपनी बीबी बच्चोंके साथ ले मेरे पीछे नदी (आमू) पार आयें"। और यह भी कृपावचन कहा है "अपने नौकरों, चरवाहों और खिदमतगारों को साथ लिये दरिया पार करें, जिसमें कि उनकी सहायतासे अपने पड़ोसीके देश--जो कि मेरा दोस्त है और अपने वतनकी तरह है—में आकर अपनी खेती, पशुपालन या वाणिज्यके कामको जारी कर सकें। मुल्ला लोग मेरे लिये दुआ करते यहीं रह जायँ और मेरे विरुद्ध तलवार उठानेवाले भुक्खड़ मेहनतकशों, बोलशेविकोंके विरुद्ध शरीयतके नाम से लोगोंको उभाड़ें; स्थानीय अमलदार हाथमें हथियार लें, दीहातको बर्बाद करें, मकानों और खेतोंको जलायें, लोगों-को मारें और परिवारोंको नष्ट करें; जिसमें कि सभी बेज़ार हो मेरे शासन-कालको याद करें; अरबाब और अक़सक्काल मुँहपर पर्दा डालकर बोल-शेविक सरकारके भीतर घुस जायें और जहाँतक हो सके भीतरसे ध्वंस और विनाशका काम करें।

अमीरी सरकारके खैरख्वाह इस बातको सुनकर ऊँची आवाज में चिल्ला उठे—"हम सभी जान-माल और बीबी-बच्चोंके साथ श्रीआज्ञा के बन्दे हैं और हमें विश्वास है कि जल्दी ही अपने देशको फिरसे अपने हाथमें लायेंगे।"

इस हल्लेके जवाबमें वहाँ एकत्रित लोगोंमेंसे, जिनमें अधिकांश फटे जामेवाले थे, किसीने अपने हाथको मुँहपर रखकर सीटी बजायी और दूसरोंने ऊँची आवाजसे कहा:

—इसके बाद देशको तू सिर्फ अपने स्वप्नमें ही देख सकेगा।

अमीर और उसके अमलदारोंको इस वक्त इतना अवसर नहीं था, कि लोगोंमेंसे अपने अपमान करनेवालोंको पकड़कर दंड दें, क्योंकि दूरसे तोपकी आवाज आरही थी। अमीर और उसके अमलदार वहाँ तैयार की हुई नावोंपर सवार हो गये और नावके मुँहको अफगानिस्तानकी ओर घुमाकर जोरसे खेया जाने लगा।

अमीरके दूर हो जानेपर बायों और बाय-बच्चोंने अपने आदमियों और संबन्धियोंको हुकुम दिया, कि बयाबानमें जायें और जो कुछ भी भेड़-बकरी या पशु हाथ आयें, सबको हांककर नदी पार करायें और वह स्वयं अपनी चल-संपत्ति, रुपया-पैसा, बीबी-बच्चों और खिदमतगारोंको लेनेके लिये अपने गांवोंकी ओर चले गये। इसी समय एशानकुल बायने भी अपनी भेड़ों और ढोरोंको लानेके लिये शाकुलको भेजा और स्वयं घोड़ा दौड़ाते अपने गाँवकी ओर गया।

८

नदी किनारे कुछ पालवाली बड़ी-बड़ी नावें तैयार थीं; सवार जिन भेड़ों और ढोरोंको हाँककर लाये थे, उनमेंसे जितना हो सकता था, उतनोंको उन्होंने नावपर चढ़ाया, लेकिन नदीके किनारे बहुत अधिक भेड़ें रह गयीं, क्योंकि नावमें उनके लिये जगह न थी। ढोर हाँककर लानेवाले चाहते थे, कि भेड़ोंके पैरोंको बाँधकर उन्हें भी बेजान मालकी तरह नावके ऊपर रख दें, लेकिन इसके लिये मल्लाह तैयार न थे। वे कहते थे —यदि परिमाण से अधिक बोझा नावपर लादा गया, तो वह डूब जायगी।

अनाथ भेड़ोंके पीछे-पीछे दौड़ता-हाँफता नदी किनारे पहुँचा था। वह भी भेड़ोंके साथ नावपर चढ़ गया। एक पशु हाँकनेवालेने, अधिक भेड़ोंके चढ़ानेके लिये मल्लाहोंसे झगड़ते किश्तीमें अनाथको

देखा, उसने जाकर उसे उठा नदीके किनारेकी ओर फेंक दिया और "तू किस काम आयगा, तेरी जगह यदि एक भेड़ पार हो, तो वह मेरे लिये अधिक लाभकी होगी" कहते नावसे उतरकर एक दूसरी भेड़को लाते हुए मल्लाहसे बोला "अच्छा, तो उस बच्चेकी जगह इस भेड़को रखते हैं।"

नावसे उठाकर अनाथको फेंक दिया गया, किन्तु वह तुरन्त अपनी जगहसे उठकर नावके छोरको पकड़े "मेरी मैया, अपनी माईके पास जाऊँगा" कहते चिल्लाने लगा, किन्तु उसी आदमीने फिर उसे चढ़ने नहीं दिया।

बच्चेके रोने-चिल्लानेसे मल्लाहको दया आगयी और उसने उसे उठाकर अपनी बगलमें बैठाते कहा :

—मैलश (अच्छा), नाव भारी होकर डूब जाय, बायोंके माल और जानवर नष्ट हो जायँ, मुझे इससे क्या ? यदि नाव डूबी, तो तुझे अपने साथ निकाल ले जाऊँगा और तेरी माँके पास पहुँचा दूँगा।

× × ×

नदी पारकर अनाथ उन कम्पोंको एक एक करके देखने लगा, जिनमें भगोड़े ठहरे हुए थे।

उसने पहाड़ी सानुओं, विस्तृत बयाबानों, मैदानों, चरभूमियों, खड्डों और गुफाओंको छान मारा, किन्तु उसे वहाँ करुणामयी माँ नहीं मिली। वह तो केवल माँके पानेके ही लिये नदी पार आया था।

नदीके नजदीकवाले प्रदेशमें माँको न पाकर अनाथ इस पराये मुल्कके और भीतरके स्थानोंको ढूँढ़नेके लिये चल पड़ा। वह उन सभी जगहोंमें जाता, जहाँ कि सफेद भगोड़े ठहरे हुए थे। दिन बीत गया और रात आयी। दिन भरके थके अनाथने एक भगोड़ेके तम्बूमें जाकर ठहरनेकी आज्ञा मांगी, लेकिन डेरेके स्वामीने टुकड़ा रोटी देनेकी जगह उसे पत्थर मारते हुए कहा—इस देशमें यात्रा करके हम ही पेट भर पाये, कि तू अब चला है पेट भरने।

यद्यपि उस आइल (डेरे) में गेहूँ-उड़दके भरे हुए बोरे जगह-जगह रखे थे, भागते वक्त पकाकर रोटियाँ भी लाये थे, मांसमें नमक डालके रखे हुए थे, भेड़ोंको दूहकर दही जमा रखी थी, मक्खन निकालने और पनीर सुखानेकी तैयारी भी हो रही थी।

अनाथ रातको एक गड्ढेमें घुसकर उसी तरह भूखा-प्यासा सो गया, लेकिन उसे नींद नहीं आयी। वारबार करवटें बदलते करुणामयी माँको याद करते शिरको गड्ढेकी दीवारसे पीट-पीटकर रोता रहा, लेकिन कोई नहीं था, जो उसकी पुकारको सुनता, उसके रोने-काननेपर पसीजता। रात्रिके अंतिम पहरतकको स्वप्न या बेहोशीमें समय गुजारा, जब उसकी आँख खुली, तो देखा सूर्यका प्रकाश गड्ढेके अन्दर आ रहा है। अनाथने गड्ढेसे निकलकर रास्ता पकड़ा और फिर रोटीके बदले पत्थर खाते आगे कदम बढ़ाया। दोपहरके वक्त उसमें चलनेकी शक्ति बिलकुल न रह गयी और एक सूखे घासके मैदानमें जाकर लम्वा पड़ रहा। उसने एक सूखी किन्तु वर्षासे भीगी बूटीको तोड़कर मुँहमें डाला और चबाना चाहा, लेकिन स्वाद इतना कड़वा था, कि निगल न सका। उसने उसे मुँहसे थूककर बहुत थूथू किया, किन्तु मुँहकी कड़वाहट और मनकी अरुचि दूर न हुई।

कुछ क्षण बाद मुँहका स्वाद फिर पहले जैसा हुआ, लेकिन भूख फिर अँतड़ियोंको काटने लगी। उसने लकड़ी लेकर जमीनको खोदा और मिट्टीके नीचेसे पतली जड़ निकालकर चबाना शुरू किया, लेकिन यह भी कड़ुवी और दुःस्वाद थी, तो भी चबाते वक्त उससे रस निकला, जिसके भीतर जानेसे अनाथका चित्त कुछ तुष्ट हुआ। वह आँखोंको दबा चेहरेपर सिकुड़न डाले चाभी हुई जड़को जोर लगाकर निगल गया। मन खराब नहीं हुआ और जड़ने जाकर पेटमें स्थान लिया। अनाथकी हिम्मत बढ़ी और उसने और भी कितनी ही जड़ोंको खोदकर खाया। पेटको कुछ आराम मिला और उसको भी कुछ हिम्मत हुई

इस तरह वह फिर आगे रवाना हुआ। आज अनाथने कई बार जड़ और पानीसे पेटको आराम दिया और शामतक माँकी खोज लगाता रातमें फिर एक गड्ढेमें पड़कर सो रहा। शामको आसानीसे नींद आयी, लेकिन रातको नींद उचट गई। उसके पेटमें द होने लगा, उसने कै करना चाहा, लेकिन कैमें कुछ निकला नहीं। उसने पानीसे बाहर पड़ी मछलीकी तरह रात बितायी। सूर्योदयके बाद वह फिर गड्ढेसे निकला, लेकिन पेटके दर्द और पैरके फफोलोंने उसमें चलनेकी शक्ति नहीं रखी थी। फफोलोंने फूटकर पैरको घायल बना दिया था। अब उसके सामने दो ही रास्ते थे: या तो उसी जगह पड़ा भाग्यपर विश्वास किये मरनेकी तैयारी करे, या दिल कड़ा करके रास्ता चलते करुणामयी माँको पानेकी कोशिश करे।

उसने अपने मनसे कहा "चाहे मैं यहाँ पड़ा रहूँ या चलता रहूँ, मेरे भाग्यमें मरना बदा है, लेकिन एक जगह रहकर निराश हो मरनेकी तैयारी करनेसे अपने लक्ष्यकी ओर चलना ठीक है।" वह फिर अपनी जगहसे उठा, लेकिन ५-६ कदम जाकर रास्तेमें गिर पड़ा। पेट और पैरके दर्दके मारे वह सीधे खड़ा नहीं हो सकता था। वह चौपायोंकी तरह पैरके पंजों, घुटनों और हथेलीको जमीनपर रखे आगे बढ़ने लगा। घंटा भर इस तरह पशुचारिका करते रास्तेके कंकड़-पत्थरों, काँटों और सूखी खूटियोंने उसकी हथेली और घुटनोंको भी लहूलहान कर दिया, लेकिन तब भी वह अपने रास्तेपर चलता ही रहा।

× × ×

अनाथ चार दिनतक इसी तरह सरकता रहा। माँ के मिलनेकी उसे कोई आशा नहीं रह गयी थी, इसी समय उसने अपनी माँको देखा। एक विशाल बयाबान था, जिसमें एक बड़ी रबात (किला-जैसी इमारत) थी, उसीके पास सारा मालोंको चरा रही थी। अनाथ माँको देखते ही "मादर-जान" कहते अपनी सारी शक्ति लगाकर

चुम्बककी ओर भागते लोहेकी भाँति मांकी ओर दौड़ा, लेकिन पाँच-छ कदम दौड़नेके बाद वह बेहोश होकर जमीनपर गिर पड़ा। यह बेहोशी शायद भारी हर्षके कारण हुई हो, या पेट-दर्द और पैरकी पीड़ासे हुई हो।

साराने अपने प्राणप्रिय पुत्रकी आवाज पहिचानी और अपनी लाठीको एक तरफ फेंक दोनों हाथोंको दो तरफ फैलाये वह उड़नेवाले पक्षीकी तरह अपने शावककी ओर यह कहते दौड़ी "जानकम् (मेरे प्राणक), जानकि अज़ीज़कम् (मेरे प्राणप्रियक), जानकि शीरीनकम् (मेरे मधुर प्राण)।" स्नेहमयी माँकी गोदमें उसके गरम और मधुर चुम्बनों द्वारा अनाथ होशमें आया। अपने सूखे हुए ओठोंको करुणामयी मांके शर्करेल ओठोंसे लगाकर उसकी जीभको, वह वैसे ही पीने लगा, जैसे बचपनमें उसके स्तनोंको पिया करता था। लेकिन ज्यादा शराब पिये आदमीके एक बार ही बड़े प्याले भर शराब पी लेने की खुमारकी तरह वह फिर बेहोश हो गया।

साराने फिर अपने गरम क्रोड़ और चुम्बनोंसे उसे दोबारा होशमें ला उठाकर रबातके भीतर पहुँचाया। रबातके भीतर न बाय था, न उसका बेटा, न बीबियाँ। साराने दही-रोटीसे अनाथकी भूख दूर की।

९

माँ-बेटेने पहले आप-बीती सुनायी, फिर अनाथने पूछा--यह रबात किसकी है?

--यह रबात एक स्थानीय बायकी है। जाड़ोंमें वह अपने गाँव चला जाता है। बाय उससे माँगकर इसी जगह ठहरा हुआ है।

—और बाय कहाँ है?

—बाकी बचे अपने मालोंको इधर लानेके लिये नदी तटपर गया है।

—उसकी स्त्रियाँ कहाँ हैं?

—आपसमें लड़ पड़ीं—कहते साराने लड़ाईकी बात एक-एक करके कह सुनायी।

साराके कथनानुसार एशानकुल बाय अपने मालों और बीबियोंको लिये नदी तटपर पहुँचा, वहाँ एक नाव थी। बायने अपने ढोरों, व्यापारके सामान गल्ला-दाना और दूसरी चीजोंको नावपर चढ़ाया। भार ज्यादा हो गया, इसलिये मल्लाह बाय और उसकी बीबियोंको चढ़ानेके लिये तैयार न हुआ। बाय स्वयं और अपने परिवारके साथ गुप्सर (मशकवाली नाव) द्वारा नदी पार होनेके लिये वाध्य हुआ। उसने अपनी तीनों स्त्रियोंको तीन गुप्सरोंपर चढ़ाया और स्वयं एक गुप्सरपर चढ़ अपने बेटे इस्तमूको अपने पीछे सवार कराके बोला—"अपनी आँखें मूँदकर दोनों हाथोंको मेरी बगलमें डाल खूब मजबूतीसे पकड़ ले।" स्वयं बाय आगे-आगे और उसकी बीबियाँ पीछे-पीछे पानी हटाते आगे बढ़ीं। नदीके बीचतक गुप्सरें ठीकसे आयीं, जब वह नदीके तेज धारमें पहुँचीं, तो लहरोंमें अपनी गुप्सरोंको सँभाल न सकीं। पहिले बड़ी बीबी, फिर मझली बीबी गुप्सरसे गिरी और दो-तीन बार गोता-खाकर पानीकी तीक्ष्ण धारामें लुप्त हो गयीं। बाय सिर्फ सारा तथा इस्तमूके साथ नदीके दूसरे किनारे पहुँच सका।

साराने बातको समाप्त करते हुये कहा—इस तरह अब बायकी मैं ही अकेली बीबी, अकेली दासी, अकेली चरवाहिन और अकेली खिदमतगार रह गयी हूँ।

—इस्तमू क्या हुआ?—अनाथ ने पूछा।

—इस्तमू बापके साथ सलामतीसे नदी पार होकर आया, लेकिन इस समय वह यहाँ नहीं है। बाय उसे अपने साथ ले गया है। वह उसे मेरे पास नहीं छोड़ता। उसको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है और डरता है, कि कहीं दुश्मनीसे मैं उसके लड़केको हानि न पहुँचाऊँ।

—बायके चरवाहे और नौकर क्या हुये?—अनाथने पूछा।

साराने जवाब देते हुए फिर सारी कथा कह सुनायी : अमीरके भाग जानेपर गाँवके सब बायोंने, जिनमें एशानकुल बाय भी था, अपने गाँवोंमें जाकर सभी माल-असबाब-गल्ला-दाना जमाकर रोटियाँ पका भेड़ोंको मार कुछ दिनोंके लिये भोजन तैयार किया। फिर उन्होंने अपने चरवाहों, और नौकरोंको भी यह कहकर बहकाया, कि अब हमारा देश काफिरिस्तान हो गया, आओ हम मुसलमानाबाद (मुस्लिम-देश) चलें। इसी समय गाँवसे बहुत दिनोंका गया एक आदमी पहुँचा, वह वही आदमी था, जोकि मुरादके मुर्देकी खबर लाया और फिर कहीं चला गया था। वह सालमें एक-दो बार बीबी-बच्चोंको देखने गाँवमें आता, लेकिन रात बिताकर फिर चला जाता। बाय जिस दिन भागने के लिये तैयार थे, उसी दिन वह आदमी गाँवमें आया। उसने गाँव-के गरीबों, नौकरों, चरवाहोंको जमाकरके क्रान्तिकी बात कही और लोगोंको बायोंके विरुद्ध भड़काते हुए कहा :

——सोवियत सरकार मजूरों और किसानोंकी सरकार है, यह सरकार सदा गरीबोंकी मदद करती है, उन्हें बायोंकी दासतासे मुक्त करती है और धरती-पानी देती है, गरीबोंके पुत्रों बे-माँबापके बेकस बच्चों-को बाल-शालामें रखकर पालन-पोषण करती उन्हें पढ़ाती है, काम और हुनरकी बात सिखला दुनियामें भेजती है। बाय जिन बोलशेविकों से डराते हैं, वे कौन हैं ? बोलशेविक मजदूरोंमें सबसे अग्र-गामी व्यक्ति हैं। वह एक पार्टीमें संगठित हैं। उन्होंने आदमियों-को बायों, अमीरों और उनके अमलदारोंसे मुक्त करनेका बीड़ा उठाया है। उन्होंने रूसके मजूरोंको पूरी तरहसे अपनी ओर करके वहाँके बादशाह, अमलदारों और मुफ्तखोर बायों (पूंजीपतियों) से उन्हें मुक्त कर दिया है। बोलशेविकोंकी पार्टी मजूरों और किसानोंकी सरकारका पथ प्रदर्शन करती है। बोलशेविकपार्टीके नेता लेनिन और स्तालिन जैसे दुनियाके अद्वितीय बुद्धिमान हैं। वे ऐसे पुरुष हैं, जिन्होंने

अपना सारा जीवन जांगर चलानेवाले आदमियोंके सुख और सौभाग्यके लिये अर्पण कर दिया है।

उस आदमीने लोगोंकी ओर ध्यानसे देखा और मालूम किया कि लोग उसके एक-एक शब्दको अंगूरके दानेकी तरह हृदयस्थ कर रहे हैं। उसने फिर कहना शुरू किया: बाय लोग कह रहे हैं "अब हमारा देश काफिरिस्तान होगया है" और ऐसी बातें करके तुमको डराते हैं। लेकिन बोलशेविकों और सोवियत-सरकारकी दृष्टिमें काफिर और मुसलमान कहनेकी कोई बात नहीं है। बोलशेविकोंकी दृष्टिमें आदमी दो वर्गों में बँटे हैं: बाय और गरीब, मुफ्तखोर और मेहनतकश। सोवियत सरकार दुनियाके सभी मेहनतकशोंको अपना प्रिय पुत्र समझती है। यही कारण है कि रूसकी महान् कमकर-जनता और उसकी प्रथम सोवियत सरकार बुखाराके मेहनतकशों की मदद करने आयी और उन्हें अमीरके जुल्म और अत्याचारसे मुक्त किया, और आगे भी वह हमारी सहायता करनेको तैयार है।

सबसे पहले शाकुलका नौकर एरगश बेदांत, जिसके कि दो दांत एक मुर्गेकी मृत्युके लिये पत्थर मारकर तोड़ दिये थे—सभामें बोलनेके लिये आया और उसने उस जवानकी बातका समर्थन करते हुए कहा:

—मैं १५ सालसे शाकुल बाय-बच्चाकी ख़िजमत कर रहा हूँ, लेकिन कभी पेट भर रोटी नहीं खायी, नया कपड़ा नहीं पहिना। इन सारी मुफ्तकी सेवाओंके बदले उसने पत्थर मारा और मेरे अगले दोनों दातोंको तोड़ दिया। पहले मुझे लोग एरगश कहते थे, लेकिन पीछे बायकी कृपासे मेरा नाम एरगश बेदांत पड़ गया।

जवानने एरगशके बाद फिर अपनी बात शुरू की:

—यदि शाकुलने तेरी खिजमतके लिये एक पत्थर देकर तेरे दो दांत तोड़ दिये, तो उसने एशानकुलके हुकुमसे एक गोली दे मुरादको

दुनियासे खतम कर दिया और उसकी स्त्रीको दासी और बेटेको अनाथ बना दिया।

आदमी जवानकी इस बातको सुनकर चिल्लाने लगे। अभी तक लोग संदेह ही करते थे, कि एशानकुल बायने मुरादको मरवाया है, लेकिन किसीने इस बातको खुलकर कहते नहीं सुना था। यह खबर साराके पास भी पहुँची और उसने अपने प्रिय पति के हत्यारे खूनखूर (खूंखार) शाकुल और भेड़िये एशानकुलको साफ तौरसे जान लिया।

इस सभाके बाद लोगोंमें इतना गुस्सा आ गया, कि यदि उनके पास हथियार होते, तो भागनेके लिये तैयार बायोंको मारकर उनकी सारी चीजें छीन लेते। अफसोस कि उनके पास कुदाल-फावड़ेके सिवा और कोई हथियार नहीं था, और बायोंमेंसे हर एकके पास दो-दो तीन-तीन पंच-गोलियाँ बंदूकें थीं। गाँवके मेहनतकशोंमेंसे कोई बायोंकी बातमें नही आया और न उनके पीछे गाँव छोड़नेके लिये तैयार हुआ। साराने भागनेके दिनकी बात करते हुए कहा—यही कारण हुआ कि एशानकुल बायके नौकर और चरवाहे भी दूसरे मेहनतकशोंके साथ सोवियत सरकारके पक्षपाती हो गये और बायके पीछे नहीं आये। मैं भी आना नहीं चाहती थी, लेकिन बायने एक कदम भी मुझे अपनेसे दूर हटने नहीं दिया। गर्दनमें बंदूक कमरमें तलवार और हाथमें तमंचा लिये मुझे आगे किये गुप्सरपर सवार कराया और दूसरी बीबियोंको स्वतंत्र छोड़कर मेरी गुप्सरकी रस्सीको अपने हाथमें पकड़े रखा।

— उस आदमीका क्या नाम था, जो कि बायोंके विरुद्ध खड़ा हुआ? क्या वह हमारी जान-पहिचानका नहीं है?—कहते अनाथने सवाल किया।

—ने, तू उसे नहीं पहचानता। वह गाँवमें कम आया करता है। शायद तूने उसे कभी देखा भी न हो—साराने जरा दम लेकर एकाएक कहा—एय, नहीं जानता, कुर्बान नामके बचवेको?

—हा, हा, उसे मैं जानता हूँ—अनाथ ने माँकी बात काटकर कहा—वह बहुत अच्छा लड़का है। मैं उसे "अका कुर्बान" (कुर्बान भाई) कहता था। चर-भूमिमें भेड़ोंको संभालना जब मुश्किल हो जाता, तो वह मेरी मदद करता।

—ठीक है—साराने कहा—मैंने जिस आदमीके बारेमें कहा, वह इसी कुर्बानका बाप रूजीमुराद है।

—अब मुझे याद आया, मैंने एक बार उसे देखा था। कुर्बान ने मुझे बतलाया था, कि यह मेरा बाप है; किन्तु मुझे विश्वास नहीं हुआ, वह लड़केकी तरह जान पड़ता था। यद्यपि आकार लम्बा था। लेकिन दाढ़ी नहीं थी और मूछ भी कम-कम थी।

—उसकी उमर तीससे ज़्यादा है, लेकिन दाढ़ी नहीं रखता, इसलिये लड़का-जैसा मालूम होता है।

—ठीक है—अनाथने कहा।

साराने बात समाप्त करते हुए कहा—तू यदि मेरे पीछे न आया होता, तो अच्छा होता। यदि तू वहाँ रह गया होता, तो जैसा कि रूजी-मुरादने कहा, बोलशेविक तुझे बालशालामें रख लिखा-पढ़ाकर आदमी बनाते; अगर जिन्दगी रहती, तो फिर एक दूसरे को देखते।

माँकी इस बातके सुननेके बाद अनाथकी इच्छा होने लगी, कि लौटकर बोलशेविकोंके देश अर्थात् अपने देशमें जाये और बालशालामें रहकर आदमी बने। लेकिन उमर छोटी होनेसे इस विचारको कार्य-रूपमें परिणत करना संभव नहीं था।

१०

रुजीमुरादने मुरादकी हत्याके बारेमें जो साधारण सभामें कहा था, उसके अनुसार उस दिन सबेरे ही मुराद अपने घरसे निकलकर एशानकुल बायकी हवेलीमें गया और वहाँसे चरानेके लिये भेड़ोंको चर हाँक ले गया। अभी वह पेट न भर पायी थीं, कि उत्तरकी ओरसे हवा तेज हुई और थोड़ी देर बाद उत्तर-पूरब दिशासे काले मेघ आने

लगे, फिर बिजलीकी कड़क और मूसलाधार वर्षा होने लगी। परस्पर-विरोधी हवाएं चारों ओरसे आकर मिलीं और घास, तृण और दूसरी चीजोंको घुमाते हुए आसमानकी ओर लेजाने लगीं। इस बवन्डर ने हलकी जड़ वाली घासोंको भी उखाड़कर आसमान की ओर फेंक दिया। देखने वालोंको मालूम होता था, कि भूमिसे आकाश तक हवा, मिट्टी और तिनकों-पत्तियोंका मीनार बनाया गया है। बहुत समय नहीं गया, कि सारा बयाबान ऐसे बवंडरोंसे भर गया।

परिस्थिति इतनी तेजीसे बदली, कि मुराद अपनी भेड़ोंको लेकर भाग न सका। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। उसने समझ लिया, कि भेड़ें भाग गई हैं, लेकिन किधर भागीं इसका उसे ज्ञान न था; क्योंकि उस आँधीमें आंख खोलना मुश्किल था। एक घंटा अंधोंकी तरह इधर-उधर धावनेके बाद आंखोंको हाथसे मूंद वह एक जगह बैठ गया और आँधीके थमनेकी प्रतीक्षा करने लगा। आँधी थमते-थमते उत्तर-पश्चिमी हवा वर्षा ले आयी। वर्षाने उड़ती धूलको नीचे बैठाना शुरू किया। अभी भी हवा बिलकुल बंद न हो पायी थी, लेकिन आँख खोलकर चारों तरफ देखा जा सकता था।

मुरादने भेड़ोंको ढूंढ़ते कितने ही समय बाद उनमेंसे अधिकांशको शर-वन (सरकंडेकेवन) में पाया। भेड़ें वहाँ भी आरामसे खड़ी नहीं थीं, बल्कि कीचड़-पानीमें इधर-उधर गिरती-पड़ती दौड़ रही थीं। मुरादको इसका कारण जल्दी ही मालूम होगया। वहाँ एक भेड़िया एक भेड़को चीरकर खा रहा था। भेड़ें "वर्षासे भगा कीचड़में गिरा" की कहावतके अनुसार आंधीसे भागकर भेड़ियेके चंगुलमें फँसी थीं। मुरादको कुछ समझमें नहीं आरहा था, कि क्या करे। उसके पास हथियार नहीं था, कि भेड़ियेसे लड़ता, हाथमें सिर्फ चरवाहोंकी लाठी थी, जो भेड़ियेसे लड़नेमें बेकार थी। यदि वह उस हथियारसे भेड़ियेपर आक्रमण करता, तो भेड़िया उसे भी फाड़कर खा जाता।

इसी समय मुरादने शाकुलको गाँवकी ओरसे आते देखा। वह पीठपर बंदूक लटकाये घोड़ा दौड़ाये आरहा था।

घोड़ा जब शर-वनके नजदीक पहुँचा, तो उसका पैर कीचड़में पड़ा और वह जमीनपर गिर पड़ा। घोड़ेको गिरते देख शाकुल उसके ऊपरसे छलांग मारकर गड्ढेकी दूसरी ओर पहुँच गया। शाकुलने बहुत कोशिश की, कि घोड़ेको दलदलसे निकाले, लेकिन असफल रहा। घोड़ा जितनाही अपनेको निकालनेकी कोशिश करता, उतना ही कीचड़में धंसता जाता। शाकुलने अपनी सारी शक्ति लगाकर पूरी कोशिश की, पसीने-पसीने हो गया और अंतमें थककर किनारे बैठ गया।

मुराद देख रहा था, वह शाकुलकी सहायताके लिये दौड़ा। उसने घोड़ेके सामने झुककर उसके पैरको दलदलके किनारे रखा और फिर उसके सीनेमें रस्सी लगाकर जोर किया। घोड़ेने अपने अगले पैरोंको कीचड़से निकाल लिया। मुराद इसी समय जोर लगाकर घोड़ेको किनारेकी ओर खींचने लगा। जब घोड़ेके दो पैर सूखेमें पड़गये, तो उसने एक जोर लगाकर अपनेको दलदलसे बाहर कर लिया।

शाकुल यह सब देख रहा था। मुरादकी ताकतको देखकर उसे अचरज हुआ और बाहरसे शाबाश कहनेपर भी वह दिलमें सोचने लगा "मैं इस आदमीका मुकाबिला नहीं कर सकता, यदि आमने-सामने मुकाबिला हो, तो वह पीसकर मेरा भर्ता बना देगा।"

शाकुलने घोड़ेको लेकर शर-वनके पास आ दो रोटियोंको निकालकर मुरादको दिया और उससे आंधीके बारेमें पूछा। मुराद आजकी दौड़धूपसे बहुत थका और भूखा था। उसने रोटीको मुँहसे काटते हुए आंधी और भेड़ियेके एक भेड़ खानेकी बात कही। शाकुलके पूछनेपर मुरादने उस जगहको भी बतला दिया, जहाँ भेड़िया भेड़को खारहा था। शाकुल बंदूकको हाथमें ले उस तरफ सरकने लगा और भेड़ियेको देख लेटे ही लेटे बंदूक दागी। इधर बंदूकसे धूंआ निकला और उधर भेड़िया अधखायी भेड़के पास गिरकर छटपटाने लगा। भेड़े

अब भी भेड़ियेके डरके मारे घबड़ाई हुई थीं। बंदूककी आवाज सुनकर वह और बिदककर चारों ओर भागने लगीं। मुरादने उन्हें शान्त कर शर-वनसे निकालनेकी कोशिश की, किन्तु शाकुलने उससे कहा :

—व्यर्थ कोशिश न कर। अब वह अपने ही शान्त हो जायेंगी। इस समय उन्हें यहीं छोड़कर मेरे साथ नदीपर आ, तू वहाँ अपनी रोटीको भिगोकर खाना और मैं तीतरका शिकार करूंगा। तूने आज मेरी सेवा की है, उसके लिये मैं तुझे तीतर भेंट करना चाहता हूँ। तू उसे घर ले जा कबाब बनाकर बीवी-बच्चेके साथ खाना। हमारे लौटनेतक भेड़ें भी शान्त हो जायेंगी।

मुरादने शाकुलकी सलाह मान ली। शाकुलने अपने घोड़ेको शर-वनके पास छानकर चरनेको छोड़ दिया और दोनों नदीकी ओर गये।

× × ×

वर्षा बहुत कम रह गयी थी, लेकिन आजकी आंधी-बवंडर और वर्षाके कारण बयाबानमें कोई प्राणी दिखलाई नहीं पड़ता था। तो भी शाकुल रास्ता चलते वक्त चारों ओर नजर डाल रहा था। मुरादने उसकी इस चेष्टापर आश्चर्य करते हुए पूछा :

—क्या किसी आदमी या चीजकी प्रतीक्षा है, जो इधर-उधर देख रहे हो ?

—ने, किसी बातका मुझे ख्याल नहीं है। मैंने अपने जीवनमें कभी ऐसी बातोंको ख्यालमें भी नहीं लाया। न मैं किसीसे डरा और न डरूँगा। देख रहा हूँ, कि कहीं कोई शिकार तो नहीं है—शाकुलने जवाब दिया।

इस तरहके दिनमें बयाबानमें शिकार नहीं दिखलाई देते। सभी आँधी-पानीसे भाग गये हैं।

—शायद आंधी-पानीसे भागे हमारी तरफ आ जायँ।

मुराद और शाकुल जाके नदी किनारे बैठे। मुराद रोटी खाने लगा

और शाकुल अपनी बंदूकको इधर-उधरसे देखते आखेटकी तारीफ़ करने लगा।

—आखेट या शिकारकी कला बहुत ही अच्छी चीज है। शिकारी प्रतिदिन ताजा स्वादिष्ट मांस खाता है। लोमड़ी और हरिन जैसे जानवरों के चमड़ोंके बेचनेसे उसका खीसा सदा पैसेसे भरा रहता है; सियार और भेड़िये-जैसे हिंस्र पशुओंको मारकर वह पशुओं और आदमियोंको उनके चंगुलसे बचाता है। यदि मैं उस भेड़ियेको नहीं मारता, तो अब तक वह सभी भेड़ोंको फाड़ डालता और शायद तुझे भी हानि पहुँचाये रहता।

शाकुलने खड़े होकर चारों ओर नजर दौड़ायी और फिर बैठकर आत्मश्लाघा करने लगा —

—मैं खुद एक अच्छा शिकारी हूँ। यदि बुलबुलकी आँखपर निशाना लगाऊँ, तो भी गोली खाली न जाये।

शाकुल थोड़ा चुप रहकर बंदूककी नलीको देखते हुये फिर बोलने लगा :

लेकिन मैंने इस हुनरपर आसानीसे अधिकार नहीं पाया, बहुत अभ्यास किया, बहुत-सा गोला-बारूद नष्ट किया, तब जाके अच्छा शिकारी बना। अब भी जब कभी छुट्टी मिलती है, तो अभ्यास करता हूँ, जिसमें बदूकसे हाथ और निशानेसे आंख न बहके। यदि मैदानमें जाकर कोई शिकार नहीं मिलता, तो भी अभ्यास करके घर लौटता हूँ। यहाँ कोई चीज दिखलाई नहीं पड़ रही है, तो भी थोड़ा अभ्यास करना चाहिये।

शाकुलने कारतूसको ठीकसे लगा बन्दूकको चारों ओरसे देखकर मुरादसे कहा :

—उठ, अपनी लाठीको लेकर वहाँ उस कीचड़के पास जा और उसमें कोई निशान बतला। देख तो मैं उस जगह गोली मार सकता हूँ या नहीं।

मुरादने अपनी लाठीको हाथमें ले शाकुलकी बतलायी जगहपर लाठी गाड़कर उसे निशानकी जगह बतलायी, और "हाँ, इसी जगह मार" कहकर उसने वहाँसे हटना चाहा।

शाकुल बंदूक लिये तैयार था। उसने मुरादको वहाँसे हटनेका मौका न दे घोड़का दबा दिया। मुराद गिर पड़ा। गोली लाठीमें न लग मुरादकी बगलमें लगी। शाकुल बंदूकको एक ओर रख मुरादके पास गया। मुराद अब भी छटपटा रहा था। शाकुलने पैर पकड़कर उसे नदीमें फेंक दिया, और अपने आपसे कहा "अब घोड़ा दौड़ाऊँ, यह पंचगोलिया अपना हलाल का माल है।"

११

एशानकुल बाय अपने सब माल-असबाबको नदी पार करानेके बाद पड़ोसी देशके और भीतरकी तरफ गया। वहाँ उसने अपने लिये रबात बनाई और शाकुलको भी अपना सह-भागी बना लिया। नयी रबातमें चले जानेके बाद उसने एक सफेद भगोड़ेकी लड़कीके साथ ब्याह किया। बायकी नयी स्त्री और शाकुलकी स्त्री रबातके भीतर बाय-बिका (सेठानी) बनकर बैठीं, घरका सारा काम पशुओंकी देख-भाल और भेड़ोंका चराना साराके ऊपर था, जिसमें अनाथ भी मांकी मदद करता था।

बायने एक नयी रहस्यपूर्ण जिन्दगी शुरू की। वह शाकुल और अपने लड़के इस्तमूको साथ लेकर आधी रातको घोड़ेपर सवार हो रबातसे निकल जाता और कुछ दिन गायब रह फिर आधी रातको रबातमें आ पहुँचता। जब बाय रबातमें रहता, तो उसके पास रातको बड़ी पागवाले आदमी आते। ये आदमी बंदूकें, तमंचे और कारतूसोंसे भरे खलीते लाकर बायको देते और वह उन्हें निकोलाय (ज़ार) के सोने-चाँदीके सिक्के और अफगानी रुपयेको देता।

जब रबातमें इस तरहके बहुत-से हथियार जमा हो जाते, तो बाय, शाकुल और अपने बेटेके साथ तमंचों और कारतूसोंको खुर्जियोंमें रखता, बंदूकोंको लोइयोंमें लपेटता, फिर उन सभी चीजोंको तीनों घोड़ोंपर रख सवार हो हाथमें बंदूकें लिये आधी रातको रबातसे रवाना होते और कुछ दिनोंके बाद फिर लौट आते; लेकिन लौटते वक्त उनकी खुरजियाँ खाली होतीं, पासमें एक भी बंदूक न होती।

अनाथ सारी बातोंको देखता, लेकिन भेद न समझ पानेसे चकित होता। एक बार उसने इसके बारेमें माँसे पूछा। साराने जवाब दिया—हथियार बेंचना इस देशमें फायदेका रोजगार है, जान पड़ता है बाय हथियारकी सौदागरी करने लगा है।

इसी बीच ऐसी बात हुई, जिससे अनाथको गुप्त रहस्यका पता लग गया। एक दिन अनाथ शाम होनेके बाद अपनी माँके साथ भेड़ोंको चरागाहसे लौटाये ला रहा था। सारा रबातके भीतर चली गयी और अनाथ भेड़ोंको हाँककर भेड़खानेमें ले गया। फिर वहीं पासमें घास और तृणको बराबर करके अपने लिये सोनेकी जगह बनायी और वहाँ पालथी मारकर बैठ गया। एक घंटे बाद बायके पुत्र इस्तमूने एक कटोरा पानी और एक टुकड़ा सूखी रोटी लाकर अनाथको व्यालूके लिये दिया। अनाथ पानीमें भिगो रोटी खाकर सोनेके लिये पड़ रहा, लेकिन उसे नींद नहीं आयी। गर्मी थी और घास-तिनका उसके शरीरमें गड़ रहा था, साथ ही बड़े-बड़े मच्छरोंने भी आक्रमण कर दिया। जहाँ वे काट लेते उस जगह चकता पड़ जाता, जान पड़ता घावमें नमक डाल दिया गया है। खुजली भी बहुत होती। खुजलानेपर और भी अधिक पीड़ा होती।

आधी रात हो गयी। लेकिन अब भी अनाथको नींद नहीं आ रही थी। इसी समय किसीने रबातके फाटकको तक्तक् किया, जिसे सुनकर शाकुलने भीतरसे आकर दरवाजेको खोल दिया। दो सवार भीतर आकर घोड़ेसे उतर गये। शाकुलने उनके घोड़ोंको एक-एक करके

लेजाकर दीवारमें गड़े खूटोंमें बाँध दिया और खुद उन्हें चबूतरेके पास ले जाकर बैठाया; फिर चिराग, बिछौना लाने तथा बायको खबर देनेके लिये भीतर चला गया। कुछ क्षणोंके बाद हाथमें चिराग लिये बायभी भीतरसे आया। शाकुलने शाल लेआकर चबूतरेके बिछौने पर बिछा दिया। बायने दीपकको बीचमें रखकर मेहमानोंसे कुशल-मंगल पूछा और सभी चिरागकी चारों ओर बैठ गये।

अनाथ चिरागकी रोशनीमें नवागन्तुकोंकी ओर एक-एक करके देखने लगा। पोशाक और रंग-रूपमें वह स्थानीय लोगों-जैसे न थे। उनके शिरोंपर वैसे बड़े-बड़े पग्गड़ नहीं थे, जैसे रातको प्रायः आनेवालोंके पास होते थे। उनकी शकल-सूरत नदी (वक्षु)की दूसरी तरफके लोगों-जैसी थी।

बातचीत शुरू हुई। उनकी भाषा नदीके उस पार-जैसी थी। वही भाषा, जिसके भीतर अनाथ पैदा हुआ और बड़ा था। उनकी बातमें बारबार हिसार, रेगर, कूकताश, कबाद्रियान, देहनौ और तिरमिज़ जैसे रायनों (परगनों) और गाँवोंके नाम आते थे, जोकि सभी नदीके उस पार अवस्थित थे। बातके बीचमें कई नाम आते थे, जिन्हें अनाथ-ने पहले नहीं सुना था। जो नाम अधिक आते थे, उनमें कुछ थे इब्राहीम बेक, फ़ुज़ेल मख़सूम, एशान सुल्तान, अनवर पाश्शा जब्बार खुजाईन, दौलतमंदबी और कूर शेरमत। बातोंके बीचमें बासमची[1] और कूरबाशी (बासमचियोंके सरदार) के शब्द प्रायः आते थे। अनाथने उनके मुँहसे बोलशेविक शब्द भी सुना। उसने इस शब्दको माँके मुँहसे भी एक-दो बार सुना था। माँने बोल-शेविकों की तारीफ रूजीमुरादके भाषण सुनाते समयकी थी, लेकिन आज रातके मेहमान बोलशेविकोंको सिर्फ गालियाँ दे रहे थे।

उनके सारे वार्तालापको सुनकर अनाथ सिर्फ इतना ही समझ सका,

---

[1]क्रान्ति-विरोधी धर्म-युद्धके योद्धा डाकू

कि नदीके उस तरफ बोलशेविकोंने मजूरों और किसानोंकी सरकार क़ायम की है। उस सरकारने नंगे, भूखों, गरीबों, नौकरों, चरवाहों, बटाईदार किसानों और खिदमतगारोंको अपनी तरफ कर लिया है और उनके भीतर धरती-पानीको बाँट दिया, बाय-एशान (गुरु), मुल्ला और अमीरके अमलदारोंका शासन गरीबोंके ऊपरसे दूर कर दिया है।

बायों, सूदखोरों, एशानों (गुरुओं), अमीरके अमलदारों और मुल्लोंने बोलशेविकों और मजूर-किसान-सरकारके विरुद्ध सेना संगठित की, जिसे उन्होंने बासमर्ची नाम दिया। इन्हीं बासमचियोंके सरदार बाय और सूदखोर आदि बने। उनका उद्देश्य है मजूर-किसान-सरकार-को नष्ट करना, गरीबोंको फिर बायोंका गुलाम बनाना और अमीरको फिरसे तख्तपर बैठाकर उसे बादशाह बनाना।

एशानकुल बायने अपने मेहमानोंसे बात करते कहा—बासमचियों-ने स्वयं अपना नाम बासमची नहीं रखा, क्योंकि इसका अर्थ चोर-डाकू है और लोग चोर-डाकुओंसे घृणा करते हैं। उनको सबसे अच्छा नाम अनवर पाशशा ने दिया है, वह है "इस्लामकी सेना" और उसने स्वयं "इस्लाम सेनाका अमीर" उपाधि धारण की है।

बायने बासमचियोंके कामकी योजनाके बारेमें कहा—बासमचियों-को सिर्फ मजूर-किसान-सरकारको रास्तेसे निकालना या बोलशेविकों-को खतम करना या वे लोग जोकि बोलशेविकों या मजूर-किसान-सरकार को सहायता देते हैं, उन्हें पकड़कर मारना ही नहीं है; बल्कि जो कोई भी गरीब नौकर या चरवाहे हाथमें आयें, बिना किसी मुलाहिजेके उन्हें मार डालना है; क्योंकि बोलशेविकों और किसान-मजूर-सरकारकी जड़ मजबूत करनेवाले ये ही लोग हैं। यदि मजूर और गरीब न होते तो न बोलशेविक मैदानमें आते, न मजूर-किसान-सरकार ही।

मेहमानोंमेंसे एकने कहा—अबतक तो गरीबों और उनकी बीबी-बच्चोंको मारनेमें हमारा पैर कभी नहीं लंगड़ाया, न हाथ ही कँपा,

प्राय: लालसेनाकी पोशाक पहने जाकर हम गाँवोंको जलाते और गरीबोंको मारते हैं। इस तरह हम एक तीरसे दो शिकार करते हैं : एक ओर गरीबोंका विनाश करते हैं और दूसरी ओर लोगोंके भीतर बोलशेविकों और लालसेनाके विरुद्ध घृणा पैदा करते हैं।.........

सामने रखे भोजनको खा लेनेके बाद मेहमान चलनेको तैयार हुए। शाकुल अन्दरसे कुछ बंदूकें, तमंचे और कारतूस ले आया। तमंचोंको उसने मेहमानोंकी खुरजीमें डाल दिया और बंदूकोंको लोई-में लपेटकर रस्सीसे बाँध उनके हाथमें दे दिया। चलते वक्त एक मेह-मानने बायकी ओर निगाह करके कहा—अपने घर-बार धरती-जमीन छोड़कर दूसरे देशमें मारे-मारे फिरते बायोंका कर्तव्य है,कि बासमचियों-की हर प्रकारसे सहायता करें। जो चीज भी उनके पास है, शरीरके वस्त्र तकको बेंचकर उसके पैसेसे हथियार खरीदकर बासमचियोंको दें। जब हम विजय प्राप्त कर लेंगे, तो बायोंको फिर धरती-पानी, माल-असबाब और अपने नौकर-चाकर मिल जायेंगे, और जो वह खर्च कर रहे हैं, उसका दशगुना सौगुना लौट कर उन्हें मिलेगा।

—हम इस रास्तेमें सिर्फ अपने माल असबाबको ही नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़नेपर प्राण भी न्यौछावर कर देंगे।

इसी बीच तमंचा छूटनेकी आवाज आयी और बाय "हाय मरा" कहते जमीनपर गिर पड़ा। मेहमान और शाकुल हँस पड़े। पता लगा कि एक मेहमानने अपने तमंचेको भरा है या खाली, यह जाँचने-के लिये हवामें छोड़ा था। तमंचा भरा हुआ था। उस मेहमानने खुरजीमेंसे नया कारतूस निकालकर तमंचेमें भरा, फिर वे लोग अपने घोड़ेपर सवार हो रबातसे बाहर निकल गये। बाय उसी तरह बेहोश लेटा रहा।

अनाथ छिपी जगहसे इस सारे वार्तालापको सुनता रहा और अपने मनमें सोचने लगा—जिस समय मैं अपने वतनमें लौटूँगा,

तो मेरा सबसे पहला काम होगा बायोंको पकड़कर मजूर-किसान-सरकारके हाथमें सौंपना, क्योंकि यही बासमचियोंको हथियार-बंदकर गरीबों और चाकरोंको मरवाते हैं।

१२

दो साल बीत गये। नदीपारसे लायी एशानकुल बायकी भेड़ों की संख्या बहुत कम हो गयी। उसकी अधिकांश भेड़ें रबात बनाने, ब्याह करने और खासकर बासमचियोंको हथियारबंद करनेमें खर्च हो गयीं। बायने देखा कि बाकी बची भेड़ोंको सारा अकेली चरा सकती है, इसलिये अनाथको हर रोज एक सूखी रोटी देना भी व्यर्थ है। इस लिये उसने एक दिन सूर्योदय होनेके पहलेही अनाथको रबातसे बाहर करते हुए कहा—जहाँ जाना चाहे जा, तेरे खिलानेके लिये मेरे पास फजूलकी रोटी नहीं है।

साराने अनाथके सभी फटे-पुराने लत्तोंको लाकर उसे पहनाया और एक लत्तेमें एक रोटी लपेटकर उसके हाथमें दी। फिर बेटेको अंकमें भरकर रोने लगी, अपने आँसुओंसे उसके बालोंको भिगोनेके बाद आँख पोंछती हुई बोली: बेटा इस देशमें अधिक मारा-मारा न फिर, जैसे भी हो सके नदी पार हो अपने वतनमें जा। वहाँ बालशालाको ढूँढ़ना, वहाँ तुझे पढ़ा-लिखाकर बड़ा करेंगे। दुखी मत हो, मेरे प्राण, यदि मौतने छुट्टी दी तो मैं भी तेरे पीछे आऊँगी।

अनाथने नंगे पैर पैदल रास्ता पकड़ा और जबतक रबात आँखोंसे ओझल न हो गयी, तबतक हर पगपर एकबार घूमकर रबातके पास खड़ी अपनी करुणामयी माँकी ओर देखता और फिर रोकर आँखोंको पोंछ दिल न चाहते भी एक पग आगे बढ़ता। यह वियोग अनाथके लिये बहुत ही असह्य था। वह एक ऐसे व्यक्तिसे अलग हो रहा था, जो उससे प्रेम करता, उसका नाज़ उठाता, कठिनाईके वक्त उसे तसल्ली देता था।

कितनी ही बार उसके दिलमें आया, लौट जाये और माँके पास रहे। लेकिन उसने सोचा यह संभव नही, क्योंकि मालिक अपनी रबातमें जगह नहीं देगा, फिर वह कहाँ सोयेगा और क्या खायेगा।

माँकी अवस्था अनाथसे भी बुरी थी, वह अपनी आँखोंसे देख रही थी, कि उसका प्राणप्रिय पुत्र सदाके लिये उससे अलग हो रहा है, लेकिन वह उसे अपने पास रख नहीं सकती थी। वह अपनी आँखों देख रही थी, कि उसका प्राण शरीरसे निकल रहा है, लेकिन वह उसे अपने शरीरमें रखनेकी शक्ति नहीं रखती थी। साराकी बहुत इच्छा हुई, कि बायकी रबातको छोड़कर पुत्रके साथ चली जाय, लेकिन उसे हिम्मत नहीं हुई; क्योंकि वह जानती थी, कि यदि बाय देख लेगा, तो उसे जानेसे रोकेगा ही नहीं, बल्कि मार-मारकर मुर्दा बना देगा। इस लिये उसने अपने संकल्पको अनुकूल अवसरके लिये रख छोड़ा।

साराने अनाथकी ओरसे अपनी आँखको नहीं फेरा। अनाथ जितनी ही दूर होता गया, उतना ही उसकी आँखोंमें अँधेरा छाता गया और अंतमें अनाथ उसकी आँखोंसे ओझल होगया--साराका सूर्य डूब गया और दुनिया उसे अँधेरी दिखाई देने लगी।

"बदमाश! क्यों यहाँ मुर्दों की तरह खड़ी है, दिन हो गया और अभीतक भेड़ोंको चराने नहीं ले गयी?" इन शब्दोंको सुनकर साराने आँख खोलकर देखा, कि बाय उसे गाली दे रहा है और सूर्य भी भाला बराबर ऊपर उठ आया है। साराने डरसे काँपते-काँपते बायकी भेड़ों को चरनेके लिये निकाला, लेकिन उसका सारा ध्यान पुत्रपर लगा हुआ था। वह सदा इसी विचारमें रहती, कि कैसे बायके घरसे निकल भागे।

बायको भी साराके विचारोंकी गन्ध लग गयी थी। उसने अपने पुत्रको--जो कि अब सयाना हो गया था--साराके ऊपर रखवालीके लिये छोड़ दिया और इसी लिये उसे घरसे दूर या साथ भी न ले जाता। इस्तमकी नजर सदा सारापर रहती।

× × ×

अनाथ चलता जा रहा था, लेकिन कहाँ जा रहा है.यह उसे मालूम न था। अपने दिलमें उसने निश्चय कर लिया था, कि नदी तटपर पहुँच वहांसे जल्दी ही अपने वतन चला जाऊँगा। लेकिन उसे यह भी मालूम न था, कि वह रास्ता नदी-तटपर जाता है कि नहीं। नदी किनारेका ध्यान करके वह पहाड़ोंके किनारे-किनारे मैदानोंके ऊपर-ऊपर दर्रों, खड्डों और नालोंसे होते जा रहा था। जब थक जाता तो पानीके किनारे बैठकर आराम करता और रोटीके एक टुकड़ेको भिगोकर खाता, इसके बाद फिर चलना शुरू करता।

दिन बीत गया। सूर्य डूब गया। दुनियामें अंधकार छा गया। अनाथ एक झोंपड़ेके पास पहुँचा और सोनेके विचारसे उसके अन्दर चला गया। झोंपड़ेके अन्दर एक ओर एक बकरी बँधी थी, जिसे उसका बच्चा पी रहा था, दूसरी ओर दो स्त्री-पुरुष आमने-सामने बैठे रोटी-दही खा रहे थे। मर्दने अनाथसे उसके वहाँ आनेका कारण पूछा।

—मैं नदीके उस पारका एक मुसाफिर हूँ। माँ गुम हो गयी है, उसीको ढूँढ़ता फिर रहा हूँ और आज रात बितानेके लिये यहाँ आया हूँ—यह कहते हुए अनाथने अपने दिलमें कहा—"यह बात झूठी नहीं है,मैं अपनी जननी माताको नहीं ढूँढ़ रहा हूँ, तो भी उस माँको ढूँढ रहा हूँ जिसने मुझे अपनी गोदमें पाला-पोसा; वह माँ मेरा देश है, और ऐसा देश है जो अब वस्तुत: गरीबों और चाकरोंका देश हो गया है।"

"बहुत अच्छा" मर्दने कहा और मेहरीने दस्तरखानके पास बैठाकर उसे भी रोटी-दही खानेको दी। खाना खतम कर लेनेपर मेहरीने उसे एक तरफ सुला दिया।

सबेरे तड़के ही अनाथ उठकर हाथ मुँह धो चलनेके लिये तैयार हुआ, लेकिन स्त्रीने बिना कुछ खिलाये-पिलाये नहीं जाने दिया।

उसने उसे दूधमें रोटी तोड़कर खिलाई, फिर एक रोटी रास्तेके लिये देकर बिदा किया।

अनाथ चलनेके लिये अपनी जगहसे उठा, लेकिन उसके कदम रखनेसे मालूम होगया, कि पैरमें कष्ट है। स्त्रीने उसे रोककर उसके पैरके तलवोंको देखा, वहाँ फफोले पड़े हुए थे और कुछ उनमेंसे फूटकर पानी दे रहे थे। "ऐसे पैरसे तू सौ पग भी नहीं चल सकता।" और उसे बैठाकर पुराने लत्ते और लोईके टुकड़ोंको जूतेकी तरह उसके पैरोंमें मजबूतीसे बाँध दिया और फिर "अब जा, भगवान तेरी रक्षा करें" कहकर बिदा किया।

अनाथ अपनी यात्राके दूसरे दिन भली औरतकी दी हुई रोटीको खाकर शामतक चलता रहा। उसे एक अधिक आबाद गाँव मिला। गाँवके भीतर घुसते ही एक बड़ा दरवाजा था, जिसके भीतर एक बड़ी हवेली थी। हवेलीके सामने भेड़ें और काले माल (ढोर) भरे हुए थे। एक आदमी ने अनाथकी पिछली रातवाली बातको सुनकर जबाब दिया--यहाँ मुसाफिरके लिये जगह नहीं है--फिर संदेहकी दृष्टिसे देखने लगा।

अनाथने उसके संदेहको दूर करते हुए कहा--इतनी बड़ी हवेली जिसमें इतने अधिक पशु रह रहे हैं, क्या वहाँ एक चौदह साला बच्चेके लिये एक ओर शिर रखने का भी स्थान नहीं है? मैं समझता हूँ कि आप मुझे चोर समझ रहे हैं, यदि मैं चोर होऊँ भी, तो भी इस उम्र और इस हालतमें मुझसे क्या बन सकता है?

मर्दने कुछ लज्जित हो आँखसे इशारा करके कहा--"जा, वहाँ सो जा।"

रात बीत गयी, सबेरे तड़के अनाथ चलनेके लिये उठ खड़ा हुआ। आदमीको वह कुछ अच्छे स्वभावका मालूम हुआ। उसने उससे फायदा उठानेके लिये कहा--तू थका सा मालूम होता है, कुछ

दिन मेरे घरमें ठहर। मेरा चरवाहा बीमार हो गया है, जबतक वह ठीक होकर न आये तू मेरी भेड़ोंको चराता रह।

अनाथको यह बात पसन्द आयी। दो दिनकी यात्रासे वह बहुत थक गया था। सोचने लगा कि कुछ दिन इस आदमीकी चरवाही करूँ और खानेके लिये जो रोटी मिले, उसमेंसे एक भाग बचाके रखता जाऊँ। जब कुछ दिनोंके खानेके लिये आहार जमा हो जाये तो चल दूँगा और इस प्रकार घास खाकर बीमार हुए बिना नदी-तटपर पहुँच जाऊँगा। नदी पार तो उसका प्रिय देश है ही। यह सोचकर "मैलश, रहूँगा" कहकर जवाब दिया।

गृहपतिने भेड़खानेके पास एक छोटी कोठरिया अनाथके रहनेके लिये दे दी। अनाथ अब नये मालिकके घर सवेरेसे शामतक चरवाही करता। मालिक उसके खानेको प्रतिदिन एक रोटी और एक टुकड़ा (पनीर) देता। अनाथ पनीरको बिलकुल नहीं खाता और रोटीमेंसे भी आधा ही खाकर माँके दिये लत्तेमें पनीर और रोटीको बाँधकर कोठरीमें जमा करता जाता।

दशवें दिन अनाथने कोठरीको जाकर देखा, तो लत्ता खाली था और दश दिनकी जमा की हुई रोटी और पनीरका कहीं पता न था। उसने मालिकसे पूछा, तो उसने कहा :

—तेरी भाभी तेरी कोठरीमें गयी, बिना खाये रोटी पनीरको देखकर समझा, वह खराब हो जायेगी इसलिये उठा ले गयी।

अनाथने कुछ नहीं कहा, लेकिन दिलमें सोचा कि अब पनीर और रोटीको जमाकरके ऐसी जगहमें छिपाऊँ, जहाँ उसे कोई पा न सके। उस दिन मालिकने पनीर बंदकर सिर्फ आधी रोटी देते हुए कहा "तू बहुत अच्छा लड़का है, भोजन कम खाता है" और "बारकल्ला" कहकर प्रशंसा भी की।

अनाथ अब दूसरी तरहसे सोचने लगा और मौका पाकर मालिककी दो-तीन रोटी चुराकर भागनेका निश्चय किया। उपयुक्त अवसर—

की आशामें अनाथ अपने नये मालिकके यहाँ चरवाही करता रहा। बहुत दिन नहीं बीता, कि उसे ऐसा अवसर मिल गया। अनाथ एक दिन शामको भेड़ोंको घर ले आया। उसने देखा, कि मालिक घरपर नहीं है और उसका घोड़ा भी नहीं है। उसने समझा कि वह कहीं दूर गया है। भेड़ोंको ढोरखानेमें रखकर वह घरके भीतर गया। चिराग जल रहा था, बच्चे सो रहे थे, लेकिन मालकिन नहीं थी। उसने इधर-उधर नज़र दौड़ायी, लेकिन मालकिनका पता नहीं लगा। पड़ोसिनके घरकी ओर खुलनेवाली खिड़कीसे बातचीत होते सुनाई दी। अनाथने कान लगा कर सुना, तो देखा मालिकन पड़ोसिनके साथ गप लड़ा रही हैं। "अब मौका मिल गया" सोचकर अनाथ घरके भीतर इधर उधर ढूँढ़ने लगा। कोठेपर गद्दे के नीचे एक लकड़ीकी संदूक देखी। संदूक खोलकर देखा, तो वह रोटियों-से भरी हुई थी। वह पाँच दिनकी यात्राके लिये पाँच रोटी लेकर कमरे-से बाहर हुआ। ओसारेमें रस्सियोंपर छीकोंमें अधसूखे पनीरके टुकड़े देखे। उनमेंसे भी दश टुकड़े लेकर रोटीपर रखे। उसने अपनी कोठरीमें जा रोटी और पनीरको लत्तेमें बाँधा, अपनी सभी पुरानी पोशाकको पहना और चरवाहेकी लाठी ले रोटीको बगलमें दबा रास्ता लिया।

अभी वह गाँवसे बहुत दूर नहीं गया था, कि एक सवार आ गया। सवारने पूछा--हाँ, बखैर कहाँ जा रहा है?

आवाजसे अनाथने पहचान लिया, कि वह उसका नया मालिक है। उसने काँपती हुई आवाजमें उत्तर दिया—कहीं नहीं, ऐसे ही टहलने आया था।

—टहलनेके लिये? लम्बे दिनमें टहलकर नहीं अघाया—कहते मालिक घोड़ेसे उतर पड़ा और उसकी बगलसे पोटलीको छीनकर देखा। "नहीं खाऊँगा, नहीं खाऊँगा, मेरा भोजन टोकरीमें छोड़ जा"

कहनेकी तरह न खाते न खाते पाँच रोटी और दश टुकड़ा पनीर एक ही साथ खाना चाहता है क्यों ?

अनाथ कुछ नहीं बोला। मालिकने पोटलीको उसके हाथमें दे घोड़ेपर सवार हो "आगे-आगे चल" कहा। अनाथ मालिकके आगे-आगे गाँवकी ओर चला। मालिकके दरवाजेके पास जाकर उसने घरके भीतर जाना चाहा, किन्तु मालिकने कहा—"अब मेरे घरमें तेरे लिये जगह नहीं, अपना रास्ता नाप।" अनाथ चलने लगा, लेकिन मालिक भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। तीन-चार मील चलनेके बाद वह एक मकानके पास पहुँचे, जिसके दरवाजेपर बंदूक लिये एक सिपाही पहरा दे रहा था। "ठहर" कहकर मालिकने आवाज दी। अनाथ ठहर गया। मालिकने घोड़ेसे उतरकर उसे पासके पेड़में बाँध दिया और अनाथको आगे करके हवेलीमें ले गया। घरमें चिराग जल रहा था, जिसके पास कुछ आदमी बैठके चाय पी रहे थे। उनमेंसे एकने पूछा—क्या बात है?

—यह लड़का मेरे घरसे इन चीजोंको चुरा भागा, उसे पकड़कर लाया हूँ और सजा देनेके लिये विनती करता हूँ—मालिकने कहा और अनाथके हाथकी पोटलीको लेकर उन्हें सौंप दिया।

—कोतवाल (मीरशब) अभी सोये हुए हैं, तुम अपना काम करो, कल सबेरे जब कोतवाल आकर बैठेंगे, तो उन्हें कहकर सजा दिलवा देंगे—उनमेंसे एकने कहा।

मालिक चला गया। कोतवालके आदमियोंने अनाथको भुँइधरेके भीतर करके बाहरसे दरवाजा बंद कर दिया और फिर चिरागके पास बैठकर अनाथकी रोटी-पनीरके साथ चाय पीने लगे।

× × × ×

भुँइधरा एक बहुत ही छोटा और अँधेरा घर था। वहाँ अनाथके अतिरिक्त पाँच-छ दूसरे आदमी भी लेटे हुए थे। एक-दो के शिर पैरपर गिरते-पड़ते उनकी गाली सुनते अनाथ एक खाली जगह पाके

लेट गया। वह रात भर जागता सबेरेके वक्त सो सका। आँख खुलनेपर देखा कि धूप फैली हुई है और कोई "चोर लड़का" कहकर आवाज दे रहा है। अनाथ उसके पास गया और वह उसे एक चबूतरेके पास ले गया, जिसपर कुछ आदमी बैठे हुए थे। उनमेंसे एक आदमीने अनाथको पकड़ नंगाकर जमीनपर लेटाकर दाबे रखा और दूसरा आदमी एक कमची लेकर उसकी नंगी पीठपर मारने लगा। अनाथ चिल्लाने लगा, लेकिन वहाँ बैठे आदमी हँसने लगे और उनमेंसे एकने कहा--कमची सहनेकी शक्ति नहीं थी, तो चोरी क्यों की ?

कमची मारनेके बाद फिर उसे भुँइधरेमें बंद कर दिया और बाहरसे ताला मार दिया। बिना पूछे मारनेका कारण क्या था। इसे उसने अपने पहलेसे आये बंदियोंसे पूछा। उन्होंने बतलाया कि स्थानीय सरकारके कानूनके अनुसार चोर और अपराधीको कुछ समय प्रतिदिन बिना पूछे एक बार मारते हैं। उसके बाद यदि उचित समझते हैं, तो पूछते हैं और यदि हाकिमके विचारानुसार वह अपराधी साबित होता या बिना पूछे भी उसे दंड देनेका फैसला करते हैं। इसी (अफगानी) कानूनके अनुसार वह अनाथको लगातार तीन दिनतक मारते रहे। चौथे दिन उसे ले आकर कुरसीपर बैठे एक दाढ़ीमुड़े मुँछदरके सामने खड़ा किया।

—तुझपर सौ रुपया जुर्माना होता है, यदि उसे इसी वक्त लाकर दे तो इसी वक्त छूट सकता है। यदि तेरे पास पैसा नहीं है, तो माँ-बाप या भाई-बंधुका पता दे, हम अपना आदमी भेजकर पैसा ले लेंगे और तुझे छोड़ देंगे।

--मेरे पास न पैसा है न सगा-सम्बन्धी -अनाथने कहा--सिर्फ एक माँ है, जो कहाँ है, मैं नहीं जानता और उसीकी खोजमें घूमते इस बलायमें फँसा।

—ऐसा ही सही, रोज एक बार कमची खाकर लेटा रह--दाढ़ी

कटे आदमीने कहा —इस बीचमें तू या तो मर ही जायगा या पैसा लाकर देगा।

—जो कुछ है वह मेरी तकदीरसे है—कहते अनाथ रोने लगा।

लेकिन उसके आँसुओंको देखकर किसीको दया नहीं आयी, एक बार फिर पीटा, पीटते वक्त अनाथके अश्रु सूख गये और उसकी जगह उसके दिलमें क्रोधकी आग भड़क उठी। पीड़ाके बहुत होनेपर भी वह दाँतोंको दाँतों पर दबाकर चिल्लाया नहीं। पीटना खतम करके उन्होंने "उठ" कहा; लेकिन अनाथने अपनी जगहसे उठते उपहास करते कहा—क्या मारनेसे अघा गये ?

इसके जवाबमें एक आदमीने अनाथकी गर्दनपर ऐसा कड़ा मुक्का मारा, कि वह मुँहके बल जा गिरा, किन्तु तुरन्त उठकर मारनेवालेकी तरफ कड़ी निगाहसे देखने लगा। उस आदमीने एक थप्पड़ और उसके मुँहपर मारकर कहा—जा हवालातमें।

अनाथने अपने साथी बंदियोंसे सौ रुपये जुर्मानेकी कहानी कही।

—तुझे हलकी सजा दी है। हममेंसे हर एकपर हजार-हजार जुर्माना किया है—उनमेंसे एकने कहा।

—तुम्हारे पास पैसा है, लाकर दे सकते हो, लेकिन मैं कहाँसे पैसा लाकर दूँ—अनाथ ने कहा।

—हममेंसे भी किसीके पास पैसा नहीं है—उनमेंसे एकने कहा।

—ऐसा ही हो। चलो यहीं लेटें।

—लेटेंगे या हमें खलास कर दिया जायगा—उस बंदीने कहा।

× × × ×

हवालातमें आये अनाथको छठा दिन बीत रहा था। आधी रातको हल्ला-गुल्ला सुनकर उसकी नींद खुल गयी। आँख मलकर देखने लगा। कुछ बन्दूक छूटनेकी आवाज सुनाई दी। कुछ मिनट बीतते-बीतते हल्ला-गुल्ला बन्दीखानेके दरवाजेपर पहुँचा। कुछ लोगोंने

आकर भुँइधरेके किवाड़को मारकर तोड़ दिया और बंदियोंको निकाल बाहर किया। उनके पीछे-पीछे अनाथ भी बाहर निकल आया। कोतवालीके बाहर बहुत-से आदमी मशाल लिये खड़े थे। मशालके प्रकाशमें वहाँ तीन मुर्दे लेटे दिखाई पड़े। हल्ला करनेवालोंने दो मुर्दोंको उठा लिया, तीसरा शायद कोतवालका आदमी था, इसलिये उसे उसी तरह छोड़ दिया। हल्ला-गुल्ला करनेवाले कोतवालीसे बाहर निकले। अनाथ भी उनके पीछे-पीछे बाहर हो गया। फाटकके पास एक और मुर्दा खून बहाते जमीनपर लेटा था। यह द्वारपाल था। हल्ला करनेवाले मशाल वारे एक ओर चले गये और अनाथ उन्हें छोड़ दूसरी ओर चला।

× × × ×

सूर्योदय हो रहा था, अनाथ एक पहाड़के किनारे पहुँचा। वह थका भी था और भूखा भी। धरतीपर पड़ उसने कुछ देर सोना चाहा, लेकिन भूखके मारे नींद कहाँ? धूप निकल आनेके बाद वह आहारकी खोज करने लगा, लेकिन स्वयं उगी घासोंके मूलके सिवा और कुछ न मिला, लेकिन उसे खानेकी हिम्मत न हुई। दो साल पहले ऐसी ही जड़ोंको खाकर वह मरने लगा था। नयी निकली पत्तियोंको खाकर देखा, लेकिन उन्हें भी निगलनेसे डरकर थूक दिया। लेकिन कुछ खाना जरूर था। बहुत थका-मांदा था, तो भी आहारकी आशामें वह आगे चला। आगे एक मैदान मिला, जिसके किनारे बालू-बालू था। वह सुस्तानेके लिये गरम बालूपर लेट गया। वहाँ उसने बालू लिये उभड़ी हुई कुछ चीजें देखीं। अनाथने हाथ बढ़ाकर उनमेंसे एक को जमीनसे निकालकर देखा। देखते ही उसकी आँखें दीपककी भाँति चमक उठीं और मुँहमें पानी भर आया। इस चीजको उसने पहिचान लिया—यह था स्वादिष्ट खुम्ब (छत्रक)।

चरवाही करते अपने देशमें वसन्तके समय खुम्बको जमीन-

से चुन आगमें भून नमकके साथ उसने खाया था और उसके स्वाद-को भी समझता था। यहाँ इस बयाबानमें नमक कहाँ था? आग और दियासलाई भी नहीं थी, जो उसे भूनता। अनाथने सोचा "कोई हर्ज नहीं, चीज नर्म है, कच्चा-कच्चा खाकर देखता हूँ।" उसने दो-चार-को खाया, पेटमें आराम हुआ और नींद भी आयी।

जागनेपर अनाथने देखा कि दिन बीत चुका है। पेटमें भी दर्द नहीं है। हाँ, भूख लगी थी, वह नालेके किनारे ताजा पानीकी तलाश-में ऊपरकी ओर चला। पानी पीकर फिर वह लौटकर उसी जगह आया और खुमको अपने पुराने कपड़ेकी जेबों और दूसरी जगह रख कर फिर वहाँसे चला।

१३

अनाथ चार दिन राह चलता गया। किसीके हाथमें पड़कर फिर बंदीखानेमें न चला जाय, इसलिये वह रातमें चलता और दिनको गुफाओं, खड्डों या पहाड़के सानुओंपर सो जाता। खुम् उसके लिये पाथेय और राहका संवल था।

पाचवें दिन सूर्योदयके समय वह एक भीटेकी-सी जगहपर पहुँचा और सोनेके लिये किसी गड्ढेको ढूंढ़ने लगा। इसी समय आँखोंके सामने एक नदी दिखाई पड़ी। यह नदी आमू (वक्षु) नदी थी, जिसकी खोजमें अनाथ निकला था। वह सुन चुका था, कि आसपास आमू नदी-जैसी बड़ी दूसरी नदी नहीं है। लेकिन नदीका वह स्थान नहीं था, जहाँसे दो साल पहले वह पार हुआ था। उस जगहसे यह जगह या तो कुछ ऊपर थी या नीचे, जो भी हो यह निश्चित था, कि यह वही नदी थी, जिसके पार उसका प्रिय देश अवस्थित था।

अनाथ नदीतटसे अपनी मातृभूमिके दिखाई देते भूखंडको देख खुशीसे आपेसे बाहर होकर ऊँची आवाजसे बोला—ए मेरे प्यारे वतन! मेरी सच्ची मां! जल्दी मुझे अपने कृपामय अंकमें खींच! शारीरिक-

माँने भले ही मुझे जन्म दिया हो, किन्तु तूने मुझे पाला-पोसा है। बोलशेविकोंके नेतृत्वमें आकर तू और भी अधिक कृपामयी, और भी अधिक स्नेहमयी, और भी अधिक सौन्दर्यमयी हो गयी ! शारीरिक माँ मुझे जन्म देकर आफतोंमें फंसानेका कारण बनी, तू मुझे, अपने बच्चे-को आफतोंसे मुक्तकर शिक्षा दे आदमी बनायेगी, जबतक मेरे शरीरमें प्राण रहेगा, मैं तेरी सेवासे मुँह न मोड़ूँगा और यदि आवश्यकता हुई तो तेरे लिये अपने शिर, अपने तन, अपने रक्त, अपने प्राणको न्यौ-छावर करूँगा। अफसोस कि मुझे तैरना नहीं आता, नहीं तो इस तरंगित महानदको पार हो तेरी पवित्र धूलिको चूमता, अफसोस मेरे पास पक्षियों-जैसे पक्ष नहीं हैं, नहीं तो इस गंभीर नदीके ऊपरसे उड़कर आ तेरे प्रात: समीरका पेट भरके स्वांस लेता।

इस तरह कुछ देरतक बात करते अपने भीतरी भावोंको बाहर प्रगट करके नदीपार होनेकी चिन्तामें अनाथ चारों ओर नजर डालने लगा, लेकिन नदी-तटपर न एक नाव न एक गुप्सर (मशक), न एक आदमी दिखाई पड़ा। हाँ तटसे थोड़ी दूरपर शर-वनके पीछे एक काला मकान दिखाई पड़ा।

अनाथ अधित्यकासे उतरकर उस मकानकी तरफ रवाना हुआ। मकानके पास जा दरवाजेसे झांककर देखा। वहाँ एक मध्यवयस्क तुर्कमान चूल्हेपर चायदान रखकर ईंधन जला रहा था। अनाथने तुर्कमानको सलाम किया।

—अलैकुम् सलाम, आ पुत्र!—तुर्कमानने कहा।

अनाथ घरके भीतर गया। गृहपतिने हाथ फैलाकर स्वागत करके उसे बैठनेके लिये जगह बतलायी। तुर्कमानने तुर्कमानी ढंगसे "पूछो, पूछू" कहकर पहले कुशल-मंगल पूछा, फिर उसके उद्देश्यके बारेमें पूछा। अनाथने बतलाया, कि मैं नदीके उस तरफका रहनेवाला हूँ। माँसे मिलनेके लिये इस तरफ आया और अब फिर उधर जाना चाहता हूँ।

--इसके लिये कुछ देर ठहरना पड़ेगा--तुर्कमानने कहा--मेरा पेशा यद्यपि यहाँ खेती है, लेकिन कभी-कभी मिलनेपर लोगोंको नदी पार भी कराया करता हूँ। जो आदमी यहाँसे पार होते हैं, वह या तो भगोड़े हैं या कानून-विरोधी माल ले आने ले जानेवाले। भगोड़ों या भगोड़ोंके मालको नदीपार करना अपने प्राणको नदीपार कराना है। इसीलिये मैं इस कामको तब करता हूँ, जबकि मेरे खूनके बराबर पैसा पैदा हो।

तुर्कमानने बात रोककर ईंधनको फूंक आगको तेज करते हुए कहा--अच्छा, तो तू तबतक मेरे पास काम कर, खेतीके काममें मदद दे, जबतक कि कोई खूब पैसेवाला आदमी नहीं आता।

अनाथने तुर्कमानकी बात मान ली और यह सोचकर दिलमें खुश हुआ कि देर भले ही हो, लेकिन यहाँ मेरा मनोरथ सफल होगा। तुर्कमानकी चायदानी उबलने लगी। उसमेंसे दो चायनिक चाय बना एक चायनिक प्यालेके साथ अनाथके सामने रखी और दूसरी एक प्यालेके साथ अपने सामने। झोपड़ेकी दीवारमेंसे एक लत्तामें बंधी पोटली निकालकर खोला, उसमेंसे दो लिट्टयाँ निकाल टुकड़ा करके दोनों चाय पीने लगे। चाय पीनेके बाद तुर्कमानने कहा--आ पुत्र! तुझे खेतपर ले चलूं और अपनी फसलको दिखलाऊँ।

तुर्कमान आगे-आगे चला और अनाथ उसके पीछे-पीछे। दोनों काले घरसे निकलकर खेतोंकी ओर चले। घरके पास एक शर-वन था, जिसका एक छोर मकानकी दीवारसे मिला हुआ था। इसी शर-वनके बीचमें हौजकी तरहका एक जलाशय था, जो एक छोटी नहर द्वारा नदीसे मिला हुआ था। काले घरके नजदीकवाले कोनेमें एक छोटी-सी डोंगी खूंटेसे बंधी थी। तुर्कमानने नावको दिखलाकर अनाथसे कहा--तुझे नदीपार करानेमें यही नाव काम आयेगी।

अनाथने नावको देखा। तुर्कमानकी आशा भरी बात सुनी।

मनोरथ सफल होनेका विश्वास बढ़ा। वह और भी खुश होकर तुर्कमानके पीछे लम्बे-लम्बे डग रखने लगा।

दोनों खेतपर पहुँचे। तुर्कमानकी खेती छोटे-छोटे कोलोंकी थी। एक कोलेमें खरबूजा और तरबूज लगा था, जिसकी राशोंपर लोबिया और मसूर बैठायी हुई थी। दूसरे कोलेमें उड़द, सरसों ज्वार-बाजरा-जैसी दाने तथा तेलवाली फसल लगी थी। बोये बूटोंके बीचमें घास भरी हुई थी। तुर्कमानने अनाथको खेतीकी ओर इशारा करके कहा :

—तेरा काम है, इस घास और तिनकेको हाथसे उखाड़कर बाहर करना, बेलको संभालकर खरबूजे और तरबूजकी जमीनको नर्म करना। पानी देते वक्त ख्याल रखना कि ज्वारके पौधे पानीमें डूब न जायें।

तुर्कमानने एक मिनटमें तीस-चालीस दिनके कामकी योजना बताकर जाते-जाते फिर कहा :—तू यह काम करता रह, इसी बीच कोई पैसेवाला भगोड़ा भी आ जायेगा, फिर मैं तुझे बिना पैसे खुदाके लिये नदीपार करा दूंगा।

"बहुत अच्छा" कहते अनाथ तुरन्त घास उखाड़नेके काममें लग गया, लेकिन तुर्कमानने "आज दम ले ले, कलसे काम शुरू करना, कहावत है 'थके माँदेका काम आधा ही होता है'।" कहकर अनाथको लिये घरकी ओर लौटा।

घर पहुँचकर तुर्कमानने अनाथसे कहा—मैं इस समय ऊबा (गाँव) जा रहा हूँ, तू यहाँ लेटे-लेटे आराम कर, लेकिन सूर्य डूबनेके बाद होशियार रहनेकी आवश्यकता है, जिसमें चोर नाव न खोल ले जाँय।

अनाथने शिर हिलाकर बात स्वीकार की। तुर्कमानने खूंटीपर टँगे अपने जामेको उतारकर पहिनते हुए कहा, "तू सूर्योदयतक ऐसे ही रह, मैं भी सबेरे ऊबासे रोटी ला यहाँ चाय पका तुझे खिलाऊँगा और मैं भी चाय रोटी खाऊँगा" कहते खूंटीसे बंदूकको उठाली और उसी खूंटीसे लटकती गुप्सरकी (तैरनेकी मशक) ओर इशारा

करके कहते चला गया--"इससे होशियार रहना, कहीं कुत्ता आकर इसे खा न जाय।"

× × ×

अनाथ कुछ देर लम्बा पड़ा रहा, जब तुर्कमान नजरसे दूर हो गया, तो अपनी जगहसे उठा और गुप्सरको खूंटीसे उतारकर कूल (तालब) के किनारे ले गया। पानीमें भिगोया, जब गुप्सरका चमड़ा नर्म होगया, तो मुँहसे फूंककर हवा भरके उसके मुँहको खूब मजबूतीसे बाँधकर पानीके ऊपर डाला और स्वयं भी कपड़ा उतारकर उसपर सवार हुआ। लेकिन अनजान सवारकी तरह हर हरकतमें वह गुप्सरकी एक ओर लुढ़ककर पानीमें डुबकी खाता, लेकिन वह फिर उसपर सवार होकर चलनेकी कोशिश करता रहा। एक घंटा कूलके किनारे अभ्यास करनेके बाद उसने बैठना सीख लिया और फिर उसे कूलके भीतरकी ओर बढ़ाया। उसने देखा कि गुप्सरपर सवार हो एक जगह खड़ा रहनेसे उसे आगे बढ़ाना आसान है। इस तरह उसको साहस हुआ और उसने और भी तेजीसे चलाना शुरू किया। गुप्सरको जितनी ही तेजीसे चला रहा था, उतना ही उसके ऊपर शरीरको संभालना आसान था। इसी तरह अनाथ गुप्सरपर चढ़ा नहरियासे होते नदीके किनारेतक गया और फिर वहाँसे लौट आया।

उसने पानीसे निकलकर गुप्सरको बाहर किया और मुँह खोलकर उसकी हवा निकाल उसे ले जाकर फिर खूंटीपर टाँग दिया। फिर कूलके किनारे आ उसने नाव चलानेका अभ्यास करना चाहा। नावपर चढ़कर पतवार चलानेकी अपेक्षा गुप्सरपर चढ़ हाथसे चलाना उसे आसान मालूम हुआ। उसके छोटे हाथ नाव चलानेके अभ्यस्त नहीं थे, इसलिये जरा ही देर चलानेके बाद वे सुस्त हो जाते, लेकिन थोड़ी देर आराम करनेके बाद वह पहलेसे अधिक समयतक पतवार चला सकता था।

अनाथ इसी तरह दिनमें शामतक दस बार नदीके किनारे आया-गया।

सूर्य अस्त हो गया। अनाथ बहुत थक गया था, लेकिन आजके अभ्यासने उसे अधिक आशावान् बना दिया था; इसलिये वह बहुत खुश था और अपने मनमें कह रहा था "यदि खूब पैसेवाला जल्दी नहीं आया और तुर्कमानने मुझे पार नहीं किया, तो नदी पार करनेकी उपाय मुझे मिल गई।"

अनाथ लम्बा पड़ा लेट रहा था, उसे खूब नींद आयी थी। आधी रातको घोड़ोंके खुरकी खटखटाहटसे उसकी आँख खुल गयी। उसने सोचा कि नाव चुरानेवाले चोर आ गये और जल्दी-जल्दी घरसे बाहर गया। अब वह नावकी रखवाली सिर्फ तुर्कमानके लिये नहीं, बल्कि अपने लाभके लिये कर रहा था, क्योंकि उसीकी सहायतासे वह नदी पार हो सकता था। उसने उस तरफ देखा, जिधरसे खुरकी आवाज आ रही थी, और देखा कि दो टट्टू आ रहे हैं, लेकिन नजदीक आनेके बाद वह नावकी ओर न जाकर सीधे घरकी ओर आये। दोनों सवार बंदूक और तलवारसे हथियारबंद थे। पास आनेपर उनमेंसे एकने घोड़ेको रोककर अनाथसे कहा——कियिक्ची (मल्लाह) को आवाज दे।

—मल्लाह यहाँ नहीं है—अनाथने कहा।

—कहाँ गया है ?

—ऊबा गया है।

—रोटी-मोटी हो तो लाकर हमें दे।

—रोटी जो थी सब खाकर गया है, मैं भी भूखा लेटा हूँ।

—"ज़नगावा" कहकर रोटी न रखनेके लिये मल्लाहको गाली दे सवार अपने साथीके साथ नदीके नीचेकी ओर रवाना हो गया।

अनाथ अपने दिलमें "मैं समझता था ये चोर हैं। ये भिखारी नहीं हो सकते; क्योंकि मैंने सारी उम्रमें हथियारबंद भिखारी नहीं देखा" सोचते घरके भीतर जा फिर लम्बा पड़ रहा। उस रात इन दो सवारोंको छोड़कर कोई दूसरी दुर्घटना नहीं हुई। खूब पेट भर सोनेके बाद

जब वह उठा, तो धूप निकल आयी थी। आज भी वह खेतीके काम शुरू करनेसे पहले कितने ही समयतक गुप्सर और नाव चलानेका अभ्यास करता रहा। दो घंटा अभ्यास करनेके बाद तुर्कमानके आनेके डरसे वह खेतमें गया और हाथसे घास उखाड़ने लगा।

× × ×

मध्याह्न हो गया, सूर्य अनाथके शिरके ऊपर आ गया। इसी समय तुर्कमान अपने ऊबासे लौटकर आया। उसने पहले काले घरमें जा चूल्हा जला चाय उबाली, फिर खेतके पास जा अनाथके कामको देखकर "आज का तेरा काम उतना अच्छा नहीं हुआ क्यों?" कहते उसे फटकारा, और फिर आवाज बदलते हुए बोला—"खैर कोई हर्ज नहीं। अभी यह काम तेरे लिये नया है। धीरे-धीरे सीख जायेगा, तेरा काम भी अच्छा होगा"। फिर उसने कहा :

—अच्छा आ, चाय पीएंगे।

चाय पीते समय अनाथने रातको आये दोनों हथियारबंद भिखारी सवारोंके बारेमें बतलाया। तुर्कमानने ठठाकर हँसनेके बाद कहा :

—वे भिखारी नहीं थे। वे नदीतटके पहरेदार हमारी सरकारके सिपाही थे, लेकिन वे सदा भूखे रहते हैं और भीख माँगकर अपन पेट भरते फिरते हैं। इसीलिये एक रोटीके लिये अपने हाथमें पड़े एक भगोड़ेका शिर उड़ा देते हैं।

तुर्कमान चुप हो अपने चायके प्यालेको पी दूसरा प्याला भर सामने रखकर बोला—यदि उन्हें मौका मिले, तो चोरी-डकैती किये बिना नहीं रहेंगे, लेकिन वे यह काम ऐसे गरीबोंके शिरपर करते हैं जो उनके सामने कुछ कर नहीं सकते। मेरे जैसे एक गोलीका जवाब दो गोलीसे देनेवाले आदमीकी तरफ आँख भी नहीं लगा सकते।

चाय पीकर तुर्कमान फिर अपने ऊबाकी ओर जाते बोला :

—मेरे न रहनेपर यदि कोई आकर पूछे, तो उसे ऊबा भेज देना

लेकिन यदि ऐसा आदमी रातको बेवक्त आये, तो कहना इसी समय आना, कल सवेरे वह आयेगा।

उठते वक्त तुर्कमानने खानेसे बची हुई एक रोटीको अनाथके हाथमें देते हुए कहा—जब भूख लगे, तो इसे खाना। खबरदार रहना, जिसमें "हथियारबंद कुत्ते" तेरे हाथसे छीनकर इसे खा न जायें और कामको खूब मन लगाकर करना।

तुर्कमान चला गया। चाय पी लेनेके बाद भी अनाथने बहुत-सा समय गुप्सर और नाव चलानेमें बिताया और फिर खेतकी ओर गया।

अनाथ सब चीजोंसे ज्यादा इस ओर ध्यान देने लगा, कि तुर्कमान गाँवसे कब आता है। वह प्रतिदिन ११-१२ बजेके बीच गांवसे आता, चाय पकाता, अनाथके कामको देखता; फिर दोनों साथ चाय पीते, फिर उसके हाथमें रातके लिये रोटी दे और अधिक काम करनेके लिये ताकीद कर अपने गाँव लौट जाता। आने-जानेका समय निश्चित हो जानेपर अनाथने अपने कामका समय भी निश्चित कर लिया। वह प्रतिदिन शाम-सवेरे कुछ घंटे गुप्सर और नाव चलानेमें लगाता और बीचके चार-पाँच घंटे खेतीके काममें।

धीरे-धीरे वह नाव और गुप्सरको नदीकी धारमें भी खेने लगा। इसके अतिरिक्त वह बिना नाव तथा गुप्सरके पानीमें तैरने और डूबकर दम साधनेका भी अभ्यास करने लगा। खेतीका काम भी काफी आगे बढ़ा। घासको निकाल, कोड़कर खेतको गुलजार कर दिया।

तुर्कमान भी अनाथके कामसे बहुत खुश था। कभी उसे "शाबाश" और "बारकल्ला" कहता और कभी उसे "और अच्छा काम कर भगवान् करेंगे, जल्दी ही कोई पैसेवाला भगोड़ा आ जायेगा और मैं तुझे बिना पैसे ही नदीपार उतार दूँगा—कहते उसे अधिक आशावान् बना काम-में और अधिक तत्पर बनानेकी कोशिश करता।

तुर्कमानने अनाथके डीलडौलके अनुसार एक लोहे का बेलचा

लाकर उसे दिया, और हाथके कामके खतम होनेके बाद जमीनको नर्म करने मिट्टी चढ़ानेके काममें उसे नियुक्त किया।

४० दिनतक काम करके अनाथने गुप्सर और नाव चलानेका खूब अभ्यास कर लिया। वह नाव और गुप्सरको धारके विरुद्ध भी ले जा सकता था।

खेती का काम भी खतम हो गया था। तुर्कमानने एक परती जमीनको दिखला उसे खोदकर घास आदि निकाल शरदमें युनुचका (घास) बोनेके लिये तैयार करनेको कहा और साथमें यह भी जोड़ दिया "तबतक कोई न कोई पैसेवाला भगोड़ा आ ही जायेगा।"

× × ×

अनाथने नये कामको शुरू किया, लेकिन पैसेवाले भगोड़े का कहीं पता नहीं था। वह सोचने लगा, गर्मियोंके खतम होनेतक खेती-की फसल कट जानेतक भी वैसा पैसेवाला भगोड़ा शायद ही आये।

एक रात इसी तरहकी चिन्ता करते अनाथको नींद नहीं आयी। आधी रातके करीब शर-बनकी ओरसे आदमीके आनेकी आवाज सुनाई दी। वह जल्दीसे उठकर दौड़ा-दौड़ा नावके पास गया और देखा कि दो आदमी नाव खोल रहे हैं। वह चिल्लाकर बोल उठा— कौन हो?

—न डर, मैं हूँ—कहती एक परिचित आवाज सुनाई दी। यह आवाज तुर्कमानकी थी। अनाथ प्रसन्न हो उसकी तरफ दौड़ते हुए बोला—हाँ तो पैसेवाला भगोड़ा मिल गया? मैं भी तैयार हो जाऊँ न?

—ने, यह आदमी नदी पार नहीं हो रहा है, बल्कि नदीके एक टापूमें खरबूजेके कामके लिये जा रहा है—तुर्कमानने कहा।

तुर्कमान झूठ बोल रहा है, इसे अनाथने भी समझ लिया, क्योंकि खरबूजेके कामके लिये रातमें नहीं जाया करते। वह सोचने लगा "कौन जानता है, इन चालीस दिनोंमें— जबकि मैं दरिया पार

करनेकी आशामें यहाँ काम कर रहा हूँ—रातके वक्त इस धोखेबाज-ने कितने पैसेवालोंको नदी पार कराया होगा, और अब भी मुझे आशा दिलाये रखना चाहता है।" इसके बाद अनाथको तुर्कमानपर विश्वास नहीं रह गया और उसने स्वयं नदी पार करनेकी कोशिश करनेका निश्चय कर लिया।

१४

अनाथ एक दिन कोई काम न करके पड़ रहा। तुर्कमानके आनेके समय बीमार बन गया और "ऊ ऊ" करके लेटा रहा। तुर्कमानने चाय उबाली, खुद पिया और अनाथको पिलाया। अनाथने चायके साथ आज रोटी नहीं खायी। तुर्कमानने रोटी खानेके लिये बहुत जोर दिया, लेकिन अनाथने कहा—मेरा मन नहीं करता, शिरमें बहुत दर्द हो रहा है।

तुर्कमान आज अधिक देरतक नदी तटपर नहीं रहा और अनाथके दिन और रातके खानेके लिये दो रोटी रख ऊबा लौट गया।

तुर्कमानके चले जानेके बाद अनाथने तैयारी शुरू की। गुप्सरको लेकर उसे चारों ओरसे देखा, उसके एक-एक बखिया और दराजकी जगहको खूब अच्छी तरह निहारा कि वह दराजकी जगह खूब पानी और हवाकी चोटको पूरी तरह सह सकती है या नहीं। देखकर उसे पूरा संतोष हुआ। फिर वह नावके पास गया और उसे भी चारों ओरसे देखा और दर्जे और छेदमें अपने पुराने कुर्तेमेंसे लत्ता फाड़ अच्छी तरह उन्हें भर दिया, फिर घरमें लौटकर एक रोटी गर्म चायमें भिगोकर खायी और सोनेके लिये लम्बा पड़ा रहा। लेकिन नींद न आयी, उसका सारा ध्यान आमू नदी पार करनेकी ओर लगा था—आमू जैसी महानदीको वह तने-तनहा अपने जीवनमें पहली बार पार करने जा रहा था। इसी सोच-विचारमें घड़ीमें सौ बार करवटें बदलते उसने दिन बिताया।

शाम हुई। अनाथ गुप्सर और रोटीको ले नावमें पहुँचा और खूंटेसे रस्सी खोल नावको नहरसे नदीकी ओर ले चला। नदीके तटपर पहुँच लंगर डाल वह रातको अँधेरेकी प्रतीक्षा करने लगा।

इसी समय दो सरकारी पहरेदार नदीके किनारे-किनारे अनाथकी ओर निगाह किये आते दिखाई पड़े। अनाथकी दृष्टि जिस वक्त उनपर पड़ी, वह डर गया और मनमें सोचने लगा "मनोरथ पूरा होनेका समय आगया और इसी समय मैं पकड़ा जा रहा हूँ"

सिपाही सीधे कूलके किनारे आये और उनमेंसे एक-'हाँ भगोड़े ! थक न जाना" कहते घोड़ेसे उतरकर नावपर आया, लेकिन वहाँ गुप्सर और अनाथकी फटी पोशाक और एक रोटीके सिवा कुछ नहीं था। रोटीको अपने हाथमें ले सिपाहीने अनाथसे वहाँ आनेका कारण पूछा। अनाथने अपनेको मल्लाह तुर्कमानका नौकर बतलाते कहा--यहाँ नाव चलानेका अभ्यास कर रहा था, आप लोगोंको देखकर खड़ा हो गया।

वह सवार अनाथको बंदी बनाकर नावसे ले जाना चाहता था, लेकिन उसके साथीने उससे कहा--छोड़ दे ! यह लड़का भागकर क्या कर सकता है ? रोटी ले, और चल रास्ता पकड़। सवार रोटी ले अनाथको वहीं छोड़ नावसे निकलकर घोड़ेपर सवार हो गया। दोनों सवार रोटीको दो टुकड़े कर खाते चल दिये और कूल तथा शर-वनका चक्कर काटते फिर नदीके किनारे जा नजरसे गायब हो गये।

अनाथने सिपाहीयोंके सामने अपनी नावको काले घरकी तरफ चलाया और उनके चले जानेपर फिर नदीके किनारे जा वहाँ ठहर गया।

कुछ समय बाद अँधेरा छा गया। आकाशके तारोंके अतिरिक्त कहीं प्रकाश नामकी चीज़ दिखलाई नहीं पड़ती थी। पीली मिट्टी मिले आमूके जलमें तारोंका प्रतिबिम्ब भी दिखलाई नहीं पड़ता था। यह अनाथके लिये अपने महान् कार्य करनेका समय था। उसने नावको नदीके भीतरकी ओर चलाया और डरके मारे हर बार पतवार चलानेके

बाद एकबार नदी तटकी ओर देख लेता था। उसने दूर किनारेपर कालिमाओंको आते देखा। पहले उसने सोचा कि कुछ नहीं है 'रातके वक्त यहाँ आदमी क्या काम करेगा।' लेकिन देर नहीं हुई, कि उसे मालूम होगया कि वह कालिमा दो आदमी हैं। दोनों दौड़े-दौड़े नदी-के किनारेकी ओर आ रहे थे, उनमेंसे एक आगे था। उसने ऊँची आवाज़से कहा—"ठहर चोर! इधर लौट! नहीं तो गोली मारता हूँ।"

अनाथने आवाज़को पहचान लिया। यह उसके अंतिम मालिक तुर्कमान मल्लाहकी थी। रातके वक्त आनेसे अनाथ समझ गया, कि कोई पैसेवाला भगोड़ा तुर्कमानके कथनानुसार "खरबूजेवाला" हाथ आया है और पीछे-पीछे धीरे-धीरे आनेवाला आदमी शायद वही भगोड़ा है। अनाथने अपने दिलमें यह भी सोचा "यदि मैं फिर उसके हाथमें पड़ा, तो वह एक गोलीसे मेरा काम खतम कर देगा। अच्छा यही है, कि जो भी शक्ति और समय मेरे पास है, उसका उपयोग कर यहाँसे भाग चलूँ।

अनाथ इसी निश्चयके अनुसार नावको दोहरी ताकतसे चलाते मँझधारकी ओर खेने लगा। तुर्कमानने बंदूकका निशाना ले गोली चलायी। गोलीकी आवाज सुनकर नदीके दूसरे तट अर्थात् अनाथ--के प्रिय देशकी ओरसे भी गोलियोंपर गोलियाँ छूटने लगी। तुर्कमान की गोली नावके पास न आ न जाने किधर चली गयी, लेकिन दूसरी ओरसे आनेवाली गोलियाँ नावके ऊपरसे सनसनाती हुई जाने लगीं। अनाथ डर गया। उसने सोचा,कि पहली गोलियाँ शिरके अधिक ऊपर से भले ही चली गयी हों, लेकिन दूसरी गोलियाँ जरूर मेरे शिरपर आकर लगेंगी। खतरेको समझकर अनाथने अपनेको नावके भीतर छिपा लिया और गुप्सर में फूंककर हवा भरने लगा।

दूसरी तरफसे आती गोलियाँ नावके भीतरी और बाहरी कोरोंपर लगने लगी। अनाथ बहुत घबड़ाहटमें पड़ा था। एक ओर गोली लगने-का डर था और दूसरी ओर छेदके मारे नावके डूबनेकी भी आशंका



"ठहर चोर" (पृष्ठ १०१)

थी, अनाथने इस खतरेसे बचनेके लिये भरी हुई गुप्सरकी रस्सीको अपने हाथमें फँसा खिसककर अपनेको पानीमें डाल दिया।

× × ×

अनाथ नदीमें गुप्सरके ऊपर सवार नहीं हुआ। हाथमें बंधी गुप्सरको पानीकी धार ने बहाना शुरू किया। वह अधिक समय पानी-के भीतर रहता; जब सांस फूलने लगती, तो बाहर मुँह करके एक सांस ले फिर पानीमें डूब जाता।

दूसरे किनारेसे अब भी गोलियोंकी आवाज आ रही थी और प्रायः सभी नावमें लग रही थीं। धीरे-धीरे नाव सारी पानीसे भरकर डूब गयी। उसके बाद बंदूकोंकी आवाज भी बंद हो गयी।

अनाथ प्राय: दो घंटा गुप्सरपर बिना सवार हुए ही कभी डूबता कभी उतराता घाटके साथ-साथ चलता रहा। जब बंदूककी आवाज बिलकुल बंद हो गयी, तो अनाथ गुप्सरपर सवार हुआ, और पानी-के सहारे किनारेकी ओर चलने लगा।

एक घण्टा और चलनेके बाद अनाथ एक छोटे टापूके पास पहुँचा। वह बहुत थक गया था, इसलिये सुस्तानेके लिये गुप्सरको उठाये टापूपर उतरना चाहा। लेकिन टापू अभी नया-नया बना था। अभी मिट्टी-बालू कड़ी नहीं हो पायी थी, इसलिये पैर रखते ही वह उसमें धसने लगा। उसने जल्दी-जल्दी पैर निकालकर टापूके मध्यमें पहुँचना चाहा। यहाँ मिट्टी कुछ सूखी थी, वह वहाँ हवाभरी गुप्सरको शिरके नीचे रखकर लेट गया। वह भूखा भी था, थका भी था, ऊपरसे सर्दी भी खा गया था; इसलिये जूड़ीवाले आदमीकी तरह काँप रहा था, और उसके दाँत कटकटा रहे थे। वह कुछ मिनट लेटा रहा, लेकिन आराम होनेकी जगह हालत और बुरी होती जा रही थी। उसने शिर उठाकर दूसरे तटकी ओर, अपने प्रिय देशकी ओर नजर दौड़ायी। किनारा नजदीक था और वहाँके सरकंडे साफ दिखलाई दे रहे थे। उसने सोचा "देर नहीं कि मेरा जीवन यहीं समाप्त हो जाय। लेकिन

लक्ष्यके पास पहुँचकर मरना बहुत अफसोसकी बात है; जो भी हो, अच्छा यही है, कि अपनी यात्रा जारी रखूँ। यदि मरूँगा तो कृपामयी माँ, अपनी प्रिय मातृभूमिसे एक कदम नजदीक होकर मरूँगा।" इस अभिलाषाने अनाथको और शक्ति दी और वह अपनी जगहसे उठ गुप्सरको लिये फिर नदीमें पहुँचा और उसपर सवार हो किनारेकी ओर चलने लगा। पेट और छातीके नीचे गुप्सरको दबाये वह अपने हाथों और पैरोंको चला रहा था।

किनारा नजदीक आया। वह पानीपर बत्तककी तरह तैरता आगे बढ़ रहा था। यहाँ पानी बिलकुल शान्त कूल (तलैया) या हौजकी तरह मालूम होता था। अनाथकी दोनों आँखें किनारेपर लगी थीं। वह बड़े ध्यानसे देख रहा था कि कोई आदमी तो नहीं है। वह डर रहा था, कि कहीं बासमचियोंके हाथमें न पड़ जाये, क्योंकि वह जानता था कि गरीबका लड़का होनेसे उनके हाथमें पड़कर वह जिन्दा नहीं बच सकता, लेकिन नदी-तटपर कोई नहीं था। वहाँ बिल्कुल शान्ति और नीरवता छाई थी, हल्की हवा भी नहीं चल रही थी, कि सरकंडेकी



अनाथ किनारेपर पहुँचा (पृष्ठ १०५)

पत्तियोंको हिलाती। उसने निर्भय हो गुप्सरको किनारेकी ओर चलाया। निरभ्र आकाशमें चमकते तारोंके प्रकाशमें अनाथ किनारेकी चीजोंको देख सकता था। वह अधीर होकर उसी तरह तेजीसे गुप्सरको तटकी ओर चलाने लगा, जैसे चिरवियुक्त शिशु माँकी ओर।

गुप्सर किनारेपर पहुँची। अनाथने सरकंडेकी जड़ पकड़कर अपनेको किनारेपर लानेके ख्यालसे हाथको बढ़ाया। इसी समय एक शक्तिशाली हाथने उसके हाथको दृढ़तापूर्वक पकड़ा और दूसरे हाथको गुप्सरपर रखा।

अनाथ हाथमें पकड़ा गया था, लेकिन नहीं जानता था कि किन हाथोंने उन्हें पकड़ा है, क्योंकि पकड़नेवालेका सारा शरीर सरकंडेके पत्तोंकी आड़में छिपा था।

द्वितीय भाग

(१)

उस मजबूत हाथने अनाथको पकड़कर पानीके बाहर निकाल लिया और दूसरे हाथने गुप्सरको भी बाहर कर दिया। अनाथ और गुप्सरके बाहर आजानेपर हाथवाला आदमी उठ खड़ा हुआ। इसी समय नीचेकी ओरके सरकंडोंके भीतरसे भी दूसरे दो आदमी निकलकर अनाथके पास आ गये। तीनों आदमियोंकी शकल-सूरत और पोशाक ऐसी थी, जैसी अनाथने कभी नहीं देखी थी। सभीके वस्त्र यूरोपीय ढँगके तथा एक रङ्गके थे और तीनों बंदूक, तमंचा और हथबमसे हथियारबन्द थे। जिस आदमीने अनाथको पानीसे निकाला था, उसने गुप्सरको खोलकर भीतर हाथ डाल अच्छी तरह देखा कि उसमें कोई पत्र या दूसरी चीज तो नहीं है। इसके बाद उसने अनाथसे कौन, कहाँसे और किस लिये नदी पार हुआ, आदिके बारेमें पूछा लेकिन अनाथ उनकी बातको नहीं समझ सका और चकित हो उनका मुँह देखता रहा। वह रूसी भाषा नहीं समझता, यह जानकर उनमेंसे एकने वह जिस भाषाको समझता था, उसमें अनुवाद करके पूछा। अनाथने जो कुछ भी उसपर बीती थी, एक-एक करके कह सुनायी, फिर नदी पार करके आनेके बारेमें कहते हुए बतलाया :

—मैं नदी पार कर अपने प्रिय देशमें आया, क्योंकि मैंने सुना कि बोलशेविक हमारे देशके गरीब और अनाथ बच्चोंको बालशालामें पर-वरिश करके लिखा-पढ़ाके आदमी बनाते हैं। मैं इसलिये आया कि अपने देशमें सीख-पढ़कर आदमी बनूं और जो खूनखार बाय और बासमची गरीबोंको मारते हमारे देशको जलाते हैं, उन्हें पकड़कर बोल-शेविकोंके हाथमें दूँ।

—जो कुछ तूने कहा,यदि वह ठीक है, तो तेरा मनोरथ पूरा होगा—पूछनेवालेने कहा। थैलेको खोलकर एक टुकड़ा मिश्री और एक चाकलेट अनाथके हाथमें देते हुए कहा—यह खा, जिसमें जोर मिले। फिर हम चलेंगे।

अनाथने मिठाईको मुँहमें डालकर चूसना शुरू किया। बायके घरमें उसने मिठाइयाँ खायी थीं, लेकिन उनका स्वाद ऐसा नहीं था। मिश्री उसे स्वादिष्ट मालूम हुई। उसे कुछ ताकत मिली, दिल आराम हुआ और सर्दीसे काँपना बन्द होगया।

अनाथने मिठाई खाते वक्त उसपर लपेटे रङ्ग-बिरङ्गे कागज़ोंको एक-एक करके निकालकर एक हाथमें रख लिया। मिठाई मुँहमें डालकर खाते हुए वह उस कागज़को चकित और शङ्कित दृष्टिसे देखने लगा, क्योंकि पहली वार उसने ऐसी चीज देखी थी। जब उसे चाकलेट और उसपर लिपटे कागज़ोंके बारेमें कुछ नहीं मालूम हुआ, तो वह अनुवादककी ओर देखने लगा।

—इन्हें खा—अनुवादकने चाकलेट देते कहा और फिर कागज़की ओर संकेत करके कहा—इन्हें फेंक दे।

अनाथने चाकलेटको मुँहमें डाली। वह मिश्रीसे भी ज्यादा मीठी मालूम हुई, खाते वक्त उसने फिर कागजोंको एक-एक करके देखा और उसके भीतरकी पतली पन्नी निकालकर अंगुलियोंमें लपेटकर देखा, लेकिन उन्हें फेंका नहीं।

—फेंक दे, इन्हें क्या करेगा रखकर? ये बेकारके कागज हैं—दुभाषियाने कहा।

उसने बाकी मिठाईको खाते हुए कागजको जमीनपर फेंक दिया; लेकिन उससे नजर नहीं हटायी। वे लोग जो सवाल करते, उसका जवाब देते अब भी उसकी दृष्टि कागजपर थी।

चाकलेट खानेके बाद अब वह कुछ मजबूत हुआ, उसका कांपना बन्द हुआ और चेहरेपर सुर्खी दौड़ी। अब उसे लेकर वह आफिसकी



"यह खा…" (पृष्ठ १०७)

ओर चले। अनाथ उनके आगे-आगे था। उसके दिलमें खुशी और पेटमें आराम था।

× × ×

जिस समय सीमान्तपाल अनाथको कार्यालयमें ले गये, उसके शरीरपर एक पायजामेके सिवा और कुछ न था। वहां उसे नया कपड़ा पहनाकर एक कमरेमें किसीके सामने ले गये। उस आदमीकी भी पोशाक और शकल सूरत सीमान्तपालों-जैसी थी। इस आदमीने भी अनाथसे उसी तरहके सवाल किये और अनाथने भी उसे वे ही जवाब दिये, जो नदीके किनारे कह चुका था। दोनों जगहोंके प्रश्नोत्तरमें इतना ही अंतर था, कि यहां सब कुछ कागजपर लिखा जा रहा था।

प्रश्नोत्तर समाप्त होनेके बाद प्रश्नकर्ताने कहा—अच्छा, इसे ले जाओ, खिलाओ-सुलाओ, आराम करे, फिर देखेंगे।

अनाथको लेकर वह दूसरे घरमें गये। घरमें अंधेरा था, लेकिन एकाएक वह प्रकाशित हो गया। यह देखकर अनाथ एकदम कांपने लगा, उसका होश उड़ गया और चकित होकर देखने लगा। उसके रङ्गको उड़ा, चेहरेको सफेद और शरीरको काँपते देखकर लानेवाले सीमान्तपालने कहा—"डर मत, यह स्वयं जलनेवाला बिजलीका दीपक है।" फिर स्विचको दबाकर दो-तीन बार उसे जलाया-बुझाया और अनाथको वहीं रख दरवाजेको बन्द करके चला गया।

अनाथने अपने जीवनमें मिट्टीके तेलके चिरागों, लालटेनों और बदबूदार बत्तियोंके सिवा दूसरे प्रकारके दीपक नहीं देखे थे। वह सोचने लगा, बिजलीकी रोशनी अजब चीज है, जिसे बोलशेविक हमारे देशमें लाये हैं। उसने जाके अपने हाथसे स्विच्को दो-तीन बार दबाकर रोशनीको जला-बुझाकर देखा। उसकी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं था। कितने अंधकारपूर्ण, कितनी कष्टमय दुनियासे वह ऐसी प्रकाशमान और आनन्दपूर्ण दुनियामें आया। उसका हर्ष मनमें समा

नहीं रहा था। वह अपने भावोंको किसीसे कहकर हलका करना चाहता था। इसी समय अनाथको अपनी कृपामयी मां और कुर्बान भाई याद आये। वह चाहता था, कि कहीं वह उसके पास होते, तो वह बत्तीको जला-बुझाकर उस हुनरको दिखलाता, जिसे बोलशेविक देशमें लाये हैं।

बिजलीके चिरागके देखनेसे हुए आश्चर्य और मनके उद्वेगके कुछ नर्म पड़ जानेपर अनाथ कमरेकी चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा। कमरा छोटा था, लेकिन बहुत साफ और खुला हुआ। उसकी दीवारें बगुलेके परकी तरह सफेद थीं। छत और फर्शमें वानिश किये लकड़ीके तख्ते लगे थे। कमरेकी एक तरफ एक चारपाई थी, जिसके ऊपर नर्म बिछौना बिछा हुआ था। एक कोनेमें मेजपर सुराही और पासमें एक कुर्सी थी। अनाथने पहली बार इस तरहका कमरा देखा था। उसने सोचा, शायद बोलशेविकोंकी बालशाला यही है।

यदि उस समय कोई कहता, कि यह बंदीखाना है; तो अनाथ क्रोधमें आ उसकी जीभ निकालनेके लिये तैयार हो जाता। उसने डेढ़ महीने पहले पड़ोसी राजके बंदीखानेको देखा था। वह बंदीखाना भेड़ रखनेवाले हौजकी तरह था, जो अंधेरा, गन्दा और काला था। उस जेलखानेमें जिसको बंद किया जाता, उसे कपड़ा नहीं पहनाते, देख-भाल नहीं करते, शरीरसे कपड़ोंको छीनकर नंगे बदनपर कमचियां मारते और फिर लाकर बंदीखानेमें बंद कर देते।

अनाथ इस प्रकार अपने कमरेको बालशाला समझ खूब खुश हो रहा था, इसी समय किसीने द्वारको खोला और हाथमें चाय, चीनी और रोटी लाकर मेजपर रखा और अनाथको कुर्सीकी ओर संकेत करते "आ, बैठ, चाय पी और रोटी खा" कह बाहर निकलकर दरवाजा बंद कर दिया।

अनाथने चीनीको गरम चायमें डाल रोटी खाना शुरू किया।

जिस वक्त अनाथ पेट भर खाना खा चुका, द्वार फिर खुला और उसी आदमीने आकर मेजपरसे बर्तनोंको उठा लिया और चारपाईकी ओर इशारा करके कहा —यह तेरे सोनेके लिये है। फिर बाहर निकलनेसे पहले उसने बिजलीकी स्विच्की ओर इशारा करके कहा —सोनेके वक्त चिरागको बुझा देना।

अनाथने अभिमानके साथ शिर हिलाते हुए बत्तीको एक-दो बार बुझा करके कहा—मैं इस बातको जानता हूँ।

—मलोदेत्स, शाबाश—कहते आदमीने बाहर निकलकर दरवाजेको बंद कर दिया।

अनाथ कपड़ा उतार नर्म बिस्तरेपर लेट गया। वह सारी उम्र कभी चारपाईपर न सोया था, यहाँ पहली बार नर्म बिस्तरेपर लेटा था। लेटनेके साथ ही उसे नींद आ गयी।

× × ×

लम्बा बूट पहने पहरेदार दरवाजेके बाहर टहल रहा था, जिसकी आवाज अनाथके कानोंमें आयी। खिड़कीके शीशोंसे कमरेके भीतर धूप पड़ रही थी, कमरा गर्म था और दिनके बारह बज रहे थे।

द्वाररक्षकने अनाथको कमरेसे बाहर लेजा शौच और हाथ मुँह धोनेसे निवृत्त करा फिर कमरेमें लाकर बन्द कर दिया। कुछ मिनट बाद शामवाले आदमीने रोटी चीनी-चाय लाकर मेजके ऊपर रखा। भोजनोपरान्त अनाथ फिर चारपाईपर लेटकर कुछ देर सोचता रहा। फिर उसका दिल उकताने लगा "कहते थे कि बालशालामें पढ़ाते हैं। पढ़ाई कब शुरू होगी? दूसरे बच्चे कहाँ हैं? मैं क्यों अकेला हूँ?" वह अपनी जगहसे उठकर दरवाजेके पास गया। उसमें लोहेके छड़ लगे हुए थे, जिनके भीतरसे उसने झाँका, लेकिन लगे हुए शीशेमें कोई चीज मली थी, इसलिये बाहर कुछ नहीं दिखाई पड़ा। फिर उसने दरवाजेको खोलना चाहा, लेकिन वह खुला नहीं। उसे और भी चिन्ता हुई और उसने अपने-आपसे कहा—आश्चर्य! बालशालामें क्या बच्चेको

कोठरीमें अकेला बंद कर देते हैं ? यह बात ठीक नहीं है। बड़ोंसे कह-कर इसे हटवाना चाहिये।

वह फिर थोड़ी देर लेटा और फिर उठकर कमरेमें टहलने लगा। उसका मन आखिरी तौरसे रंज होने लगा। इसी समय खाना देने-वाला आदमी फिर आया। उसके हाथमें मांस-सूप और रोटी थी, जिसे मेजपर रखकर चायके बर्तनोंको लिये चला गया। आदमीको दरवाजा खोलकर जाते समय अनाथने टोककर कहा—चचा, तुम यहाँके हो ? पढ़ाई यहाँ कबसे शुरू होती है ?

आदमीने पहले अचरजके साथ अनाथकी ओर देखकर कहा—यहाँ पढ़ाई नहीं होती।

—दूसरे बच्चे कहाँ है ?

—यहाँ तुझे छोड़कर कोई दूसरा बच्चा नहीं है।

आदमी चकित हो दरवाजा बंद करके चला गया। अनाथने भी बे-बच्चा और बे-पढ़ाईकी बालशालाके बारेमें अचरज करते कुर्सीपर बैठा और शोरबामें रोटीको टुकड़े करके डालकर खाया और फिर आलू और मांसको खाते हुए उसने अपने-आपसे कहा—सूप स्वादिष्ट है। एशानकुल बायके घरपर प्रतिदिन एक भेड़ मारकर खुद खा जाते थे और मुझे ज्वारकी सूखी रोटी दिया करते, वह भी पेट भर नहीं। सप्ताह-पन्द्रह दिनमें एक बार मुझे सूप देते, लेकिन वह भी खाली अधगरम पानी होता। यदि मांस देते, तो छुरीसे सारे मांसको निकालकर सिर्फ हड्डियाँ देते, जो बिलकुल सूखी लकड़ीकी तरह सामने आतीं। यहाँका सूप भी स्वादिष्ट है और मांस-खंड भी बिना हड्डी-का है।

अनाथने फिर बात करनी शुरू किया—"सभी चीजें ठीक हैं। लेकिन यहाँ खाने-सोनेके सिवा कोई दूसरा काम नहीं। ऐसे काम कैसे चलेगा ? और नहीं तो पासमें एक बचा ही होता, कि मैं कभी-कभी

उसके साथ खेलता या बातचीत करता।" थोड़ी देर कुर्सीपर बैठ, अनाथ अपनी चारपाईपर लम्बा पड़ रहा।

× × × ×

अनाथ पेट भर खाकर निधड़क सोया हुआ था। इसी समय पहरेदार "आ, मेरे साथ" कहकर उसे फिर उसी घरमें ले गया, जहाँ उससे पूछताछकी गयी थी।

उस घरमें आज उस दिनके प्रश्नकर्त्ताके अतिरिक्त और भी दो आदमी थे। आज भी उससे प्रश्नोत्तर हुए और सबको कागजपर लिखा गया।

प्रश्नोत्तरके बाद प्रश्नकर्त्ताने पहरेदारसे कहा—"इसे बाहर ले जाकर रख, मैं फिर बुलाऊँगा।" पहरेदारने अनाथको बाहर ले जाकर एक बेंचपर बैठाया और खुद भी वहीं बैठ गया। बहुत देर नहीं हुई, कि भीतरसे बुलानेकी आवाज आयी। अफसरने भीतर आनेके बाद अनाथसे कहा—तू अपने घर जायेगा?

—मेरा घर नहीं है—अनाथने कहा।

—शायद तेरे भाई-बंधु हों, उनके घर जा।

—मेरे भाई-बंधु भी नहीं हैं।

—ऐसा ही सही। लेकिन हम यहाँसे छोड़ दें, तो तू कहाँ जायेगा?

—मैं यहाँसे कहीं नहीं जाऊँगा, मैं यहीं रहकर पढ़ूँगा, सिर्फ जिस कोठरीमें मैं सोता हूँ, उसके द्वारको खुला रखना चाहिये।

वहाँ बैठे आदमी एक दूसरेको देखकर हंस पड़े। फिर प्रश्नकर्त्ताने कहा—यहाँ पढ़ाई नहीं होती।

—क्यों! कहते थे कि बालशालामें पढ़ाई होती है—अनाथने पूछा।

—यह बालशाला नहीं है—कहकर प्रश्नकर्त्ताने फिर पूछा—यदि बालशाला भेजें, तो तू जायेगा?

—जाऊँगा—अनाथने हर्ष, विस्मय और लज्जाके साथ कहा।

वहाँ बैठे आदमी हंसते हुए आपसमें रूसीमें बात करने लगे। एकने उनमेंसे कहा—इस लड़केकी उमर अधिक मालूम होती है, शायद सोलह सालकी हो। इस उमरमें बच्चे बालशालासे बाहर आते हैं, हम कैसे इसे बालशालाके भीतर भेजेंगे ?

—कद लम्बा है, तो भी इसके कहनेके अनुसार उमर चौदह सालकी है। फिर इस बच्चेके घर-द्वार भाई-बंद नहीं हैं। इसे पढ़ाना भी ज़रूरी है और बालशाला छोड़ कोई ऐसी जगह हमारे पास नहीं है, जहाँ खाना-पहिनना, रहना-पढ़ना सब हो सके। इसलिये बहुत विधि-विधान न करके इसे बालशाला भेजना अच्छा है—प्रश्नकर्त्ता-ने कहा।

दूसरे भी सहमत हुए और प्रश्नकर्त्ताने अनाथसे कहा—तू बाहर बैठ, हम अभी पत्र लिखकर तुझे बालशाला भेजते हैं।

अनाथ बाहर बरामदेमें आकर बैठा। कुछ ही मिनटों बाद पहरेदार एक कन्वेर्त (लिफाफा) हाथमें लिये आया और उसे बालशाला-की ओर ले चला।

× × × ×

सिपाही अनाथको लिये बालशालाके एक कमरेमें गया और वहाँ बैठे व्यक्तिके हाथमें लिफाफा देकर अनाथको पास पड़ी गद्दीदार दीवानपर बैठा दिया।

व्यक्तिने लिफाफेको खोलकर पत्र पढ़ा, फिर शिरको ऊपर उठाकर "बहुत अच्छा" कह कलमसे पत्रके ऊपर कुछ लिखकर उसे अपने पीछेकी फाइलमें टाँग दिया।

दूसरे कमरेसे एक और आदमी आया, जो बालशालाका अध्यक्ष था। उसने एक पत्र लिखकर सिपाहीके हाथमें देते हुए कहा—इसे उन्हें दे देना।

उस आदमीने पत्रको पढ़कर अनाथकी ओर निगाह करके अपने मुखियासे पूछा—यही बचा है ?

--वही है—मुखियाने कागजपरसे मुँह हटाये बिना कहा।

उस व्यक्तिने अनाथ और सिपाहीकी ओर देखकर कहा--"हमारे साथ आओ"--और उनको अपने पीछे-पीछे ले गया। दूसरे कमरेमें एक मेजके पास बैठकर अनाथको भी बैठनेके लिये इशारा किया।

यह आदमी बालशालाका सेक्रेटरी था। उसने एक रजिस्टर निकालकर सरदारके दिये हुये पत्रकी कुछ पंक्तियाँ लिखीं, फिर एक सफेद कागज निकालकर उसके कोनेपर मोहर दे उसपर भी कुछ पंक्तियाँ लिखीं। फिर वह घरसे बाहर गया और एक मध्यवयस्का स्त्रीको अपने साथ ला उसके हाथमें पत्र दे अनाथ और सिपाहीकी ओर निगाह करके कहा :

--इन्हें ले जाइये, बच्चेको बालशालाकी पोशाक पहनाइये और इसके पहने कपड़ोंको सिपाहीको दे दीजिये और इस पत्रको भी इन्हींके हाथमें दे दीजिये।

श्वेत-वसना स्त्री अनाथ और सिपाहीको अपने साथ लिये एक कमरेमें गयी। यह कमरा बहुत बड़ा था और इसकी एक तरफ कपड़ा टांगनेकी आलमारियाँ थीं। स्त्रीने एक आलमारी खोली। वहाँ भिन्न-भिन्न आकारके पहननेके कपड़े थे। स्त्रीने एक आकारके कपड़ेको निकालकर देखा, तो वह छोटा दिखलाई पड़ा। स्त्रीने उस कपड़ेको रखकर दूसरे कपड़ोंको भी मिलाकर देखा और फिर बोली :

--इस समय इससे बढ़कर और कोई पोशाक नहीं है। चाहे बड़ा हो या छोटा, इसे ही इस वक्त पहनाना है, फिर आकारके अनुरूप दूसरी पोशाक मँगवायेंगे--और सिपाहीकी तरफ निगाह करके कहा--तुम थोड़ी देर ठहरो, मैं इन सरकारी कपड़ोंको बच्चेके शरीरसे उतरवाकर तुम्हें देती हूँ--और वह कपड़े तथा अनाथको लेकर एक कोठरीमें चली गयी।

सिपाहीको बहुत देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। स्त्रीने अनाथके पहने कपड़ेको पुराने समाचारपत्र में लपेटकर सिपाहीके हाथमें देते हुए उस पत्रको भी दे दिया।

स्त्री फिर उसी कमरेमें आयी, जहाँ अनाथ था और उसे साथ लेकर बाहर निकल आयी। सिपाही चला गया था, लेकिन यदि वह होता, तो विश्वास न करता कि यह वही बच्चा है, जिसे वह साथ लाया था। गरम पानी और साबुनसे उसे नहलाया गया था। बालोंमें कंघीकी गयी थी। हाथ पैरके नाखून काट दिये गये थे। अनाथ कमीज सफेद, पतलून सफेद, टोपी सफेद, बूट सफ़ेद और मोजा भी सफेद पहने था। स्त्रीने अनाथसे कहा :

--जा बड़े दर्पणके सामने देख, तू अपनेको पहचानता है ?

--मैंने इससे पहले अपनेको शीशेमें नहीं देखा, फिर आज कैसे पहचानूंगा कि मैं दूसरा हो गया—अनाथने दर्पणके सामने खड़े होकर अपनेको देखते हुए कहा—यदि मैंने पहले अपनेको देखा होता, तो इस पोशाकमें अवश्य अपनेको नहीं पहिचानता।

× × ×

जिस समय अनाथ दर्पणके सामने खड़ा था, उसी समय खुली खिड़कीके बाहर आकर एक लड़का खड़ा हुआ। वह बड़े ध्यानसे अनाथके प्रतिबिम्बकी ओर देख रहा था। यह लड़का अनाथसे अधिक लम्बा और मजबूत था। उसकी शकल-सूरत अनाथ-जैसी ही थी, अर्थात् उसकी आँखें अनाथकी आँखों-जैसी काली, चेहरा उसीकी तरह आरक्त श्वेत, बाल उसीकी तरह श्वेत और हाथ भी वैसे ही स्वच्छ थे।

लड़का कुछ देर अनाथके प्रतिबिम्बको देखकर दरवाजेके सामने गया और उसने:"मौसी! भीतर आ सकता हूँ ?" कहते भीतर आनेकी आज्ञा मांगी।

महिलाने लड़केकी तरफ देखते हुए कहा—आ सकते हो, कृपया।

लड़का कमरेके भीतर आया। अनाथ पैरकी आहट सुनकर दर्पण-से मुँह फेरकर उसकी तरफ देखने लगा। आगंतुक लड़केने थोड़ी देर अनाथकी ओर देखकर खड़े होकर पूछा :

—क्षमा करना साथी ! क्या तू चचा मुरादका पुत्र अनाथ तो नहीं है ?

अनाथ एकाएक अपने और अपने बापके नामसे परिचित व्यक्तिके मुँहसे प्रश्न सुनकर आश्चर्यमें आ गया, इतना आश्चर्यमें आ गया कि जवाब देना ही भूल गया और प्रश्नकर्ताकी ओर विस्मित नयनसे कुछ देर देखता रहा। फिर "एय् तू मेरा कुर्बान भाई! क्यों, तू मेरा अकाजान (बड़ा भैया) क्यों" कहते उसकी ओर दौड़ा। दोनों नवतरुण एक-दूसरेसे आलिंगन-चुम्बन और मिलनके बाद कुशल-मङ्गल पूछने लगे। सबसे पहले कुर्बानने कहा :

—कोई बात कर, कहाँ रहा, तेरी माँ तो स्वस्थ-प्रसन्न है ? यहाँ क्या काम कर रहा है ?

—मेरे शिरपर क्या बीती, इसे मत पूछ। उसे कहनेके लिये रातोंकी जरूरत है, या दिनोंकी सूर्यास्त होनेतक। जिस वक्त मैंने माँको छोड़ा, वह ठीक थी, जिन्दा थी लेकिन जिन्दा होते भी कब्रके अन्दर थी। मैं इसी बालशालामें आकर ठहरा हूँ—अनाथने जवाब देकर फिर पूछा--अपनी बात बतला, तेरा क्या हाल है ? माँ-बाप सलामत तो हैं ? किशलक़ (गाँव) का क्या हाल है ? तू यहाँ क्या काम करता फिर रहा है ?

--मेरे शिरपर बड़ी-बड़ी बलायें आयी हैं। बासमचियोंने माँ-बापको मार डाला, गाँवको भी जला डाला। उन घटनाओंके बारेमें क्या कहूँ

अवश्य रात चाहूँ तुझसे दिलकी कहूँ।
मैं रोऊँ और तू हँसे अकेला तू और अकेला मैं होऊँ।

फिर कुर्बानने आगे कहा--मैं इसी बालशालामें परवरिश पा लिख-पढ़कर कमसोमोल (तरुणसभाई) बना हूँ। यह बालशाला

सीमान्तपाल कमसोमोलों के आधीन है। मैं यहाँ उसीकी ओरसे कुछ कामोंकी जाँचके लिये यहाँ आया हूँ—फिर कुर्बानने अपने हाथको अनाथकी ओर बढ़ाते उसके हाथको मजबूतीसे पकड़े हुए कहा—खैर, अभी तू सलामतसे रह, यहाँ खातिरजमा होकर रह। मैं अभी कमसोमोल-संस्थाके कामसे जा रहा हूँ, फिर खूब देरतक बैठकर आपबीती और अपने दिलके दर्दको कहें-सुनेंगे।

कुर्बान चला गया। अनाथ सोचने लगा—वह कैसा स्थान है, कमसोमोल लोग कैसे होते हैं, कि कुर्बान उनमें शामिल हुआ है, और इस स्वतंत्र और बड़ी बालशालाकी कैसे वह देखभाल करते हैं?

२

कुर्बानके पिता रूज़ीमुरादका क्या हुआ? रूज़ीमुराद बुखाराकी ओर मजदूरी करता था। जब भी पाँच-छ तंका बचा पाता, गाँवमें आ अपने बीबी-बच्चोंको देकर उनके खाने-पीनेका इन्तिजाम करता और फिर कामपर चला जाता।

वह इसी तरह एक बार बुखारासे अपने गाँव आ रहा था, कि उसे पानीसे बहके आये मुरादका मुर्दा देखनेको मिला। उसने मुर्देको पहचान लिया और यह भी जान लिया, कि मुराद नदीमें गिरकर नहीं मरा, बल्कि गोली मारकर उसे पानीमें डाल दिया गया; क्योंकि वहाँ बगलमेंसे गोलीके निकल जानेका छेद मौजूद था। इस खबरको वह अपने गाँवमें ले गया और बहुत पूछताछके बाद उसे निश्चय होगया, कि मुरादको एशानकुल बायकी आज्ञासे शाकुलने मारकर नदीमें फेंक दिया। लेकिन उस समय वह अपराधियोंके विरुद्ध कुछ नहीं कर सका, क्योंकि अमीरकी सरकार और उसके अमलदार बायोंकी हिमायत करते थे और गरीबोंके उनके विरुद्ध कुछ भी कहनेपर जमीन-आसमान एक कर देते थे। लेकिन जब अमीर भाग गया और बाय भी भागनेके

लिये तैयार हुए, उस समय उसने गाँवके गरीबोंमें उनके विरुद्ध भाषण दिया और अपराधियोंका नाम साफ खोलकर कह दिया।

जब बुखारा और तिर्मिज़के बीच रेलकी सड़क बन रही थी, उस समय रुज़ीमुराद सड़क बनानेवाले मजदूरोंमें काम करता था। जब रेल तैयार हो गयी और ट्रेन चलने लगी, तो तिर्मिज़के डिपोमें वह शारीरिक श्रमका काम करता था। कुछ समय इसी तरह काम करता रहा, फिर डिपोके मिस्त्री-लोहारका अन्तेवासी बना और अंतमें स्वयं मिस्त्री बन गया।

फरवरी और अक्तूबर (१९१७) की क्रान्तियोंमें रुज़ीमुराद तिर्मिज़के रेलवे-मजदूरों और उनके साथियोंके साथ होगया। वहाँ उसे राजनीतिक शिक्षा मिली, वर्गचेतना जगी और वह आगे बढ़ा। इसी समय उसने एशानकुल बाय और शाकुल द्वारा मुरादकी हत्याको वर्गस्वार्थके कारण समझा, और हत्याके असली अभिप्रायको गरीबोंको समझाते कहा कि क्यों वे बायोंके आधीन हैं, उनके हुकुमको बजाते हैं और बाय जो कुछ माँगते है, यहाँ तक कि स्त्रीतकको, तो उससे भी इन्कार नहीं कर सकते। यदि बायोंकी बात नहीं स्वीकार करते, तो वह दुनियामें जी नहीं सकते और उनकी दुर्दशा वही होती है, जो मुरादकी हुई।

जिस समय रूज़ीमुराद तिर्मिज़के डिपोमें काम कर रहा था, उसी समय बुखारामें कोलिसोफ-कांड हुआ। इस घटनामें जदीदों (नवीनतावादियों) ने दुःसाहस, विश्वासघात और झूठसे काम लिया। एक तरफ हम "क्रान्तिकारी हैं" कहते जनान्दोलनका नेतृत्व अपने हाथमें ले लिया और दूसरी ओर अमीरसे समझौता और मेल-जोलकी बात चलाकर जनक्रान्तिके रास्तेको रोक दिया। अमीरने इस सुलह-समझौतेकी बातसे लाभ उठा अपनी ताकतको बढ़ाया, अपने विरोधी मेहनतकशोंका नाश किया और उन मेहनतकशोंको भी घर-घरसे अकेले-अकेले पकड़ लिया, जो अभी संगठित नहीं हो पाये थे, क्योंकि वह

अमीर और शोषकोंके प्रति शत्रुताका भाव रखते थे। जब बुखाराकी जनताकी सहायताके लिये महान् रूसी जाति और उसकी लालसेना आनेको हुई, तो अमीरने क्रान्तिका विरोध करते अपने राज्यके भीतर-की सभी रेलवेलाइनोंको बर्बाद करा दिया और बड़ी बर्बरतासे रेलवे मजूरों और उनके बीबी-बच्चोंको मरवाया। इसी समय बुखारा-तिर्मिज़-के रेलवे मजदूरों और उनके बीबी-बच्चोंके खूनसे अमीरके आदमियोंने हाथ रंगे।

इस खूनीकांडसे जीवित बचे रेलवे मजूरोंमें रूज़ीमुराद भी था। उसने रूसी मजूरों और बोलशेविक पार्टीसे सम्बन्ध जोड़कर बुखारा-के इलाकेमें मेहनतकश जनताको अमीरके विरुद्ध भड़काया और आंदोलनका काम किया। बुखारा-क्रान्तिमें उसने हथियार लेकर भाग लिया। पूर्वी-बुखारा (आधुनिक ताजिकिस्तान) में लाल-गोरिल्लोंमें होकर लालसेनाके साथ अमीर और उसके आदमियोंके विरुद्ध लड़ता रहा। जब अमीर भाग गया, तो बायों और मुल्लोंके बहकावेसे लोगोंको सजग करते गाँव-गाँव घूमता रहा। इस कामके खतम हो जानेपर वह अपने गाँवमें गया, जोकि अफगानिस्तानकी सीमाके पास था और वहाँ भी मेहनतकशोंमें बायोंके प्रभावको हटानेका काम किया।

रूज़ीमुरादने मेहनतकशोंको सिर्फ बायोंके प्रभावसे मुक्त करने-का ही काम नहीं किया, बल्कि वह गाँवसे भाग गये बायोंकी धरती-पानी और खेतीके सामानको गरीबोंमें बांटकर गाँवको आबाद करनेके लिये काम करने लगा। लेकिन वह इस कामको अधिक समयतक नहीं कर सका। जल्दी ही अमीर,उसके अमलदार, बाय और जदीदोंने बास-मचीगरी (जहादी डकैती) का संगठन किया और बोलशेविकोंके विरुद्ध, गरीबोंके विरुद्ध, सारे मेहनतकशोंके विरुद्ध हो स्वयं स्वामी बन गाँवको आबाद करनेके लिये कोशिश करनेवालोंके विरुद्ध खून बहाने लगे। एशानकुल बाय और शाकुल भी अफगानिस्तानमें रहते, वहाँसे हथियार जमाकर बासमचियोंको देते और सबसे पहले उन्होंने

बासमचियोंको अपने गाँवपर—जहाँ कि रूज़ीमुरादके नेतृत्वमें गाँवके गरीब काम कर रहे थे—भेजा। लेकिन रूजीमुराद हाथ बाँधकर चुपचाप बैठा नहीं रहा। उसने रायन् (तहसील) की पार्टी और रेव्-कम् (रेवोल्युश्नरी कमीटी—क्रान्तिसमिति) से सम्बन्ध जोड़ हथियार ले गाँवके गरीब किसानों और मजूरोंका एक दल बनाया।

३

१९२१ का दिसम्बर था, सर्दी बहुत ज्यादा न थी; लेकिन तो भी बर्फके बड़े-बड़े दाने बरस रहे थे। बर्फ जमीनपर पड़कर पिघल जाती, जिससे भीगी जमीनपर कीचड़ आमूके किनारेकी गीली मिट्टीकी तरह चिपकाऊ थी। गाँव शान्त और नीरव था। इस नीरवताको यदि कोई भंग कर रहा था, तो गाँवके स्वयंरक्षकदलके कीचड़में शल्प्-शल्प् करती पैरोंकी आवाज थी। दल कीचड़ और हिमवर्षाकी कोई परवाह न कर दीपकपर पतिंगेकी तरह गाँवकी चारों ओर चक्कर काट रहा था, जिसमें बासमचियोंके आकस्मिक आक्रमणका मुकाबिला किया जा सके।

आधी रात बीत गयी थी, बर्फ और कीचड़के बीच चक्कर काटते दलके आदमियोंको सर्दी लगने लगी। इसलिये दलपति रूज़ीमुरादने गाँवकी चारों ओर जगह-जगह रक्षियोंको बैठाकर दूसरोंको गर्माने-सुस्तानेकी छुट्टी दे दी और स्वयं भी अपने घरमें आ आगके सामने बैठ पैरोंको गर्माने और कपड़ोंको सुखाने लगा। इसके बाद वह लेट गया।

दूरसे बंदूककी आवाज आयी, जिसने रूजीमुरादको जगा दिया। कपड़ेको उतारा नहीं था, इसलिये वह जागनेके साथ बंदूकको हाथमें ले घरसे बाहर हो बिजलीकी तरह दौड़ पड़ा।

चौरस्तेपर गया। गाँवके बाहर नियुक्त पहरेदारोंमेंसे एक घोड़ा दौड़ाते रूजीमुरादके पास आकर बोला—हम अपने नियत स्थानमें

पहरेदारी कर रहे थे। इसी समय वासमचियोंने एकाएक आक्रमण कर बंदूक चलाना शुरू किया। मेरा साथी पहली ही गोलीसे गिर पड़ा और मैं खबर देनेके लिये यहाँ दौड़ पड़ा।

इस समयतक गाँवके चारों ओरसे बंदूककी आवाज़ें सुनाई देने लगीं। स्वयंरक्षकोंको एक-एक करके आवाज देनेकी जरूरत न पड़ी। सभी बंदूककी पहली आवाज सुनते ही जाग उठे और पहरेदार अपनी वातको रूजीमुरादसे पूरी कह नहीं पाया था, कि सब वहाँ जमा होकर रूजीमुरादकी आज्ञाकी प्रतीक्षामें खड़े हो गये। रूजीमुरादने उन्हें कुछ टुकड़ियोंमें बाँट हर एक टुकड़ीपर एक वहादुर जवानको नेता वना गाँवकी एक-एक तरफ भेजा और स्वयं भी एक टुकड़ी ले उस तरफ गया, जिधर बासमचियोंने पहरेदारको मारा था।

रूजीमुराद अभी गाँवसे वाहर नहीं हुआ था, कि बासमची दिखाई पड़े। वह गाँवको घेर किनारेवाले घरोंपर आक्रमण कर रहे थे और "अपने छिपाये मालोंको लाकर दे" कहकर किसानोंको कमची, बंदूकके कुन्दे या तलवारकी पीठसे मार रहे थे। रूजीमुरादने शेरकी तरह गरजते हुए उनपर आक्रमण किया और पंद्रह मिनटके अन्दर उन्हें भागनेके लिये मजबूर कर दिया। मैदानमें उनके दो आदमी और एक घोड़ा मरे पड़े थे; लेकिन कितने घायल हुए, यह नहीं मालूम हुआ। रूजीमुरादकी टुकड़ीमें सिर्फ दोको हलका घाव लगा था।

रूजीमुरादने अपने सवारोंको गाँवकी दूसरी ओर खबर लेनेके लिये भेजा और स्वयं पियादा अपने पियादा-साथियोंके साथ भागते बासमचियोंका पीछा किया। बासमची घोड़ेपर सवार थे। पियादा भला उन्हें कैसे पा सकते थे और थोड़ी देरमें वे आँखसे ओझल हो गये।

रूजीमुरादने एक ऊँची-सी जगहके ऊपर जाकर मोर्चा जमाया और गाँवकी चारों ओरकी खबर आनेकी प्रतीक्षामें ठहरा।

अब हिम-वर्षा बंद हो गयी थी, आकाश खुल गया था, अभ्र चले गये थे, सितारे गैसकी बत्तियोंकी तरह चमक रहे थे, लेकिन सर्दी

बहुत अधिक न होनेपर भी काफी थी, विशेषकर ठंढी हवाका झोंका बर्फके टुकड़ोंकी तरह मुँहपर लगकर फड़फड़ाहट पैदा कर रहा था। तो भी सर्दी इतनी नहीं थी, कि कीचड़ जमकर बर्फ बन जाती। हाँ, पतले कपड़ेवालोंका शरीर अवश्य काँप रहा था।

बहुत समय नहीं बीता, कि गाँवकी चारों ओरकी खबर लानेके लिये भेजे स्वयंरक्षक आने लगे और उनके कथनानुसार सब जगह शांति थी। बासमचियोंका कहीं पता नहीं था। उन्होंने और किसी जगहके आदमीपर आक्रमण नहीं किया। खबर देनेवालोंने यह भी कहा :

—जान पड़ता है बासमचियोंने हमें धोखा देनेके लिये, हमारी शक्तिको बिखेर देनेके लिये गाँवकी चारों ओरसे हमला किया, नहीं तो उनका सारा बल इसी ओर लगा था।

सवार दूर-दूरतक गये, लेकिन उन्होंने एक भी बासमचीको नहीं देखा।

रूजीमुरादने इस खबरको सुनकर कुछ संतोष प्राप्त किया, लेकिन तो भी वह निश्चिन्त नहीं हुआ, बल्कि अवसरसे फायदा उठा आगेके आक्रमणका अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिये तैयारी शुरू कर दी। उसने गाँवकी चारों ओरके रक्षियोंके पास आज्ञा भेजी, कि महत्वपूर्ण स्थानोंपर डीठा रख स्वयं गाँवके केन्द्रमें जमा हो जायें। रूजीमुराद अपने स्थानपर भी देखभाल रखनेके लिये आदमीको रख अपने आदमियोंके साथ गाँवकी ओर लौट गया।

× × ×

रूजीमुरादने गाँवकी मस्जिदके सामने बूढ़े-जवान, हथियारबन्द एवं निहत्थे—सभी गाँववासियोंको जमा किया, फिर उनके सामने बोलते हुए कहा:

—दुश्मन अभी जिन्दा है, संख्या और शक्तिमें भी बड़ा है। उसके एक बार हारकर भागनेसे निश्चिन्त होना धोखा और बच्चोंका

काम है। इसलिये जो भी हथियार उठा सकते हैं, उन्हें सैनिक शिक्षा लेनी चाहिये।

—सबके लिये हथियार कहाँ हैं, कि सैनिक-शिक्षाका अभ्यास करें —बीचमें टोककर एक आदमीने कहा।

—ठहर जा, मैं स्वयं बतला रहा हूँ, कि हम कैसे शिक्षा ले सकते हैं—रूजीमुरादने कहा—जिन साथियोंके पास बंदूक है और जिन्होंने बंदूक चलाना अच्छी तरह सीख लिया है, वे अपनी बंदूकें उनके हाथमें दे दें, जिन्होंने अभी बंदूक चलाना सीखा नहीं है और वे खुद फावड़ा और बेलचा लेकर गाँवकी चारों ओर मोर्चाबंदी-के लिये खंदक खोदें। इसी बीच हम रायन्में आदमी भेजकर हथियार मँगाते हैं और सबको हथियारबंद करते हैं।

रूजीमुरादके बाद एरगश बेदांतने उसका समर्थन किया और उसके बाद एक और आदमीने भी कहा। अन्तमें ग्रामवासियोंके करतलध्वनि-के साथ रूजीमुरादकी बात स्वीकार की गयी। इस निश्चयके अनुसार जिन्होंने इस लड़ाईमें भाग लिया था, वे खंदक खोदनेमें लग गये और दूसरे बंदूक चलाना सीखने लगे।

१२ घंटोंमें काफी काम हुआ। कितनी ही खंदकें खोदी गयीं। उनके सामने मिट्टीका ढेर खड़ा हो गया।

अब बंदूक-न-छुए लोगोंके हाथ भी बंदूककी आवाजसे नहीं कांपते और कितने ही निशान लगा लेते।

रूजी इस कामसे बहुत खुश हुआ, उसने लोगोंको खाना खाने आराम करनेके लिये दो घंटेकी छुट्टी दे दी और स्वयं भी खाना खाने चला गया।

× × ×

रूजीमुराद अभी खाना पूरा खा नहीं चुका था, कि एक पियादेने उसके पास आकर गुप्त खबर दी। मालूम हुआ कि इस गाँवसे २० मील दूर एक दूसरे गाँवमें बासमची छिपकर कूच करनेवाले हैं

वे उस गाँवके अकसक्कालके घरमें गुप्त सभायें करते हैं—अकसक्काल जो कि मुँहपर पर्दा डालकर अपनेको सोवियत सरकारका शुभचिंतक बतलाता था। बासमचियोंने अपने आदमियोंको हथियारबंद करके सीधे कूच करनेका निश्चय किया है।

—बासमचियोंने हथियार कहाँसे पाये—रूज़ीमुरादने पूछा।

पियादाके उत्तरके अनुसार बासमचियोंको सबसे अच्छे हथियार पड़ोसी देश (अफग़ानिस्तान) से मिले हैं। जो हथियार उनके पास भेजे गये, उनमेंसे कुछ सीमान्तपालोंके हाथमें भी पड़े, लेकिन तब भी भगोड़ोंके भेजे बहुत-से हथियार उन्हें मिले हैं। इधर उन्होंने अपने आदमियोंको अपने यहाँसे हथियारबंद होनेके लिये बहुत कोशिश की और कहते हैं—"चाहे हमें किसी चीजसे हाथ हटाना हो, लेकिन हथियार जमा करने से हाथ नहीं हटाना है।"

पियादाने बतलाया कि उस गाँवके गरीबोंने बासमचियोंकी तैयारीकी खबर पाकर पासके गाँवमें खबर भेजी और इस तरह वह उसके गाँवमें पहुँची, जहाँसे आदमीने आकर रूज़ीमुरादको खबर दी।

रूज़ीमुरादने इस खबरको सुनकर एक ओर तैयारी करनेमें शीघ्रता कर दी और दूसरी तरफ रायन् (तहसील) की रेव्-कम्के पास हथियार लानेके लिये आदमी भेजा।

दूसरे दिनके कामके बाद गाँवकी चारों ओर खंदक और मोर्चाबंदी तैयार हो गयी। खंदक बनानेमें पुराने गड्ढोंने भी काम दिया। एक लम्बा चौड़ा गड्ढा था, जो ऊँची जमीन और सरकंडोंसे चारों ओर घिरे जलपूर्ण कूलकी तरह-का था और गाँवको प्रायः चारों ओरसे घेरे हुए था। इस गड्ढेको थोड़ी मेहनत से खोदकर पानी भर दिया गया।

बंदूकका अभ्यास भी इच्छानुकूल हुआ। गाँवके जितने लोग बंदूक उठा सकते थे, सबने बारी-बारीसे बंदूक चलाना, निशाना लगाना सीख लिया। गाँवके लोगोंके अपनी रक्षा करनेमें यदि कोई कमी थी, वो सिर्फ बंदूक और गोलियोंकी, जिसकी रायन्से आनेकी आशा थी।

लेकिन रायन्से निराशाजनक खबर आयी और वहाँ भेजे हुए आदमी खाली हाथ लौट आये। उन्हें रेव्-कम् (क्रान्ति-समिति) के अध्यक्षने बतलाया :

—गाँवपर बासमचियोंके एकाएक आक्रमणकी खबर निर्मूल और झूठी है। इस तरहकी खबरोंको स्वयं बासमची फैला रहे हैं। उनके ऐसा करने का उद्देश्य यह है, कि गाँववाले डरकर रायन्से बंदूक माँगें, रायन्की बंदूकें गावोंमें बिखर जाँय और रायन् बेहथियार या कम-हथियारका हो जाय, जिसमें वे आसानीसे रायन्पर अधिकार कर सकें—अध्यक्षने और भी कहा—जब रायन् बासमचियोंके हाथमें चला जायगा, तो गाँव स्वयं उनके आधीन हो जायेंगे। इसलिये रायन्के हथियारोंको गाँवोंमें बिखेरना ठीक नहीं है। यदि किसी गाँवपर सचमुच आक्रमण होनेकी संभावना हो, तो रेव्-कम्को खबर दें, वह सिर्फ हथियारसे ही मदद नहीं देगी, बल्कि हथियारबंद दलको भी भेजनेके लिये तैयार है।

रूज़ीमुराद रेव्-कम्के अध्यक्षके उत्तरको सुनकर संदेहमें अवश्य पड़ा, लेकिन निराश नहीं हुआ; बल्कि गाँवके गरीबोंकी शक्तिपर भरोसा करके रक्षाकी तैयारी और जोरसे करने लगा।

४

मोर्चाबंदी तैयार थी। हथियारबंद जवान खाईयोंमें बैठे थे। नये-नये बंदूकची अपने हाथोंमें कुदाल-बेलचा-फरसा आदि किसानोंके हथियारोंको लिये सुरक्षित दलके तौरपर बैठे थे। रूजीमुरादने घोड़ेपर चढ़ खाइयों और उनमें बैठे जवानोंको घूमकर देखा और फिर ऊँची जगहपर अवस्थित केन्द्रीय मोर्चेपर जाकर बैठा।

वह रात शान्तिसे बीत गयी। वहाँ नीरवताको भंग करनेके लिये जब-तब घोड़ोंके खुरोंकी ध्वनि "और जागो, होशियार रहो" की आवाज सुनाई देती थी।

लेकिन सूर्योदयसे दो घंटे पूर्व गाँवके छोरोंसे जगह-जगह एक्का-

दुक्का दगती बदूकोंकी आवाज सुनाई देने लगी। इसके बाद दूतोंने आकर रूज़ीमुरादको खबर दी, कि गाँवसे दूर बासमचियोंकी कालिमा दिखाई पड़ रही है और वह एक्का-दुक्का बंदूक भी चला रहे हैं। अब रूज़ीमुरादके सामने भी दूर बासमची दिखलाई पड़े, वह धीरे-धीरे उसके मोर्चेकी ओर आ रहे थे।

रूज़ीमुरादने अपने आदमियोंको बंदूक साधकर दागनेके लिये तैयार रहनेका हुकुम दिया। जब बासमची उचासके पास आकर गाँवकी ओर घूमना चाहे, तो उसने बंदूक चलानेकी आज्ञा दी।

स्वयंरक्षकोंमेंसे अगली पाँतिवालोंने एक बार ही बंदूकें सलामी देने-की तरह दाग दीं, एक बासमची घोड़ेपरसे गिरा, उसका घोड़ा गाँवकी ओर भगा और दूसरे घोड़ोंको मोड़ पीछेकी ओर भगे।

उचासके किनारे बैठे स्वयंरक्षकोंने रूज़ीमुरादकी आज्ञासे भागते बासमचियोंपर गोली चलायी, लेकिन बासमची गोलीकी दौरसे दूर हो गये थे। इसके बाद रूज़ीमुरादने गोली छोड़ना बंद करा दिया।

सूर्योदयके बाद बासमचियोंके एक बड़े दलने भिंडेके नजदीक आ गोली चलाना शुरू कर दिया। स्वयंरक्षकोंने भी जवाब देना शुरू किया, लेकिन गोलियाँ एक-दूसरेके पास नहीं पहुँचती थीं।

कारतूस कम हो रहे थे और गोली चलाते रहनेसे डर था, कि कहीं सारे कारतूस खतम न हो जायें, इसलिये स्वयंरक्षकोंको रूज़ी-मुरादने बासमचियोंके नजदीक आनेतक गोली न चलानेका हुकुम दिया। साथही उसने गाँवके ऊपर आक्रमण होनेकी खबर देकर हथि-यारबंद आदमियोंको लानेके लिये एक विश्वस्त और होशियार आदमी-के तौरपर एरगश् वेदांतको भेजा।

सूर्योदयके बाद बासमचियोंने कई बार आक्रमण किया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। जब भी वह नजदीक पहुँचते, मैदानमें दो-तीन मुर्दे छोड़कर भागनेके लिये मजबूर होना पड़ता।

लेकिन धीरे-धीरे रूज़ीमुरादके पास कारतूस बहुत कम रह गये।

जिसका अनुमान बासमचियोंको भी होने लगा। उन्होंने कारतूसोंको और भी जल्दी खर्च करानेके लिये लगातार एकके बाद एक चढ़ाई की और गाँवके दूसरे भागोंपर भी आक्रमण किया, जिसमें वहाँके रक्षी भी अपने कारतूस खर्च करें। बहुत देर नहीं हुई, कि वहाँसे भी कारतूस मांगनेके लिये आदमी रूज़ीमुरादके पास आने लगे। रूज़ीमुराद रायन्से कारतूस आनेकी बात कहकरके विश्वास दिलाता रहा। कुछ समय बाद गाँवके उस तरफके स्वयंरक्षक, जिनके कारतूस खतम हो गये थे—एकके पीछे एक आकर—रूज़ीमुरादके सामने जमा हुए।

उचासपर लड़नेवाले हाथ बहुत थे, लेकिन कारतूस नहीं थे, कि इन हाथोंसे फायदा उठाया जा सके।

बासमचियोंने बे-कारतूसवाली जमातको चारों ओरसे घेर लिया और बड़े जोरसे आक्रमण करना शुरू किया। स्वयंरक्षकोंकी गोलियाँ सुस्त पड़ने लगीं। बहुत-से मोर्चोंमें स्वयंरक्षकोंने बंदूकके कुन्दे, बेलचे और फरसोंसे दुश्मनोंको पीछे हटाया। रूज़ीमुरादने जल्दी कुमक आनेकी बात कहकर दांत और नाखूनसे भी लड़ते रहनेकी आज्ञा भेजी।

× × ×

आशा बेकार गयी, रायन्से कोई हथियार या हथियारबंद आदमी नहीं आया। एरगश् बेदांत सरकंडोंके बीचसे होता गड्ढेके पानीसे पार हो बड़ी निराशाजनक खबर लाया। एरगश्ने बतलाया कि रेव्-कम्के अध्यक्षने हथियारबंद आदमीके न होनेकी बात कहते जवाब दिया :

—बासमची रायन्पर भी आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं, इसलिये हथियारबंद आदमीकी बात तो अलग एक कारतूस भी गांव-में भेजना असंभव है।

जिस समय एरगश् अपनी माँगको फिर दोहरा रहा था, उसी समय अध्यक्षके नौकरने आकर कहा—केन्द्रसे बुखारा-जन-पंचायती-प्रजातंत्र-के वकील-मुख्तार (अध्यक्ष) का आदमी आया है, वह आपसे एकांत में बात करना चाहता है।

अध्यक्षने एरगश् बेदांतको बाहर बैठनेके लिये कहा और वकील-मुख्तारके आदमीको लानेके लिये कहा। आदमी आया और दो-तीन मिनट बात करके दोनों हवेलीके बाहर आये, वहाँ अध्यक्षने अपने आदमियोंसे "सब सवार हो जाओ और हमारे साथ चलो, यहाँ निहत्थे दो स्थानीय पियादा पहरेके लिये रहेंगे" कहते स्वयं भी घोड़ेपर सवार हो गया। एरगश्ने उसके पास जाकर पूछा—मैं क्या करूँ? मुझे क्या जवाब देते हो?

—तू यहीं ठहर, मैं एक घंटा बाद आ रहा हूँ, फिर तेरे कामके बारेमें बात करूँगा—कहते घोड़ा हाँकते वह रेव्-कम्-खानेसे बाहर चला गया। उसके पीछे उसके आदमी भी घोड़ोंपर सवार होकर रवाना हो गये। अध्यक्षके चले जानेके आध घंटे बाद पियादा, सवार निहत्थे और हथियारबंद बासमचियोंके एक भारी दलने आकर रेव्-कम् खानेको घेर लिया। बासमचियोंका क़ूरबाशी (सरदार) चबूतरेपर आया, और कालीन तथा गद्दा बिछवाकर उसपर अमीरके हाकिमोंकी तरह पालथी मारकर बैठ गया। उसके अनुचर चबूतरेके नीचेकी ओर उसी तरह हाथोंको छातीपर रखे खड़े हुए, जिस तरह अमीरके हाकिमोंके नौकर रहा करते थे।

—सभी चीजोंको जमा करो—कहकर क़ूरबाशीने अपने आदमियोंको हुकुम दिया।

बासमाची मानों अपनी छिपाई चीजोंको ही ला रहे थे, उन्होंने जाकर घास-फूस और लकड़ीको हटाकर उनके नीचेसे संदूकों, पेटारियों बँधे गट्ठरों और दूसरी चीजोंको एक-एक करके लाकर क़ूरबाशीके सामने रखा।

क़ूरबाशीने अपने खीसेसे कुंजियोंका गुच्छा निकालकर अपने आदमीको दे गोदामके दरवाजेको खोलनेके लिये कहा—हर एक चाभीको उसके तालेमें लगाना जिसमें ताले खराब न हों।

क़ूरबाशीने अपने सामनेके आदमियोंको संदूकें और दूसरे गट्ठरों-

को खोलनेके लिये कहा। उनके भीतरसे जो बंदूकें, तमंचे, कारतूस और तलवारें निकलीं, उन्हें देखते हुए उसने हाथके कागजपर नजर दौड़ायी।

एरगश् बेदांत चकित होकर देख रहा था। इसी समय .कूरबाशीकी नजर उसपर पड़ी और उसने उससे पूछा--तू कौन है? यहाँ क्या काम करता है?

एरगशने जवाब गढ़कर कहा--मैं रेव्-कमूके अध्यक्षका आदमी हूँ। वह मुझसे "बेगके आनेतक तू यहीं रखवाली करता रह" कहकर गये हैं।

--बहुत अच्छा--.कूरबाशीने कहा--अब बेग आ गये, अब यहाँ रेव्-कमूके अध्यक्षके आदमीकी पहरेदारीकी बिलकुल आवश्यकता नहीं है। अपने हाथकी बंदूक और कारतूसोंको इधर ला और खुद अपने स्वामीके पीछे सही-सलामत चला जा।

एरगश्ने बंदूक और कारतूसोंको सौंपकर घोड़ेके पास जा उसे खोलना चाहा। इसपर .कूरबाशीने कहा--घोड़ा हमें चाहिये, तू पियादा अपने अध्यक्षके पास चला जा।

× × ×

एरगश बेदांतने रेव्-कम्-खानेसे निकलकर रास्ता लिया। वह जल्दी-से-जल्दी गांव जाकर इस भयानक खबरको रूज़ीमुरादके पास पहुँचाना चाहता था, लेकिन बिना घोड़ा वह अपनी इच्छाको कार्यरूपमें परिणत नहीं कर सकता था; तो भी सारी ताकत लगाकर वह दौड़ने लगा और यदि शीघ्रगामी अश्वकी तरह नहीं, तो राह चलते साधारण घोड़ेकी गतिसे अवश्य चला। अभी वह आधा रास्ता भी नहीं तै कर पाया था, कि थक गया और एक चश्मेके किनारे बैठकर पानी पी आराम करने लगा। चश्मा बह रहा था और उसके नीचेकी ओर हरियाली थी। एरगश् वहाँ बैठे अपने पैरोंको मल रहा था, इसी

समय न जाने कहाँसे एक स्त्री आ गयी। स्त्री जवान थी। उसकी आँखें-भौंहें काली, केश लम्बे और मुँह बहुत सुन्दर था। उसके हाथमें एक कूजा (सुराही) था, जिससे मालूम पड़ता था, वह पानी लेने आयी है।

स्त्री चश्मेके नजदीक पहुँची, तो उसकी नजर एरगश् पर पड़ी। वह जरा देरी ठमक गयी और शिरपर बंधी रुमालको मुँहके ऊपर खींच उसके एक कोनेसे झाँककर एरगश्की ओर जल्दी-जल्दी देखने लगी। एरगश् स्त्रीकी लज्जाको देखकर अपनी आँखको उधरसे हटा अनजान बन अपने पैरोंको मलने लगा। स्त्री उसकी शिष्टताको देख हिम्मत करके चश्मेके पास आयी और कूजेको जमीनपर रखकर उसने एरगश्से पूछा--चचा! इधर आसपासमें किसी बासमचीको तो नहीं देखा?

--यहाँ नजदीक नहीं देखा, लेकिन रायन्को उन्होंने ले लिया।

—खुदा जल्दी इनको तबाह करे और इनके घरोंको जलायें। ये लोगोंके घरोंको जलाते हैं--कहकर स्त्रीने कूजेको ले चश्मेमें जाकर उसे भरा और फिर अँजुलिसे पानी भरकर पिया।

—तुम्हारे गांवमें बासमचियोंने क्या किया?--एरगश्ने पूछा।

स्त्रीने भरे कूजेको चश्मेसे बाहर करके किनारेपर रखा और स्वयं खड़ी होकर जवाब दिया--हमारे चल-धन और चारपायोंको लूटा, स्त्रियों-लड़कियोंको बेआबरू किया, विरोध करनेवाले दो आदमियों-को मार डाला और तीन आदमियोंको बंदी बनाकर कुरबाशीके पास ले गये। गांवके दूसरे मर्द पहाड़की ओर भाग गये हैं।

स्त्रीने बात रोककर कूजेको उठा अपने कंधेपर रखा और एक हाथसे कूजेके हंडलको पकड़कर फिर कहना शुरू किया--एक रात-दिन हो गया, बच्चोंने पानी नहीं पिया, उनके मुँहको सूखा देखकर हजार तरहका भय खाती पानी लेने आयी।

—लेकिन बहन ! क्या घरमें कोई मर्द नहीं है, कि ऐसे भयानक दिनमें पानी लेने आयी—एरगश्ने पूछा।

—मर्द है, लेकिन वह मुझे और बच्चोंको एक गुफामें छिपाकर स्वयं पहाड़की चोटीपर भाग गया। हमारे पास एक सिर भेड़ी और एक सिर बकरी थीं। उन्हें भी भगोड़े बासमचियोंके हाथसे बचानेके लिये अपने साथ ले गया—कहते स्त्री चश्मेके किनारेसे घाटकी ओर हो बड़े रास्तेपर चल पड़ी।

इसी समय दूर एक सवार दिखाई पड़ा। वह एक प्रौढ़वयस्क आदमी था। उसका पेट मोटा, कमरमें तलवार और पीठपर बंदूक थी। उसने अपने लिलारमें लत्ता बाँध रखा था, जोकि बासमचीपनका चिह्न था।

स्त्रीने सवारको देखकर कदम तेज किया, लेकिन सवारने घोड़े-को दो-तीन चाबुक लगा दौड़ाते हुए उसके पास पहुँचकर कहा—"ठहर !"

स्त्री पानी भरे कूजेको फेंककर झाड़ियोंकी ओर भगी। बासमची भी घोड़ेसे उतर उसे एक वृक्षकी डालसे बाँधकर स्त्रीके पीछे दौड़ा।

स्त्री जंगलके भीतर हवाकी तरह भागी जा रही थी, सवारके हाथ-मुँह छिल गये, पैर थक गये, वस्त्र फट गये, तो भी वह दौड़ता ही गया, लेकिन वृक्षों और झाड़ियोंके बीचसे वह बहुत दूर जा नहीं सका।

बासमचीने देखा, कि स्त्रीके पास नहीं पहुँच सकता और वह बंदूकी मारसे दूर निकली जा रही है। उसने बंदूकका निशाना लेकर हुकुम दिया—"ठहर !" बासमचीकी आवाज सुनकर स्त्री और जोरसे भगी। बासमचीने बंदूक दाग दी। स्त्रीने बंदूककी आवाज सुनकर समझा, गोली उसे लग गयी और वह चिल्लाकर मुँहके बल गिर पड़ी। बासमची शिकारके हाथ आनेकी आशासे इतमीनानके साथ कदम रखने लगा।

एरगश्ने चश्मेसे उठकर राह चलते हुए इस दृश्यको देखा, उसे बहुत क्रोध आया, लेकिन उसके पास हथियार नहीं था, कि बासमची-पर आक्रमण कर स्त्रीको छुड़ाता। उसके देखते देखते बेचारी स्त्री बासमचीके पंजेमें पड़ने जा रही थी जैसे कि मुर्गा सियारके पंजेमें पड़ा हो, लेकिन क्या करे सिवाय गुस्सेमें दांतोंसे ओठ चबानेके कुछ नहीं कर सकता था। इसी समय एरगश्के दिलमें एक विचार आकाशवाणी-की तरह आया, उसकी आँखें चमक उठीं और वह "कितना अच्छा हो कि एक जादूसे दो काम बनें" कहते, घोड़ेकी तरफ लपका और डालीसे खोल सवार होकर उसे कोड़ा लगाकर चिल्लाया—ओ दोपाये भेड़िये, खबरदार! तेरा घोड़ा हाथसे जा रहा है।

बासमचीने एरगश्की आवाजके साथ घोड़ेकी टापोंकी पटपटाहट सुनी। उसने घूमकर देखा, सचमुच ही उसका घोड़ा जा रहा है। वह स्त्रीको वहीं छोड़ रास्तेकी ओर दौड़ा, लेकिन जबतक काँटों और झाड़ियोंके बीचसे वह अपने मोटे शरीरको निकाले, तबतक एरगश् बहुत दूर चला गया था। बासमची चिल्लाया "ठहर, नहीं तो गोली मारता हूँ।"

एरगश्ने उसके जवाबमें घोड़ेको दो कोड़े और लगाये और वह पहलेसे भी ज्यादा दौड़ने लगा। बासमचीने एकके बाद एक गोलियाँ छोड़ीं, जिसने घोड़ेके वेगको और बढ़ानेमें सहायता की।

एरगश्ने बंदूककी दौरसे दूर निकल जानेपर एक टेकरीपर पहुँच घोड़ेको रोककर पीछेकी ओर देखा, बासमची अब भी बंदूक चला रहा था और स्त्री झाड़ियोंसे निकलकर पहाड़की ओर भागी जा रही थी।

एरगश्ने गाँवको चारों ओरसे बासमचियोंसे घिरा देखा, सिर्फ सरकंडेवाले कूलकी ओर रास्ता खुला था। उसने घोड़ेको वहीं छोड़ सरकंडोंके भीतर और कूलके पानीसे होकर गाँवका रास्ता लिया और रूज़ीमुरादके पास पहुँच गया।

५

एरगश् रायन् पहुँचने, रेव्-कम्के अध्यक्षके साथ बातचीत और और दूसरी बातें रूज़ीमुरादसे कर ही रहा था, कि इसी समय कूलसे हो एक दूसरा पियादा दौड़ता हुआ रूज़ीमुरादके पास आया। यह पियादा और भी बुरी खबर लेकर आया था। उसने बतलाया कि बुखारा-जन-पंचायती-प्रजातंत्रके वकील-मुख्तारने सोवियत-सरकारके साथ विश्वास-घात किया है और वह सोवियत-सरकारके सभी हथियारों, तंकों और अशर्फियों (तिल्लों) को बासमचियों, सादिक, अन्वरपाश्शा और इब्राहीम बेकके हाथमें देकर चला गया। रूज़ीमुरादको यह खबर सुन-कर आग लग गयी और उसने कहा—वकील-मुख्तार कौन है ?

थोड़ी देर ठहरकर फिर उसने अपने ही प्रश्नका जवाब दिया :

—वकील-मुख्तार तगाय-बच्चा बुखाराका करोड़पति है, वह बुखारा-के जदीदोंका सरदार था और धोखेधड़ीसे उसने बुखारा-जन-सरकार-का अधिकार अपने हाथमें ले लिया। मालूम होता है, यह देशघाती पूर्वी-बुखाराको हाथमें ले वहाँ बासमचियोंको संगठित और शक्तिसंपन्न करनेके लिये वकील-मुख्तार बनकर आया था।

रूज़ीमुराद थोड़ी देर चुप हो रेव्-कम्के अध्यक्षके बारेमें कहने लगा—हमारे रायन्के रेव्-कम् (क्रान्ति समिति) का अध्यक्ष भी बुखाराका एक बाय-बच्चा तथा इन्हीं देशद्रोहियोंका आज्ञाकारी अनुचर सग-बच्चा (कुत्तेका पुत्र) है।

रूज़ीमुरादका गुस्सा विशेषकर इन विश्वासघातियोंके बारेमें सोचते और बढ़ा। उसने मुट्ठी बाँधकर हाथको दोनों तरफ हिलाते हुए अपने-आपसे कहना शुरू किया :

—इन विश्वासघातियोंसे इसके सिवा और किसी चीजकी आशा नहीं हो सकती थी। यदि भेड़िया भेड़का, सियार मुर्गका, बिल्ली कबूतर-

की मित्र बन सकती है, तो ये भी सोवियत सरकारके दोस्त बन सकते हैं। अफसोस कि जिन्दगीमें ऐसी घटना देखनी पड़ी।

रूज़ीमुरादने अपने-आपसे बात करना छोड़ ऊँची आवाजमें लोगोंसे कहा :—

—साथियो ! हमारा कर्तव्य यह है, कि इन विश्वासघातियोंसे सहायताकी बिलकुल आशा न रखकर महान् लेनिन और स्तालिनकी पार्टी, बोलशेविक-पार्टी, सोवियत सरकार और महान् रूसी जनताके कमकरोंपर भरोसा कर जनताके दुश्मनों इन बासमचियों और उनके सहायकोंके खिलाफ लड़ें, अपने खूनकी आखिरी बूंदतक लड़ें, यदि हथियार न हों तो मुँह और नाखूनसे लड़ें। यदि हम इस रास्तेमें अपनी जान दे दें, तो हमारे बच्चे, हमारा वर्ग महान् रूसी जनताके कमकरों की सहायतासे अपने मनोरथमें अवश्य सफल होंगे। साथियो ! जबतक जान है, लड़ते चलो, बढ़ते चलो।

—लड़ेंगे, खूनकी आखिरी बूँदतक लड़ेंगे, हथियार न होनेपर दाँत और नाखूनसे लड़ेंगे -कहते लोगोंने एक आवाजसे जवाब दिया।

रूज़ीमुराद जन-साधारणका बल पा पहलेसे भी अधिक बहादुरी और मजबूतीके साथ लड़ाईके काममें दत्तचित्त हुआ।

कारतूसोंकी बहुत कमीके कारण स्वयं-रक्षक-दलकी हालत बहुत खराब थी। बासमचियोंने मोर्चेको चारों ओरसे घेर रखा था। वे खाइयोंकी तरफ गोलियोंकी वर्षा कर रहे थे, लेकिन स्वयं-रक्षक उनकी सौ गोलीपर एक गोली चलाते और वह भी उस समय जबकि बासमची खाईके पास पहुँच जाते।

हथियार या हथियारबंद आदमियोंके न आनेसे निराश होकर स्वयंरक्षकोंकी हालत और भी बुरी थी। अंतमें सारे ही कारतूस खतम हो गये और रूज़ीमुरादके कथनानुसार दाँतों और नाखूनोंसे लड़नेकी नौबत आयी। बासमचियोंमें जो नजदीक आते, उन्हें वे बंदूकके कुन्दों-

से मारते और जो कोई उनके हाथमें आता उसे पंजोंसे पकड़कर दाँतों-से चीरते या कुदाल-कुल्हाड़ीका इस्तेमाल करते। धीरे-धीरे रूज़ी-मुरादके साथियोंकी संख्या भी कम हुई। मुट्ठीभर आदमी रह जाने-पर वह और भी बहादुरीसे लड़ते रहे। अन्तमें खंदकमें रूज़ीमुरादके साथ एरगश् बेदांत रह गया। लेकिन दोनों शेरकी तरह लड़ते एक दूसरेकी सहायता करते, जो भी बासमची सामने आता उसे जीता न छोड़ते।

इसी समय बासमचियोंके सरदारने अपने यिगितों (बहादुरों)-को ललकारकर कहा—बाकी बचे आदमियोंको जिन्दा पकड़ लाओ। कूबकारी (बकरी-नोच घोड़दौड़) करेंगे।

हुकुमको सुनते ही बासमची चारों ओरसे तीरकी तरह रूज़ी-मुराद और एरगश्पर टूट पड़े, लेकिन रूज़ीमुराद "बोलशेविक जिन्दा दुश्मनके हाथ में नहीं पड़ता" कहते एरगश्के साथ पीठ-से-पीठ मिलाये आनेवाले बासमचीकी खोपड़ी से खोपड़ी लड़ाता और शेरकी भाँति मुर्देको अपने से दूर फेंक देता। बासमचियोंने देखा कि उन्हें जिन्दा नहीं पकड़ा जा सकता, इसलिये उन्होंने चारों ओरसे गोली चलायी, पहिली गोली एरगश्की छातीमें लगी और वह गिर पड़ा।

अब रूज़ीमुराद अकेला था और कुछ गोलियोंके लगनेसे सुस्त हो गया था; लेकिन दीवारसे पीठ लगाये वह अब भी खड़ा था और उसके शरीरसे खून निकलकर कपड़ेको रग रहा था। बासमचीकी तलवारने उसके शिरको फाड़ दिया, वह जमीनपर गिर पड़ा; जमीनपर गिरनेके बाद भी गोलियाँ चलती रहीं और रूज़ीमुरादके शरीरमें शिरसे पैर-तक छेद ही छेद हो गये। खंदकमें जो भी घायल संरक्षक मिला, सबको बासमचियोंने गोली मार-मारकर खतम किया।

× × ×

बासमची अस्थायी तौरसे विजयी हुए और विजयमदसे उन्मत्त हो पागल बन गये। उन्होंने गाँवमें पहरेदार रखे बिना लूट शुरू की।

गाँवके जानदार या बेजान सारे माल लूट लिये गये। बीमार-बूढ़े, स्त्री-बच्चे जो युद्धमें शामिल न हो घरमें थे, उन्हें भी लाकर मैदानमें जमा किया और पहरा बैठा दिया। गाँवमें न कोई आदमी रह गया, न कोई माल। बासमचियोंने घरोंमें आग लगा दी। सारा गाँव जलने लगा और निरपराधोंकी आहके साथ आगकी ज्वाला और धुँआ आसमान-तक पहुँचने लगा।

बासमची गाँवके कामसे छुट्टी पा बंदियोंके पास जमा हुए। उन्होंने सुन्दर स्त्रियों और लड़कियोंको अलग करके एक तरफ रखा, बूढ़े-बूढ़ियों और अपने लिये बेकारकी औरतोंको खड़ा करके गोली मार दी और बाकी कितनों ही को बकरीकी तरह कूबकारी करनेके लिये अलग किया।

बासमचियोंने कूबकारी करनेके लिये एक आदमीको बीचमें रखा और उसे खींच ले जानेके लिये घोड़-दौड़ शुरू ही करना चाहते थे कि दूरसे सवारोंका झुंड आता दिखाई पड़ा। बासमचियोंने आगं-तुकोंको अपने दलका समझा और उन्हें अपनी विजयका परिचय देने-के लिये बड़े शौकसे कूबकारी शुरू की। अधमरे बंदीके ऊपर सवार टूट पड़े, एकने पैर, दूसरेने हाथ, तीसरेने गर्दन और चौथेने कमर पकड़-कर अपनी-अपनी तरफ खींचना शुरू किया। जो दूर थे वह भी घोड़ेको कोड़ा लगा शिरके पास आ किसी जगह पकड़कर खींचने लगे। हर एक आदमी बंदीके शरीरको झुंडसे बाहर खींच लेजा आनेवाले बासमचियोंके सामने भेंटके तौरपर पेश करना चाहता था, इसी समय मुर्देपर कौवोंकी तरह भिड़े बासमचियोंको मशीनगनकी त्र-त्र-त्रीकी आवाज सुनाई दी, लेकिन भागनेसे पहले वे सब डाली हिलाये तूत-की तरह जमीनपर गिर पड़े।

जिन्दा बचे बासमचियोंको आनेवालोंके बासमची न होनेका पता तब लगा, जबकि उनके भागनेका कोई रास्ता न रह गया था।

आगन्तुकोंने दौड़ा-दौड़ी उन्हें चारों ओरसे घेरकर उनपर मशीन-

गनों और बंदूकोंसे गोली-वर्षा करनी शुरूकी। अंत में बासमची अपने घोड़ोंको छोड़ रूज़ीमुराद की बनाई खाइयों में जा छिपे और वहाँसे लड़ने लगे, लेकिन आगन्तुक खाइयोंके पास न जा दूरसे हथबम फेंकने लगे। धूल और धुँआ बवंडरकी तरह जगह-जगह उठने लगा, जिसमें जहाँ-तहाँ बासमचियोंके हाथ और पैर आकाशमें उड़कर गिर रहे थे।

एक घंटाकी लड़ाईके बाद बहुत ही कम बासमची भागकर जान बचानेमें सफल हुए और अधिकांशको उनके किये की सजा मिली।

आगन्तुक सीमान्तपाल कमूसोमोलोमेंसे थे, जब उन्हें गाँवमें बासमचियोंके आक्रमणका पता लगा, तो सेमूयोन सेमूयोनोविच नामक कमूसोमोलके नेतृत्वमें एक दल बना गाँवके लोगोंकी सहायताके लिये दौड़ पड़े।

कमूसोमोल-अधिकारियोंने बासमचियोंको सफा करनेके बाद बीमारों और घायलोंको सीमान्तके अस्पतालमें भेजा। बासमचियोंके हाथसे सही-सलामत छूटी स्त्रियों-लड़कियोंके लिये सीमान्तपर गद्दा-तकिया-सिलाईका एक अर्तेल (सहयोगी कारखाना) खोला और बूढ़ों-बूढ़ियोंके लिये रहने-खाने-पीनेका इन्तिजाम किया; लेकिन अल्पवयस्क बच्चोंकी पर्वरिश और शिक्षा-दीक्षाके लिये कमूसोमोल-संस्थाके आधीन एक बालशाला खोली।

उसी दिन जो बच्चे बासमचियोंके हाथसे छुड़ाकर नव-स्थापित बालशालामें रखे गये, उनमें रूज़ीमुरादका पुत्र कुर्बान भी था, जिसे अनाथ "अका कुर्बान" (भाई कुर्बान) कहता था। इसी बालशालामें अब अनाथ भी भरती हुआ।

६

यह बालशाला एक अन्तर्जातीय बालशाला थी, जिसमें जहाँ ताजिक, उज़्बेक, क़ज़ाक़, तुर्कमान-जैसी स्थानीय जातियोंके बच्चे थे, वहाँ साथ

ही रूसी, उक्रइनी, पोल और लतिश-जैसी यूरोपीय जातियोंके भी बच्चे रहते थे, लेकिन अधिकांश बच्चे स्थानीय जातिके थे और इनमें भी अधिकतर वे बच्चे थे, जिनके माँ-बापको बासमचियोंने मार डाला था।

स्थानीय बच्चोंमें नारबीबिश नामकी लड़कीका अनाथके साथ विशेष स्नेह था। वह आयुमें अनाथके बराबर होते भी कदमें अधिक छोटी और शरीरमें अधिक दुर्बल थी। वह अपने काले कटे घुँघराले बालों, कुलचाकी भाँति गोल गेहुयें रंगके मुख और चमकीली काली आँखोंसे हर किसीकी दृष्टिको अपनी तरफ आकृष्ट करती थी। उसके मुँहपर दो-तीन तिल थे, जिनसे उसकी सुन्दरताको कोई हानि नहीं हुई थी, बल्कि वह स्वच्छ सुवर्णके ऊपर खोदे फूलकारीके दागकी तरह और भी शोभावर्द्धक थे। लड़कीके और दूसरे खास चिह्नोंमें उसके कंधेके बीचमें बालोंके नीचे एक मटमैले रंगकी रेखा थी। गर्दनके पीछे और बालोंके नीचे होनेसे यह रेखा हर किसीको दिखलाई नहीं पड़ती थी। अगर यह रेखा किसीको दिखलाई पड़ती, तो लड़कीका सौन्दर्य उसकी दृष्टिमें और बढ़ जाता, क्योंकि यह सफेद गर्दनके ऊपर खींची काली रेखा रौप्य स्तंभपर अंकित नन-रेखा-सी प्रतीत होती थी।

वह लड़की बालशालामें बड़ोंसे छोटों, अध्यापिकाओंसे नौकरानियोंतक और वहाँके सभी बच्चोंमें सर्वप्रिय थी। खेलने, खाने, सभी जगह लोग उसका विशेष ध्यान रखते थे।

उसके इतना सर्वप्रिय होनेका कारण केवल उसका सौन्दर्य नहीं था, बल्कि उसकी जीवन-घटना थी। उस बच्चीकी जीवन-घटना ऐसी मार्मिक थी कि सुननेवाला रोने लगता। उसी जीवन-घटनाके कारण वह बहुत मितभाषिणी-विनम्र और गंभीर रहा करती थी। वह किसीको अपनी जीवन-घटना नहीं सुनाती, लेकिन बालशालामें उसे सभीने एक रूसी अध्यापिकाके मुँहसे सुना, और एक मुँहसे दूसरे मुँह होते सब जान गये थे।

नारबीबिशका स्नेह सब बच्चोंसे अधिक अनाथके साथ था।

बालशालामें उसका कमरा अनाथके कमरेसे दूर था, तो भी खेलनेके वक्त वह अधिकतर अनाथके साथ खेला करती, खानेकी मेजपर अनाथकी बगलमें बैठा करती, विद्या-संबंधी पर्यटनोंमें अनाथके साथ चलती।

वह अनाथसे कुछ साल पहले बालशालामें आयी थी, इसलिये लिखना-पढ़ना अधिक जानती थी और अनाथको भी पढ़नेमें सहायता करती थी। पढ़ाई खतम होते ही अनाथ नारबीबिशके पास दौड़ता और न-समझे पाठोंको उससे समझता।

नारबीबिशको अनाथकी जीवनीने बहुत प्रभावित किया था। उसने उसीके मुखसे सब सुना था।

जिस समय अनाथने माँसे अलग होनेके दृश्यको कह सुनाया, नारबीबिशने एक लम्बी आह खींचकर कहा--अफसोस मेरी माँ नहीं है और मेरी माँ कौन थी, यह भी नहीं जानती।

--बाप है तो ?--अनाथने पूछा।

--ने, बाप भी नहीं है और बाप कैसा था, यह भी नहीं जानती।

उसने नारबीबिशके मुँहसे जो दो-चार बात सुनी, उसने भुक्त-भोगी अनाथके दिलको बहुत आर्द्र कर दिया और वह रोने-रोने-सा हो गया लेकिन बालशालामें जो सुख और सौभाग्य उसे देखनेको मिल रहा था, उसके कारण उसने अपने ऊपर संयम किया और आगे चलकर इसीने उसे पुराने दुःखपूर्ण जीवनको धीरे-धीरे भुलानेमें सहायता की।

इतना होनेपर भी अनाथ नारबीबिशकी जीवन-घटनाके जानने-के लोभका संवरण न कर सका और कितनी ही बातें उसने जान लीं। अनाथकी जीवन-घटनाके सुननेके बाद नारबीबिशने भी अपना मुँह खोला।

× × ×

बुखारा-तिर्मिज़की रेलवे लाइनपर तिर्मिज़के नजदीक एक स्टेशनपर इवान इवानोविच समर्स्की नामका एक पहरेदार रहता था। उसके परिवारमें बीवी, दो आठ-दस सालके लड़के और एक ५ सालकी लड़की थी। इवानकी जिन्दगी अच्छी चल रही थी, उसने अपने करावुलखाने (पुलिस-चौकी) के सामने एक फुलवाड़ी लगा रखी थी, जिसमें आलू, करम, टोमाटो-जैसी तरकारियाँ तथा मक्का और सूर्यमुखी-जैसी अनाज और तेलवाली फसल बोया करता था। इसके अतिरिक्त उसके पास एक अच्छी दुधार गाय थी, जो परिवारके खानेके लिये घी-दूध जरूरतसे अधिक देती थी।

लेकिन इवानका सुखी जीवन बहुत दिनोंतक नहीं चल पाया और १९१८ में अमीरी प्रतिक्रियावादियोंने उसके परिवारको नष्ट कर दिया। १९१८ में कोलिसोफके नेतृत्वमें जब बुखाराकी जनताकी मदद-के लिये बालशेविक आये, उस समय अमीर बुखाराने अपने राज्यकी सभी रेल-सड़कोंको नष्ट कर दिया और जो भी रेलवे-कमकर हाथ आया, सभीको बाल-बच्चोंके साथ मार डाला।

इन्हीं दिनों अमीरके बर्बर आदमियोंने इवानके करावुलखानेपर आक्रमण किया, करावुलखानेको जला दिया, इवानको बंदी बनाया और उसे बीबी-बच्चोंके साथ दूसरे करावुलखानेमें ले गये। वहाँ दूसरी जगहोंसे भी बहुतसे कमकर पकड़ लाये गये थे, जिनमें रूसी, ताजिक, उज़्बेक, तातार, क़ज़ाक़ और तुर्कमान भी थे। इन कमकरों के साथ उनके बीबी-बच्चे भी थे।

अमीरके आदमियोंने रेलमार्ग नष्ट करने, रेलके लोहोंको दूर फेंकने, गोमटियों और चौकियोंके जलानेके बाद बंदियोंको मारना शुरू किया। उन्होंने कमकरों और उनके स्त्री-बच्चोंको एक जगह जमाकर शम्शीरों, खंजरों, छुरों और भालोंसे मार डाला। वहाँ जो लोग मारे नहीं गये थे, उनमेंसे एक इवानकी स्त्री मरिया भी थी। जिस समय इन बर्बर

सैनिकोंने करावुलखानेको घेरा, उस समय मरिया अपनी गायको लिये करावुलखानेसे दूर चराने गयी थी। उसने एक चरवाहे लड़केसे रेल-पथके नष्ट करनेकी बात दोपहरको सुनी और अपनी गायको वहीं चरनेके लिये छोड़कर करावुलखाने गयी, लेकिन न वहाँ करावुलखाना था, न उसका अपना घर; सभी चीजें जल चुकी थीं और अब भी धुआं और ज्वाला निकल रही थी। मरिया इस दृश्यको देखकर पागल होने-सी हो गयी। वह अपने पति और बच्चोंको ढूँढ़ने लगी, किन्तु उनका कोई पता नहीं लगा। उसने लकड़ी लेकर आगको खोदकर देखा, लेकिन उसमें भी जले आदमीकी हड्डी या कोई चीज न मिली। मरिया वहाँसे दूसरे करावुलखानेकी ओर गयी, जहाँसे कि धुआं और आग-की ज्वाला निकलती दिखलाई पड़ रही थी। करावुलखानेके पास जानेपर बड़ा ही हृदय-द्रावक दृश्य उसे देखनेमें आया। वहाँ कमकरों और उनके बीबी-बच्चोंके मुर्दे ढेर-के-ढेर पड़े हुए थे। यह देखकर उसका होश उड़ गया और फिर कुछ धीरज धरकर उसने मुर्दोंको हटाकर देखना शुरू किया, शायद वहाँ अपने पति या बच्चोंके बारेमें कुछ मालूम कर सके। दुर्भाग्य ! वहाँ उसने उनमें अपने पति और बच्चोंके तलवारसे कटे शवोंको देखा।

यह दृश्य देखकर मरिया बेहोश हो गयी। होशमें आनेपर उसने अपने पति और बच्चोंके मुर्दोंको खींचकर अलग करके दफनानेके बारे-में कुछ करना चाहा। बच्चोंके शवोंमें एक बच्चीका शरीर मिला, जो अभी भी जिन्दा थी। बच्चीकी उमर तीन सालके करीब थी। उसकी गर्दनके पीछे तलवार लगी थी और अब भी घावसे खून बह रहा था। लेकिन बच्ची जिन्दा थी, बेहोश थी, किन्तु कभी-कभी हिलती थी। मरियाने अपने बच्चोंके भीतर इस बच्चीको देखकर सोचा, कि पति और बच्चोंके मुर्दोंको दफनानेसे इस बच्चीके जीवनकी रक्षा अधिक आवश्यक है। वह अपने-आपसे बोली :

—वे मर गये, और खतम हो गये, आज या एक दिन बाद

उन्हें दफनानेमें कोई अन्तर नहीं, लेकिन यदि जल्दी कोई उपाय न किया, तो यह बच्ची मर जायेगी।

यही विचार करके मरियाने बच्चीको मुर्दोंके भीतरसे उठा लिया और अपने सिरकी रूमालसे उसकी गर्दनको बाँध दिया, लेकिन यह तात्कालिक सहायता थी। बच्चीकी जान बचानेके लिये किसी डाक्टरकी आवश्यकता थी, और नहीं तो तात्कालिक मरहम-पट्टी करनेवाले स्थानमें ले जानेकी जरूरत थी। लेकिन डाक्टर या मरहम-पट्टी करनेवाले तिर्मिज़ स्टेशनपर ही मिल सकते थे। उसे यह भी नहीं मालूम था कि तिर्मिज़की अवस्था क्या है। शायद वहाँ भी अमीरी सैनिकोंने अपनी राक्षसी लीला दिखाई हो। मरियाने सोचा--"तिर्मिज़-की हालत जाने बिना वहाँ जाना अपने और बच्ची दोनोंके लिये अच्छा नहीं है।" लेकिन वह यह भी सोचती थी, कि लड़कीके घावको ठीक करनेके लिये कहीं जाना जरूरी है।

इसी समय मरियाके दिलमें किसी आदमीका ख्याल आया और वह घायल बच्चीको उठाये उसके गाँवकी ओर दौड़ी। वह गाँव रेलसे बहुत दूर नहीं था, उस गाँवमें उसकी एक परिचिता स्त्री थी, जिसका पति मरियाके पतिकी तरह रेलवे पुलिसमें काम करता था। वह पहले भी कई बार उस स्त्रीके पास जा चुकी थी। स्त्रीका पति दो साल पहले मर चुका था, लेकिन मरियाका आना-जाना अभी बंद नहीं हुआ था।

मरिया बच्चीको उठाये दौड़ी-दौड़ी उस स्त्रीके घर गयी।

स्त्रीने स्थानीय (देशी) ढंगसे बच्चीकी चिकित्सा की और नम्देको जलाकर उसकी राखको घावमें भर लत्तेसे बाँध दिया। उसके बाद लेई पकाकर उसे थोड़ा-थोड़ा बच्चीके गलेसे नीचे उतारा। एक घड़ी बाद बच्चीने आँख खोली और बात करने लगी। उसने पहला शब्द "आचा!" (माँ) कहा, जो कि स्थानीय (उज़्बेक) भाषाका शब्द था, उससे पता लगा कि वह किसी स्थानीय कमकरकी पुत्री है।

लड़कीने अपने आस-पास माँको न देख रोना शुरू किया। मरिया और उसकी परिचिताने बच्चीको बहुत चुप करनेकी कोशिश की, लेकिन सफल न हुईं। बच्चीके शरीरसे बहुत खून निकल गया था, इसलिये थोड़ी देर रोनेके बाद कमजोरीने फिर उसे बेहोश कर दिया। रोनेके कारण घावका मुँह फिर खुल गया था, इसलिये फिर खून निकलने लगा। स्त्रीने दुबारा नम्देको जलाकर राख भरकर पट्टी बाँधी और फिर बिस्तरेपर सुला दिया। अबकी बच्ची आरामसे सो गयी।

× × × ×

बच्चीको सुलाकर स्त्री तिर्मिज़की खबर लेनेके लिये गाँवमें गयी और कुछ देर बाद लौटकर उसने बतलाया कि तिर्मिज़ स्टेशन सही-सलामत है। आज ही अंडे बेचनेके लिये वहाँ गये एक किसानसे यह पता लगा। यह किसान तिर्मिज़में ही था, जबकि अमीरके आदमियोंने स्टेशन बर्बाद करनेके लिये आक्रमण किया, लेकिन हथियारबंद कमकरोंने मुकाबिला किया और आक्रमणकारियोंको अपने कुछ आदमियों-को मरवाकर भागनेके सिवा कोई चीज हाथ न लगी।

मरियाको यह खबर सूर्यास्तके समय मिली। उस समय जाना उसने ठीक नहीं समझा। रातको अपने पति और बच्चोंके शोकमें जैसे-तैसे बिता, प्रातःकाल सूर्योदयसे पहले ही वह तिर्मिज़की ओर दौड़ी।

मरिया जब तिर्मिज़ पहुँची, उस समय वहाँके हथियारबंद कम-कर मुर्दोंको दफनाने जा रहे थे। वह भी उनके साथ हो गयी और उसके पति और बच्चोंकी लाशें भी दफना दी गयीं।

रेलवे कमकरोंकी सहायतासे मरियाको रहनेका स्थान और काम भी मिल गया और वह बच्चीको लाने गाँव गयी। अभी बच्ची खतरेसे बाहर नहीं थी, लेकिन आरामसे सोती थी, भूख भी लगती थी और धीरे-धीरे चलती तथा खेलनेकी इच्छा प्रकट करती थी। जबतक बच्चीमें बल नहीं आगया और वह खतरेसे बाहर न हो गयी, तबतक

मरिया गाँवमें रही। जब घावका मुँह बंद हो गया और लत्ता भी हटा दिया गया, तब मरिया बच्चीको तिर्मिज़ ले आयी। जिस वक्त मरिया विदा होने लगी, उसने अपनी परिचिता स्त्रीसे बच्चीके लिये एक स्थानीय भाषाका नाम देनेके लिये कहा :

——मेरी भी एक बचिया थी, उसके मुँहपर एक लाल दाग था। इसलिये मैंने उसका नाम नारबीबिश रख दिया था। वह बच्ची बापके सामने ही मर गयी। मैं उसीकी स्मृतिमें इस बच्चीका नाम नारबीबिश रखती हूँ।

मरियाने उस नामको पसन्द किया।

× × ×

जबतक बुखारा-तिर्मिज़की रेलवे-लाइन तैयार न हो गयी, तबतक मरिया तिर्मिज़में रहकर बच्चीका पालन-पोषण करती रही। बुखारा-क्रान्ति और अमीरके भागनेके बाद वह उसी चौकीमें काम करने लगी, जिसमें उसका पति था।

नारबीबिश आठ सालकी होगयी। पति और बच्चोंका वियोग मरियाको बहुत सताने लगा और उसने अपने बंधुओंके साथ समारा (कुय्बिशेफ़) जाना चाहा, लेकिन नारबीबिशकी शिक्षा-दीक्षाके लिये दिक्कत समझकर उसने उसे अपने साथ ले जाना ठीक नहीं समझा और आमूतटपर अवस्थित बालशालामें भर्ती कराकर अपना रास्ता लिया।

नारबीबिशकी गर्दनपर जो काली रेखा दिखलाई पड़ती थी, वह उसी नम्देकी राखके कारण थी, जिसे तलवारके घावमें भरा गया था।

७

अनाथने चार साल बालशालामें शिक्षा पायी, और लिखने-पढ़नेमें सात वर्षकी पढ़ाई जितनी योग्यता प्राप्त की। कक्षामें पढ़ाये जाने-

वाले विषयोंके अतिरिक्त वह विशेष तौरसे और भी जाननेकी कोशिश करता रहा।

लिखना-पढ़ना सीख जानेके बाद पाठ्य पुस्तकोंके बाहरकी चीजों-के पढ़नेमें नारबीबिश उसकी सहायता करती थी। उसके ज्ञानकी-सीमा और बढ़ानेमें कुर्बानने भी मदद की। कुर्बान एक कम्सोमोल दलका नायक था, वही कम्सोमोल-दल जिसने कुर्बान-जैसे बच्चोंको बासमचियोंके हाथसे मुक्त किया था।

इस समय सेमूयोन् सेमूयोनोविच् पार्टी-मेम्बर होनेवाला था, वह सीमान्तपालोंके भीतर कम्सोमोल संगठनका नेतृत्व करता था, और बालशालाके बच्चोंको अन्तर्राष्ट्रीयता तथा साम्यवादकी शिक्षा देकर उन्हें कम्सोमोल बनने लायक बनाता था।

सेमूयोन् सेमूयोनोविच् एक पीले रंगका जवान था। उसकी आँखें कंजी थीं। वह बहुत मधुर-भाषी लेकिन एकबोला था। वह अपनी सारी शक्ति और साहससे जनहितके कार्योंको करता और वैयक्तिक कामोंको भी उसीके अनुसार पूरा करता था। वह कोशिश करता था, कि हर एक जवान सच्चे कम्युनिस्टोंका उत्तराधिकारी बने।

सेमूयोन् सेमूयोनोविच्को उसके समवयस्क तथा बड़े-छोटे सभी "सीना" कहते थे, स्थानीय भाषामें जिसका अर्थ छाती है। उसके बारे-में कहा करते थे "वस्तुतः यह जवान आदमीका सीना है, जिसके भीतर दिल अवस्थित है या वह स्तनाग्र है, जोकि अल्प-वयस्कोंको "क्षीर" देकर उन्हें बढ़ाता है।

अनाथने अपना साधारण ज्ञान और राजनीतिक शिक्षा अधिकतर सीनासे प्राप्त की थी। और सीनाने उसे शिक्षा देकर कम्सोमोल बनने लायक बना दिया था।

× × ×

लिखना-पढ़ना और राजनीतिक शिक्षा-जैसी बौद्धिक और आत्मिक

शिक्षाओंके साथ-साथ अनाथ व्यायाम और खेलोंमें भी बड़ी रुचि रखता था। नाव चलाना और गुप्सर-सवारी उसने पहले ही सीख ली थी, अब ऐसे कामोंमें और भी अभ्यास बढ़ाया, जिसमें एक था पानीके भीतर मछलीकी तरह चलना। वह नाव और गुप्सर अक्सर नदीमें चलाया करता और धारके विरुद्ध भी तैर सकता था, साथ ही बहती धाराके भीतर डूबकर हर तरफ चल सकता था।

अनाथने जलक्रीड़ाके अतिरिक्त सैनिक शिक्षा भी प्राप्त की और बंदूक चलाने, घोड़ा दौड़ाने, तलवार चलाने और हथबम फेंकनेको अच्छी तरह सीखा था। सैनिक शिक्षामें उसे यूरी सेंचिकोफ़ नामक जवानने सहायता दी। यूरी सेंचिकोफ़ एक घोड़सवार कम्पनीका कमांडर था और साथ ही कम्पनीके कमसोमोल-संगठनका सेक्रेटरी भी। उसकी बहादुरी, चतुराई और समाजवादी भूमिके प्रेमके कारण लोग उससे बहुत प्रेम करते थे। देश-रक्षा और समाजवादी निर्माणमें लगे लोगोंकी जीवन-रक्षाके लिये वह सदा अपना जीवन अर्पण करनेके लिये तैयार रहता था।

वह सदा बड़े लड़कोंको अपने साथ लेकर उन्हें सैनिक शिक्षा देता और कोशिश करता कि उसके सारे सुगुण उनके भीतर भी चले जाँय।

यूरी सेंचिकोफ़ बासमाचियोंकी लड़ाइयोंमें सदा आगे-आगे रहता, जब देशमें शान्ति स्थापित हो गयी, तो वह अपना समय सीमान्तपालोंमें बिताने लगा और सीमान्त-रक्षाके काममें उनकी सहायता करता। इसी समय बालशालाके सयाने लड़कोंको सैनिक शिक्षा भी देता। अनाथने भी उसीसे सैनिक शिक्षा पायी और व्यवहारकी कितनी ही सूक्ष्म बातें सीखीं।

× × ×

अनाथ अठारह सालका हुआ। उसने कमसोमोल बननेके

लिये आवेदन-पत्र दिया। उस समय सीमान्तपाल कमूसोमोल-समिति का सेक्रेटरी "सीना" था। अनाथ का आवेदन-पत्र कमूसोमोल-समिति-के व्यूरोके सामने पेश हुआ। सीनाने उससे पूछा :

—तू क्यों कमूसोमोल बनना चाहता है ?

—कमूसोमोल बननेका मेरा अभिप्राय यह है, कि समाजवादी निर्माणमें और भी दृढ़ताके साथ काम करूँ, देशको साम्यवादकी ओर ले चलूँ, इस काममें बाधा डालनेवाले जनताके शत्रुओंका मुकाबिला करूँ और इस तरह लेनिन-स्तालिनका पुत्र बन, कम्युनिस्टोंको सच्चा उत्तराधिकारी होनेकी योग्यता प्राप्त करूँ—अनाथने यह कहते और भी कहा—मैं सबसे पहले सीमान्तपाल बनना चाहता हूँ और बाहरी गुप्तचरों बासमचियों—जोकि बाहरी और भीतरी दुश्मन हैं—तथा इनके हामियोंके साथ हाथमें बंदूक लेकर लड़ना चाहता हूँ।

बासमचियों और जासूसोंसे लड़नेकी इच्छा अनाथकी पूरी नहीं हुई। उस समय बासमचियोंके बड़े गिरोह देशके भीतर नहीं रह गये थे। उनकी छोटी-छोटी टोलियाँ थीं, जो भगोड़े बासमचियों, अमीर तथा विदेशी जासूसोंसे संबन्ध जोड़कर सोवियत भूमिमें ध्वंसका काम कर रहे थे। इनके नाश करनेमें सीमान्तपालोंने बहुत काम किया।

अनाथ इस तरह कमूसोमोल बना और साथ ही सीमान्तपाल भी।

८

१९३१ का वसन्त था। बासमचियोंका कूरबाशी इब्राहीम बेक अफगानिस्तान भाग गया था। वह फिर छिपकर सरहद-पार हो सोवियत ताजिकिस्तानमें लूटपाट करने लगा। लाल सेना और लाल गोरिल्लोंके साथ सम्मुख लड़नेकी हिम्मत नहीं रखता था, लेकिन अकेले-दुकेले जो गरीब किसान हाथ लगता, उसे मार डालता, स्त्रियों-लड़कियोंको

बेआबरू करता, कलखोजोंके गोदामों और कोपरेटिव दूकानों तथा उनके पहरेदारोंको मारता।

लेकिन सारे मेहनतकश उसके विरुद्ध खड़े हुए थे। ताजिकिस्तान तथा पड़ोसी उज़्बेकिस्तानके रायनोंमें मेहनतकशों तथा कलखोजचियों ने लालभालेंदार-दल कायम किये थे और वे इब्राहीम बेकके पीछे पड़े हुए थे। लेकिन इब्राहीम बेक सांप-बिच्छूकी तरह सदा पर्वत-छिद्रों और ऊँची चोटियोंमें भागता फिर रहा था। इब्राहीम बेकको सोवियत देशके भीतर कोई सहारा नहीं था, लेकिन उसके विदेशस्थित मालिक छिपाकर उसके पास हथियार और सहायक भेजा करते थे।

इसी वजहसे उस साल सीमान्तपालोंका काम ज्यादा और अधिक जवाबदेह बन गया था। वे हर वक्त नींद छोड़ रोम-रोमको आँख बनाये सीमान्तकी देखभाल करते थे। इस काममें अनाथ, कुर्बान, निकितिन और नवरोज भी लगे थे। उनके दलका नेता सेम्योन् सेम्योनोविच् था। ये लोग रातदिन बिना सोचे एक शर-वनसे दूसरे शर-वन, एक दलदलसे दूसरे दलदलकी ओर दौड़ते रहते और कानून-विरुद्ध सीमा पार करनेवालों तथा बासमचियोंसे लड़ते थे।

यूरी सेंचिकोफ़ कभी-कभी रायनोंमें जाकर बासमचियोंसे लड़ता और कभी सीमान्तपर आ अनाथ और सीनाके कामोंमें मदद करता; जहाँ-कहीं भी समाजवादी मातृ-भूमिकी रक्षाकी बात आती, वहाँ यूरी मौजूद रहता।

× × ×

आखिरी समयमें सेम्योन्के दलमें एक लड़की शामिल हुई। लड़कीकी उम्र १८ सालकी थी, लेकिन वीरता और चतुराईमें २५ साला बहादुरोंका मुकाबिला कर सकती थी। उसकी आँखें मेष-जैसी, चेहरा सफेद, बाल भूरे, कद मझोला और बदन भरा था। उसके भूरे बाल काली भौंहोंके ऊपर पड़े दर्शकके नेत्र और हृदयको उसके

लिलारसे बाँध देते थे। हर एक आदमी उस लड़कीसे बात और हँसी-खेल करना चाहता था, लेकिन वह हर तरहके मजाक और किसी तरहके खेलको पसन्द नहीं करती थी। न जाने क्यों, सदा उसके दिलमें एक करुणा और वेदना दिखलाई पड़ती थी, जोकि किसी सोवियत-जवानमें दिखलाई नहीं पड़ती। उसके साथी उसे सदा प्रसन्न रखनेकी कोशिश करते, वेदनाभिभूत होनेके समय उसके लिये खेलका प्रबन्ध करते और चित्र-विचित्र कहानियाँ कहते-सुनते, लेकिन इनका उसपर कोई असर नहीं पड़ता। वह मदमस्त आदमीकी तरह हर एक चीज-को बेपरवाहीसे देखती, लेकिन जिस वक्त सीमान्त-पालन सम्बन्धी कोई काम होता, तो वह सबसे पहले मैदानमें कूदती और सबसे अधिक खतरेकी जगह खड़ी होती, इस काममें वह कमांडरकी आज्ञाकी भी प्रतीक्षा नहीं करती। उसे इसके लिये सावधान किया गया, सैनिक दंड भी दिया गया, लेकिन जैसे ही वैसा अवसर फिर आता, वह सब बातोंको भूल जाती।

यह लड़की १५ अप्रैल १९३१को ताशकन्दकेमें बिना छुट्टी लिये ही अपने स्कूलको छोड़कर सीमापर चली आयी और सीमान्तपालका काम करने लगी।

स्कूल छोड़नेकी बात इस तरह हुई : ताशकन्दके टेक्निकल स्कूल-में पढ़ाईके बाद १२ बजे बीस मिनटके लिये क्लाससे छुट्टी मिली, जल्दी पहुँचकर चाय पीनेके लिये लड़के एक-दूसरेको धक्का देते लघु-भोजन-शाला (बूफेत्) की ओर दौड़े। इसी समय स्कूलकी विश्रामशालामें डाकिया आया। ताशकन्दसे दूर जिनके बन्धु-बांधव रहते थे, वे बूफ़ेत् छोड़कर डाकियेकी तरफ दौड़े। विद्यार्थियोंने डाकियेको चिट्ठीका पता पढ़-पढ़के देनेका भी मौका नहीं दिया और उसे घेरकर चारों ओरसे बोलने लगे "मेरा पत्र है? क्या आज भी मेरे लिये नहीं लाये? देरसे मेरे घरसे कोई पत्र नही मिला।"

विद्यार्थियोंके बीच एक लड़की थी, जो बिना बोले-चाले कुछ

सोचती हुई चुप खड़ी थी। डाकियेने चिट्ठीका पता पढ़कर पूछा—नताशा सेंचिकोवा कौन है?

"मैं हूँ"—कहती लड़कीने डाकियेके पास जा अपने सुन्दर मांसल हाथको बढ़ाया।

मांसल और बलिष्ठ होते हुए भी लड़कीका हाथ हिल रहा था, जबतक कि लिफाफा उसके हाथमें नहीं आगया और उसने उसे पढ़ना नहीं शुरू किया। लड़कीने लिफाफेको पढ़ा। शरीरको आराम हुआ, उसके कलिका-सदृश अधर अर्धमुकुलित हो गये। उसने जरा-सी संतोष-की सांस लेकर अपने-आपसे कहा :

—धन्यवाद, अच्छा हुआ, पत्र अपने ही नामका—और किनारे एक बेंचपर जाकर उसने लिफाफा खोल पत्र पढ़ना शुरू किया।

लिफाफेके एक कोनेमें तिकोनी सैनिक मोहर थी, जिसके कारण पत्र बिना टिकटके आया था। लड़कीने एक बार फिर लिफाफेपर नजर दौड़ायी और फाड़कर उसके भीतरसे पत्र निकाला। पत्र पेंसिलसे जल्दी-जल्दी लिखा गया था। इसलिये पढ़नेमें दिक्कत हो रही थी। लड़कीको इस तरहके अक्षरोंको देखकर कुछ चिन्ता हुई। इसलिये उसने पहिले पत्रके अंतिम अंशको पढ़कर संतोषके साथ कहा—"अपना ही हस्ताक्षर"—फिर उसने पत्र पढ़ना शुरू किया। पत्र रूसी भाषामें था, जिसमें लिखा था :

मेरी प्यारी नताशा!

मैं जानता हूँ कि इस पत्रको पढ़कर तुझे बड़ा दुःख और चिन्ता होगी, लेकिन मुझे आशा है, तू हर एक दुःख-को एक बोलशेविककी तरह सहन करेगी।

मैं इस पत्रको ऐसे समय लिख रहा हूँ जबकि मुझे चारों तरफसे भेड़ियोंके एक बड़े झुंड अर्थात् बासमचियों-की बड़ी संख्याने घेर लिया है। मेरा जीवन कुछ मिनटोंसे

अधिकका नहीं है, मैं अपने कर्तव्यको पालन करनेके लिये अपने जीवनको न्यौछावर कर रहा हूँ। यदि वह सलामत रहता, तो समाजवादी मातृभूमि और समाजवादी निर्माणके काममें लगता; लेकिन मेरे विनाशसे देशरक्षा और समाज वादी निर्माण करनेवालोंकी पंक्तिमेंसे सिर्फ एक व्यक्ति लुप्त हो जायेगा। जिन्दाबाद समाजवादी मातृभूमि! जिन्दाबाद बोल्शेविक पार्टी! जिन्दाबाद लेनिन-स्तालिनकी पार्टीके सच्चे उत्तराधिकारी लेनिन-स्तालिनके कम्सोमोल! प्रिय नताशा! तुझे दुबारा धैर्य धरनेके लिये प्रार्थना करता हूँ। अपनेको संभाल! इस समाचारको मांके पास न पहुँचाना! मेरी ओरसे पत्र लिखकर उसे तसल्ली देते रहना।

अंतिम अभिनन्दन और विदाके साथ तेरा प्राणप्रिय सुहृद भाई यूरी नियाजगुलाक ८-४-३१

नताशा इस पत्रको पढ़कर बेंचपर गड़ी-सी निश्चल बैठी रही। उसकी आँखोंके सामने एक काला पर्दा पड़ गया था, जिससे वह किसी चीजको देख नहीं रही थी। लेकिन वह होशमें थी, इसीलिये बेंचसे नहीं गिरी, तो भी मदमस्तकी तरह किसी बातको समझ नहीं रही थी, और न यही जान रही थी कि शालामें क्या चीजें हैं। एक बार आँख खोलकर देखा तो शालामें कोई नहीं था। डाकिया चला गया था। बूफेत् भी खाली, विद्यार्थी अपनी कक्षाओंमें जाकर पढ़ने लगे थे।

उसने खड़ी होकर एक बार फिर पत्रके ऊपर नजर दौड़ायी। उसका शरीर कंप उठा, लेकिन यह कंपन भयके कारण नहीं, बल्कि अत्यन्त क्रोध और घृणाके कारण था। उसकी मेषी आँखें अपनी नर्मीको छोड़कर लड़नेके लिये तैयार शेरकी तरह ज्वाला वर्षा रही थीं। उसने अपने प्राणप्रिय भाईको अपनी मानस-आँखोंके सामने अंकित करके कहा:

"तूने अपने प्राणोंकी बलि उचित स्थानपर दी, शाबाश मेरे वीर भाई, लेकिन तूने अपने पत्रपर एक स्थानमें ठीक नहीं लिखा। तूने लिखा कि 'मेरे नष्ट होनेसे मातृभूमिके रक्षकोंकी पंक्तिमेंसे केवल एक व्यक्ति लुप्त हो जायेगा...' यह ठीक नहीं। तेरी बलि देश-रक्षकोंकी पांतीमें सैकड़ों हजारों बहादुर जवानोंको खींच लायेगी। तेरी बलिके बाद सबसे पहले देश-रक्षकोंकी पंक्तिमें जो तेरी जगहको पूरा करेगी, वह मैं हूँ तेरी बहिन।

इसके बाद नताशाने न किसीसे बात की, न स्कूलके मुख्याध्यापकके पास जाकर छुट्टी मांगी और न अपने सहपाठियोंसे विदाई ली। वह स्कूलके दरवाजेसे निकलकर सीधे स्टेशन पहुँची। उसने वहांसे माँके लिये सिर्फ एक पत्र लिखा:

"भाईका तार पाकर मैं उसके पास जा रही हूँ। समय नहीं था कि तुझसे मिलकर विदा होती। क्षमा कर, मैया! वहाँ से एक सविस्तार पत्र लिखूंगी।" पत्रको डाकमें डाल नताशा ट्रेनमें बैठी और उसी सरहदकी ओर चली, जिसके पास उसका भाई बलि हुआ था।

६

८ अप्रैल १९३१ को यूरी सेंचिकोफ़ बासमचियोंसे मुकाबिला करनेके लिये अपने दलके साथ रायन्में गया हुआ था। सेंचिकोफ़के सभी सैनिक कमूसोमोल थे और वह स्वयं कम्पनीकी कमूसोमोल समिति-का सेक्रेटरी था।

दंगरा रायन्के न्याजगुलाक गाँवमें अकस्मात् सेंचिकोफ़के दलका बासमचियोंके एक बड़े गिरोहसे साक्षात्कार हुआ। बासमची बीसगुने थे। सेंचिकोफ़को समय नहीं मिला, कि मोर्चाबन्दी करके बासमचियों-से लड़े। उसे खुले मैदानमें लड़नेके लिये मजबूर होना पड़ा। यद्यपि युद्धमें पहले बंदूक और मशीनगनें चलीं, लेकिन बासमचियोंको अपने विरोधियोंकी अल्प संख्याका पता लग गया। उन्होंने अपनी बहुसंख्या-

का लाभ उठा कम्पनीके नजदीक पहुँचकर लड़ना शुरू किया। लड़ाईमें गोलीकी जगह बंदूकके कुन्दे, संगीनें और तलवारोंसे काम लिया जाने लगा। सेंचिकोफ़ अपने दलसे आगे बढ़कर हर आक्रमणमें कुछ बासमचियोंका सिर तनसे अलग करता।

सेंचिकोफ़ लड़ाई जारी रखते कोशिश कर रहा था, कि युद्ध-क्षेत्र-को किसी अनुकूल स्थानमें ले जाय, जिससे मोर्चाबन्दी करके बास-मचियोंसे डटकर लड़े। लेकिन घड़ी-पर-घड़ी बासमचियोंके पास सहा-यता पहुँच रही थी और जब-जब बासमचियोंको नयी सहायता मिलती, यूरीके दलकी हालत और बुरी होती जाती। सेंचिकोफ़का मनोरथ सफल नहीं हुआ। अपनी नयी कुमुकके साथ बासमचियोंने यूरीके दल-को घेर लिया और मुक्तिकी कोई आशा न रह गयी। सेंचिकोफ़ अपने दलकी मुक्तिके लिये बहुत सोच रहा था, उसने हुकुम दिया कि दल उचासपर चला जाय, लेकिन वहाँ पहुँचनेका रास्ता न था। सेंचिकोफ़-ने हुकुम देनेके बाद खुद उचासकी ओर घोड़ा दौड़ाया। रास्ता रोकनेके लिये नियुक्त बासमची सेंचिकोफ़को थाम नहीं सके। सेंचिकोफ़ घेरेको तोड़ता-फाड़ता एक ओर पहुँच गया।

बासमचियोंने सेंचिकोफ़को भागते देखकर उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया, लेकिन जब भी बासमची उसके नजदीक पहुँचते, वह अपने घोड़ेका मुंह फेरकर उनके रास्तेको रोक आक्रमण करके एक-दोको घोड़ेसे गिराता। बासमची लौटकर भगते।

अबकी बार बासमचियोंकी बड़ी जमात सेंचिकोफ़के पीछे पड़ी। इससे उसके दलका घिरावा पतला होगया और दल उसे चीरकर कमां-डरका हुकुम बजाते उचासपर पहुँच गया। दल उचासपर मोर्चाबन्दी करके वहाँ से बंदूकों और मशीनगनोंसे बासमचियोंपर गोली-वर्षा करने लगा। गोलियाँ बहुत कम बेकार जा रही थीं और बासमची ढेर-के-ढेर जमीनपर लुढ़क रहे थे। लड़ाईमें बासमची बहुत मारे गये और अन्तमें भागनेके लिये मजबूर हुए। लेकिन भागते हुए भी उनमेंसे कितने ही

जान न बचा पाये। बासमच्चियोंपर विजय हुई, लेकिन कमांडर सेंचिकोफ़-का पता नहीं था।

सूर्य अस्त हो गया और चारों ओर अंधकार फैल गया। सैनिकोंने मुर्दों और घायलोंके भीतर बहुत ढूँढ़ा, किन्तु सेंचिकोफ़ वहाँ नहीं मिला।

दूसरे दिन सवेरा हुआ। सैनिकोंने फिर अपने कमांडरको खोजना शुरू किया। वे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते एक मीलतक निकल गये, वहाँ एक नालेके किनारे उन्होंने उसके मृत शरीरको पाया। आस-पास बासमचियों-के तीन मुर्दे पड़े थे, जिनमेंके कुछ तमंचेसे मारे गये थे और कुछ तलवारसे काटे गये थे। सेंचिकोफ़ने मरनेसे पहले इन्हें मौतके घाट उतारा था। सैनिक अपने कमांडरके मुर्देको उठा लाये। जांच पड़ताल करनेपर उसकी जेबमें एक पत्र निकला। इसी पत्रको पाकर यूरी सेंचिकोफ़की बहिन नताशा सेंचिकोवा देश-रक्षकोंकी पांतीमें सम्मिलित होनेके लिये दौड़ पड़ी।

१०

१९३१ के जूनका अन्त था। रातको आकाश निरभ्र था, सितारे चमक रहे थे, जिनके प्रतिबिम्ब कूलके स्वच्छ जलमें दीपककी तरह चमक रहे थे। आमू नदीका जल तरंगित होकर चल रहा था और लहरें एक-एक गजकी उठकर सीढ़ी-सी बना रही थीं। पीली मिट्टी मिले आमूके जलमें सितारोंके प्रतिविम्ब नहीं दीख रहे थे, किन्तु पीले पानी-की सीढ़ियाँ सोनेकी तरह चमक रही थीं।

कूल और आमूतटके बीचमें एक बड़ा शर-वन दिखलाई पड़ रहा था, जिसमें हरे सरकंडे मरकत-खड्ग-सदृश पत्ते फैलाये खड़े थे।

अनाथ, कुर्बान, निकितिन, नवरोज और नताशा सेम्योन् सेम्योनो-विच्के नेतृत्वमें अपनी देख-भालके कर्तव्यमें लगे हुए थे। अनाथ और नवरोज एक जगह, कुर्बान और निकितिन दूसरी जगह, और नताशा अलग खड़ी नदीकी ओर देख रही थी। कभी उनकी नजर बयाबानकी

तरफ जाती और कभी शर-वनकी ओर। कोई भी गतिशील चीज चाहे वह चमगादड़ उड़ा हो, या पानीमें मछली कूद रही हो, उनकी नजर-से छूट नहीं सकती थी। सीना (सेम्योन्) कई वार अपने आदमियों-के पास जाता और उन्हें होशियार करता रहता।

अनाथ और नवरोज शर-वनके उत्तर तरफ थे, जहाँसे एक तरफ कूल और दूसरी तरफ नदी-तट दिखलाई पड़ता था।

रात दो घंटा बीत गयी थी, इसी समय कूलके किनारे अनाथने कोई कालिमा देखी। कालिमा किनारे-किनारे शर-वनकी ओर आ रही थी। अनाथ नवरोजको होशियार रहनेके लिये कहकर अंधेरेमें लेटकर कूलकी ओर सरकने लगा। अभी वह शर-वनके किनारे जाकर कूल-तटपर नहीं पहुँचा था, कि कालिमा कूलके उस कोनेपर पहुँच गयी, जहाँ वह शर-वनसे मिलता था और जहाँ जानवरोंके पानी पीनेका घाट था। वहाँ जाकर वह अनाथ की दृष्टिसे अन्तर्धान हो गयी। वह अब जान गया, कि कालिमा कोई आदमी है, पानी या शर-वनमें गायब होकर कहीं भाग न जाये, इसलिये अनाथ उठकर तीरकी तरह पन-घटकी ओर दौड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा, तो आदमी पानीके किनारे बैठा हाथ-मुँह धो रहा था। आदमीको सजग हुए बिना उसपर टूट पड़ा, उसके दोनों हाथोंको अपने हाथोंमें जोरसे पकड़कर अनाथने उससे पूछा :

—तू कौन है? यहाँ क्या काम करता है?

एकाएक पकड़े जानेसे आदमी त्रस्त और कंपित था, लेकिन अनाथकी आवाजको सुनते ही वह हँसकर बोला—मैं चर हूँ और तेरे हाथमें पड़नेके लिये आया हूँ।

यह स्वर सुनकर अनाथका मानसिक तनाव कुछ ढीला हुआ और अपनी ओर पीठ किये आदमीको सामने करके पानीके किनारेसे ऊपर ले गया और उससे पूछा :

—तेरा यह काम भयंकर है, रातको यहाँ आकर तूने ठीक नहीं किया ।

यह आदमी नारबीबिश थी और उसने अनाथके अंतिम प्रश्नका जवाब देते हुए कहा—आदमी किसीसे प्रेम करता है और उसे एक मास नहीं देखता, तो वह उसे देखनेके लिये किसी खतरेकी परवाह नहीं करता।

—अगर दिनमें आती तो उतना खतरा नहीं था, सीमान्तपालोंमें अधिकांश तुझे जानते हैं। किन्तु इस रात को ? यह बहुत भयानक है। मैंने भी तेरी आवाज सुननेसे पहले नहीं पहिचान पाया। यदि आगे बढ़कर तेरे पास नहीं आता और भागता ख्याल करता, तो आश्चर्य नहीं, गोली चला बैठता।

—यह हाथ और इनमें पकड़ी गयी बंदूक मुझपर गोली नहीं चला सकते—कहते नारबीबिशने अनाथके हाथोंको मलते हुए और आगे कहा—यह हाथ समाजवादी जन्मभूमिके एशानकुल वाय और शाकुल-जैसे दुश्मनोंको पकड़ने और गोली चलानेके लिये हैं।

—अच्छा, तू दिनमें क्यों नहीं आयी ?

—कामका समय है, मैं इस साल सरकारी परीक्षा देकर तेख्नीकुम् (टेक्निकल हाईस्कूल) समाप्त करना चाहती हूँ।

—आ, इस साल तेख्नीकुम् समाप्त कर रही है ?

—निष्ठुर !—नारबीबिशने अनाथकेहाथोंको हिलाते हुए कहा—क्या तू जानता नहीं कि मैं इस साल तेख्नीकुम् खतम कर रही हूँ। जान करके भी अनजान बन रहा है।

—सचमुच नहीं जानता—हँसते हुए अनाथने कहा, लेकिन उसके स्वरसे मालूम होता था कि वह जानता है; इसलिए बातको सुधारते हुए फिर कहा—ठीक है, जानता हूँ, किन्तु सीमान्तघर काम बहुत अधिक है और मेरा सारा ध्यान इधर लगा है, इसीलिये भूल गया, नहीं तो क्यों जानबूझकर अनजान बनता।

—झूठ बोल रहा है—जानबूझ कर अनजान बननेको स्वीकार कर नारबीबिशने कुछ गर्म होकर कहा।

—क्यों झूठ बोलूँगा। जानबूझकर अनजान बननेसे क्या फायदा कि झूठ बोलूँगा!-अनाथने हँसते हुए कहा।

—मुझे तो तूने तेखनिकुम् समाप्त करनेके बाद का जो वचन दिया था, कहीं ऐसा न हो कि किसी नवागन्तुकको दिल दे बैठे और उसे भूल जाये। फिर तो कमसोमोली और बोलशेविकी कर्तव्यके लिये शाबाश—कहना होगा—नारबीबिशने कहा।

अनाथने हंसते हुये कहा—सुन नारबीबिश! अरे, मैंने जो वचन तुझे दिया है, उसे भूला नहीं हूँ; लेकिन उस वक्त मैंने सोचा था, कि जबतक तू तेखनिकुम् समाप्त करेगी, तबतक मैं भी अपने दिलके कुछ महत्त्वपूर्ण कामोंको पूरा कर लूंगा और संतोषके साथ हम दोनों रजिस्ट्री करके सुखसे जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन मेरा वह सोचना और अनुमान ठीक नहीं उतरा और अब भी मैं अपने मनके लायक कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं कर पाया। इसलिये मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ, कि जबतक मैं कोई महत्त्वपूर्ण कामको पूरा नहीं कर लेता, तबतक मुझे छुट्टी दे—अनाथने नारबीबिशके हाथोंमें अपने हाथको रखे बोलते हुए अपनी निगाह नदीकी ओर डाली और फिर कहना शुरू किया—मैं अपने वचनसे नहीं फिरा, न किसीको दिल दिया और न दूंगा। दुनियामें मेरे दो ही दिलदार (प्रिय) हैं, एक उनमेंसे हमारी समाजवादी जन्म-भूमि है जो कि तेरी भी दिलदार है, और दूसरी स्वयं तू! बस सलाम्। अब तू चाहे विश्वास करे या न करे।

नारबीबिशने उत्तर देते हुए कहा—विश्वास करती हूँ लेकिन वह महत्त्वपूर्ण काम क्या है, क्या मैं उसे जान सकती हूँ?

—जान सकती है—अनाथने नदीकी ओरसे आंखको हटाये बिना कहा—मैंने प्रतिज्ञा की है, कि जबतक अपने बापके हत्यारों और मांके ऊपर आफत ढानेवालों तथा अपनी समाजवादी मातृ-भूमिके दुश्मनों

और अशुभचिन्तकोंको गिरफ्तार या नष्ट न कर लूं, तबतकके लिये मैं इस कामको स्थगित रखना चाहता हूँ।

नारबीबिश कुछ बोलना चाहती थी लेकिन एकाएक अनाथने नदीकी ओर आँख गड़ाकर "ठहर" कहते उसे बोलनेसे रोक दिया और उसके हाथसे अपने हाथको निकालकर नदीकी ओर सरकते हुए फुसफुसाती आवाजमें कहा—तू यहीं जमीनपर लम्बी पड़ जा…… ने, अच्छा है तू भी मेरी तरह जमीनपर सरकती पीछे-पीछे आ। लेकिन ध्यान रखना कि आस-पासका कोई आदमी तुझे न देखे—-कहते अनाथ सरकने लगा।

११

अनाथने नारबीबिशसे बात करते वक्त नदीके किनारे एक खड़ी कालिमा देखी, वह कालिमा थोड़ी देर खड़ी रह अन्तर्धान हो गयी। उसके थोड़ी देर बाद कितनी ही कालिमायें प्रगट होकर लुप्त हो गयीं। अनाथने नारबीबिशसे बात करते यह देखा, फिर उसने पानीके भीतर एक कालिमाको देखा, जो कभी लुप्त होती और कभी प्रगट होती, तटके नजदीक आ रही थी।

यही कारण था जो अनाथने जल्दीमें बात काटकर नदीकी ओर सरकना शुरू किया। जब अनाथ नवरोजके पास आया, तो कालिमा बहुत नजदीक आ गयी और मालूम हुआ, कि एक डोंगी आ रही है। वह कभी लहरके ऊपर आती दिखलाई देती और कभी ढँक जाती। डोंगी धारको काटती किनारेकी ओर शर-वनके पास आके ठहरी और उसे एक सबल अभ्यस्त हाथने खींचकर बाहर निकाला।

अनाथने देखा कि नवरोज पिनक ले रहा है। उसने उसे जगाकर नावकी ओर इशारा किया और नदी तटकी ओर सरकना चाहा। नवरोजने आँख खोलकर नावकी ओर देखा, लेकिन सीमान्तपालोंके नियमको भूलकर सिगरेट मुँहमें दबा उसने दियासलाई जलायी

जिसमें कि सिगरेटके धुएंसे नींद बिलकुल दूर हो जाय। अनाथ नवरोजकी इस चेष्टाको देखकर मुँहसे आवाज न निकाल सरककर पीछे लौटा और आगको अपनी आड़में ले सिगरेटको मुँहमेंसे छीन जमीनपर फेंककर उसे पैरोंसे मस दिया फिर फुसफुसाती आवाजमें "तू सीमान्तापालोंके नियमोंको कब याद करेगा?" कहते नदीकी ओर सरकने लगा।

लेकिन नाववालोंने नवरोजके दियासलाई जलानेसे शायद समझ लिया, कि यहाँ आदमी हैं, इसलिये वह नावको मोड़कर दूसरे (अफगानिस्तानी) तटकी ओर चलाने लगे। अनाथ नवरोजके कामसे अफसोस करके उसे गाली देते बिजलीकी तरह दौड़कर नदीतटपर पहुँचा। वहाँसे वह नावके ठहरनेकी जगहकी ओर चला, सीना, निकितिन और नताशा वहाँ पहुँच गये थे और उन्होंने सरकंडोंके बीच खड़े होकर सलाह की।

—गोली मारकर नावको डुबानेके सिवा और कोई उपाय नहीं—निकितिनने कहा।

—अगर जिन्दा पकड़ते तो और अच्छा, क्योंकि तब हम भेद लेनेमें सफल होते—सीनाने कहा।

—पकड़ना ठीक था—निकितिनने कहा—अब जब कि पकड़ नहीं सके तो उन्हें मार डालना ही उचित है।

—पकड़ेंगे—अनाथने आकर कहा, जब कि निकितिन अपनी बात समाप्त कर रहा था और शर-वनके भीतर कपड़ेको उतारकर सीनासे पूछा—आज्ञा ?

—जा, किन्तु सावधानी रखते पकड़ना—सीनाने कहा।

अनाथके शरीरपर जंघियाके सिवा और कुछ नहीं था। वह शर-वनसे निकलकर नदी-तटपर गया और उसने पानीमें जरा भी आवाज किये विना धीरेसे नदीमें डुबकी मारी। उसने ५०-६० गजका फासला पानीके भीतर-भीतर मछलीकी तरह तै किया, और फिर ऊपर उठकर जरा देर सांसें ले डुबकी लगायी। अनाथ इसी तरह नावके पास पहुँचा। मल्लाहने



"सरकंडोंके बीच⋯सलाह" (पृष्ठ १६०)

सीमान्तपालोंसे अत्यन्त डरकर भाग निकलनेके लिये बड़ी शक्ति लगायी थी। इसके कारण उसके हाथपैर बहुत थक गये थे और कोशिश करने-

पर भी नाव धारकी ओर बढ़ रही थी।

अनाथने नावके मांगेके पास पहुँचकर वहाँ बंधी रस्सीको बड़ी सावधानीसे हाथमें ले पानीके भीतर खींचा और डूबकर रस्सीके छोरको अपनी कमरमें बाँध पानीकी तहमें बैठा। फिर नावको किनारेकी ओर खींचने लगा, लेकिन जिसमें नाववालोंको मालूम न हो, इसलिए वह दस गज किनारेकी ओर खींचकर बीस गज धारके साथ जाने देता।

मल्लाहने देखा, कि नाव सिर्फ धारकी तरफ नहीं चल रही है, बल्कि सोवियत-तटसे भी नजदीक होती जा रही है। उसने इसका कारण आमू-नदीकी तीक्ष्ण धाराको समझा और पूरी कोशिश करगे लगा कि नावको दूसरे किनारेकी ओर ले जाय। लेकिन उसका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया और नाव सोवियत-तटके और नजदीक होती गई। अब मल्लाहने समझा कि नावको कोई खींच रहा है। उसने "रस्सीको काटो" कहकर नावमें बैठे लोगोंको आवाज दी और स्वयं घबड़ाकर पतवारको और जोरसे चलाने लगा।

--किस चीजसे काटें?--एक नौकारोहीने कहा।

—नावमें एक छुरा है, उसीसे लेकर काटो।—बहुत ढूँढ़-ढाँढ़ करनेपर छुरा मिला, लेकिन छुरा बहुत भोथा और मोर्चा खाये था। उससे रस्सी नहीं कट सकी। आदमीने हताश होकर कहा--"छुरा नहीं काटता।"

--ऐसा है तो रस्सीको खोल दो!--नाविकने कहा।

लेकिन रस्सीकी गाँठ बहुत दृढ़ थी, जो पानीसे भीगकर और मजबूत हो गयी थी। उसे भयसे कांपती अंगुलियाँ नहीं खोल सकीं।

नाव तटके बिलकुल नजदीक आ गयी। नाविकने "कल्तबान" (लंठ) कहकर गाली देते पतवार नावमें फेंक दी और स्वयं रस्सी खोलने लगा। लेकिन अधिक पतवार चलानेसे उसके हाथ फूलकर कड़े हो गये थे और वह रस्सीको खोल नहीं सका। "कल्तबानो" कहते नावमें बैठे आदमियोंको गाली दे बंदूक हाथमें ले नावके किनारेसे

अपनेको छिपा रस्सी खींचनेवालेके ऊपर आनेकी प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही अनाथ सांस लेनेके लिये ऊपर आया, उसने गोली दागी, लेकिन गोली दागनेसे पहले ही अनाथ पानीके भीतर था। गोलीकी आवाज सुनते ही तीरसे भी बंदूककी गोलियाँ छूटने लगीं। सीमान्त-पालोंकी इच्छा मारनेकी नहीं थी, बल्कि वे डराकर उन्हें घबड़ा देना चाहते थे, इसीलिये उनकी गोलियाँ नावसे एक पोरिसा ऊपरसे गयीं।

उधर नाव फिर पहलेकी तरह किनारेकी तरफ खींची जा रही थी।

—गुप्सरमें हवा भरो कल्तबानो (लंठो)!—पागलकी तरह नाविक-ने कहा और फिर बंदूकको नाव खींचनेवालेकी तरफ करके उसके ऊपर आनेकी प्रतीक्षा करने लगा।

गुप्सरको भरकर नौकारोहियोंमेंसे एकने चढ़कर भागनेके लिये उसे पानीमें डाला, लेकिन इसी समय किनारेसे एक गोलीने आकर गुप्सरको फाड़ दिया और उसकी हवा निकल गयी।

नाविकने—"कल्तबान! मैंने तुझे गुप्सरको इसलिये तैयार करनेके लिये नहीं कहा, कि तू उसपर चढ़कर भाग जाये, बल्कि उसे अपने लिये तैयार करनेको कहा"—कहते अपने सारे कपड़ेको निकाल नंगा हो पानीमें कूदना चाहा।

लेकिन अभी पानीमें कूद नहीं पाया था, कि उसके हाथ-पैरोंको रस्सीमें फँसा, शक्तिशाली हाथोंने किनारेकी तरफ खींचना शुरू किया। ये मजबूत हाथ कुर्बान और निकितिनके थे। अब नाव किनारेके बहुत नजदीक आ गयी थी और ऊपरसे लगातार गोलियाँ चल रही थीं। नौकारोहियोंने किनारा पास देखकर अपने कपड़ोंको उतारकर पानीमें कूदना चाहा, लेकिन इसी समय किनारेसे आवाज आयी "हिलना नहीं, नहीं तो गोली मारे जाओगे।" वे रुक गये। यह आवाज सीनाकी थी। आवाजके साथ तीन गोलियाँ भी सनसनाती नौका-रोहियोंके कानोंके पाससे निकल गयीं। वे मुर्दोंकी तरह नावके भीतर गिर गये। इन गोलियोंको सीनाके हुकुमसे नवरोज, नताशा और

नारवीबिशने छोड़ा था। नाव आकर नदी किनारेकी कीचड़में फँसकर सूखी जमीनके पास पहुँचनेसे कुछ गज पहिले ही ठहर गई।

सीना, नताशा और नवरोज कीचड़में कूदते-फाँदते नावके पास पहुँचे। उनके हाथोंमें तमंचा था, जिनको उन्होंने नौकारोहियोंकी तरफ लगा रखा था। सीनाने नौकारोहियोंसे कहा—हाथोंको ऊपर उठा नावसे बाहर आओ।

लेकिन नौकारोहियोंने पानीमें कूदनेके लिये अपने सारे कपड़ोंको उतार दिया था। इसलिये दोनों हाथोंको उठानेकी जगह वह एक हाथको गुह्य स्थानपर रखे दूसरेको उठाये नावके बाहर निकल आये। सीना उनकी इस हालतको देखकर हँसने लगा और दोनों हाथोंको उठानेके लिये मजबूर न करके "आगे आगे चलो" कहते उन्हें आगे चलाया। उधर:सूखे स्थानपर निकितिनने नाविकको भी एक हाथ आगे, एक हाथ पीछे किये पकड़ रखा था। सीना, नताशा और नवरोजने भी तीनों नौकारोहियोंको ले जाकर नाविकके पास खड़ा किया।

अनाथ एक कोनेमें बैठा था और उसके शिरमें नारबीबिश और कुर्बान पट्टी बाँध रहे थे। सीनाने उसे देखकर कहा--एय्, तुझे क्या हुआ?—और चिन्तित हो उसके पास गया।

—कुछ नहीं हुआ है, नाविककी एक गोली शिरके चमड़ेको छूती चली गयी है, उसीको बँधवा रहा हूँ।

—गोली एक जगह नहीं, बल्कि सिरमें कई जगह लगी है और काफी घाव है—कुर्बानने कहा।

—घाव लगा है, लेकिन खतरनाक नहीं—अनाथने कहा—कोई भय नहीं है, यह इसीसे मालूम होता है, कि घायल होनेपर भी मुझे उसका पता नहीं लगा, जबतक कि जमीनपर आकर सिरसे खून निकलते नहीं देखा।

—कामकी गंभीरताके लिये घावकी गंभीरताको जानते हुए भी तूने अनजान कर दिया होगा—सीनाने कहा—कमूसोमोली वीरोंकी यह एक विशेषता है ! शाबाश।

अनाथके घावके बँध जानेपर सीनाने कुर्बानसे कहा—तू नताशाके साथ जाकर नावकी चीजें उठा ले आ। मैं नारबीबिशके साथ अनाथकी देखभाल करता हूँ—और फिर उसने किनारे-किनारे जाकर अनाथके सूखे कपड़ेको उसके सामने रखते हुए कहा—भीगी जाँघिया उतार और सूखे कपड़ेको पहिन, तुझे बहुत सर्दी लग गयी है—कहकर वह सरकंडोंकी आड़में चला गया।

अनाथको कपड़ा पहनानेमें नारबीबिशने सहायता दी। इसी समय सीनाने वहाँ रखे अपने सैनिक थैलेको लाके अनाथके पास बैठकर खोला और उसके भीतरसे एक लाल-लाल बोतल और एक प्याला निकाल बोतलको खोलकर उसमेंसे लाल बरांडी प्यालेमें डाली, फिर उसके ऊपर दूसरे बर्तनसे गरम काफी डालकर उसे अनाथको पिलाया। पीते ही अनाथने शरीरमें गर्मी महसूस की और कहा—"एक प्याला और दे।" सीनाने दूसरा प्याला भरकर दिया। अनाथने अपनेमें पूरी शक्ति अनुभव की और सीनाकी ओर देखकर कहा—बंदियोंकी तलाशी लेनी चाहिये, उनसे पूछ-ताछ करनी चाहिये।

—पूछ-ताछ करेंगे—सीनाने अपनी जगहसे खड़े होकर कहा—लेकिन पूछ-ताछ करनेसे पहले देखना चाहिये, कि वे क्या साथमें लाये हैं।

× × × × ×

नावमें दो बहुत भारी बस्ते, चार चमड़ेके थैले, भारी चीजोंसे भरा एक पुराने कपड़ेका थैला, एक मोथा छुरा, एक बंदूक, एक कारतूसोंसे भरी पेटी तथा बंदियोंके कपड़े मिले।

सीनाने सबसे पहले भारी बस्तेको खोला, उसमें ग्यारह गोलियाँ पचास बंदूकें मिलीं। दूसरे थैलेमें तरह-तरहकी बनावटके तमंचे थे और चमड़ेके थैलोंमें बंदूकों और तमंचोंके कारतूस भरे हुए थे। एक थैलेमें एक पत्र मिला, जिसे कुर्बानने टार्चकी रोशनीमें पढ़कर रूसी अनुवाद करके सीनाको सुनाया। पत्रमें हथियारोंके बारेमें लिखनेके बाद लिखा हुआ था :

"………इस वक्त तुम्हारे पास इतने हथियार भेज रहा हूँ, पीछे और भी भेजूँगा। बड़ी सावधानीसे रहो और जहाँतक हो लाल-सैनिकों और लाल-गुरिल्लोंके साथ सीधे मुकाबिला न करो, अपनी रहनेकी जगहोंको बराबर बदलते रहो। रातको अधिकतर पहाड़ी चोटियोंमें बिताया करो। जब भी अवसर मिले, किसानोंको लूटने और कतल करनेसे बाज न आओ। गाँवोंको जला दो और ऐसा काम करो, कि लोग जिन्दगीसे बेज़ार हो जायँ। कलखोजों (पंचायती खेती) और कलखोजचियोंके साथ तनिक भी दया न दिखाओ! इसे न भूलना, कि दीहातमें आजकल सोवियत सरकारके अवलम्ब कलखोज और कलखोजची हैं………"

पत्रके अंतमें मोहर और हस्ताक्षर थे, जो स्पष्ट नहीं थे।

चीजोंकी देखभाल कर लेनेके बाद सीनाने आफिसमें टेलीफोन किया और वहाँसे लारी भेजनेके लिये कहा।

अब सीनाने बंदियोंसे पूछ-ताछ शुरू की :

—तुम्हारा नाम क्या है, तुम्हारे बापका नाम क्या, कहाँके रहनेवाले और क्या काम करते हो, किस अभिप्रायसे इधर आये, किसने इन हथियारोंको जमाकरके भेजा और इन्हें किसके पास ले जा रहे थे ?

सीना रूसी भाषामें पूछ रहा था और कुर्बान उसका अनुवाद करता जा रहा था। लेकिन बंदी एक भी प्रश्नका जवाब न दे मोमियायीकी तरह निश्चल नीरव खड़े रहे। सवालोंको कई तरह

घुमा-फिराके पूछा गया, लेकिन उनका मुँह नहीं खुला। दिन होनेको आया, लेकिन अब भी बंदी कुछ नहीं बोल रहे थे। अनाथ यह देखकर अपनेको रोक नहीं सका और नारबीबिशके मना करनेपर भी अपनी जगहसे उठकर बंदियोंके पास गया, जिसमें कि पूछ-ताछमें सहायता करे।

अनाथने दिनके प्रकाशमें बंदियोंको एकाएक देखकर करके अपने साथियोंसे कहा—काम पूरा हो गया। तुम लोग पूछ-ताछ करनेकी तकलीफ मत करो। ये जवाब नहीं देते, तो कोई बात नहीं, मैं इनकी ओरसे जवाब देता हूँ।—उनकी आँखें अनाथके ऊपर गड़ी थीं और कान उसकी बातकी ओर। अनाथने सबसे बूढ़े बंदीकी ओर संकेत करके कहा:

—यह मेरा भूतपूर्व स्वामी, मेरे बापकी हत्या करानेवाला और मेरी माँपर आफतें ढाहनेवाला एशानकुल मर्दां है।

फिर मध्यवयस्क बंदीकी ओर इशारा करके बोला—यह मेरे बापका हत्यारा शाकुल सुबूहान है।

फिर जवानकी ओर इशारा करते बोला—यह मेरा स्वामिपुत्र, इसी एशानकुल बायका बेटा इस्तम् है।—अनाथने अंतमें नाविककी ओर इशारा करके कहा—यह मेरा अंतिम स्वामी ऊराज अवज़ मुराद है, इसने अपना सारा जीवन पैसेवाले भगोड़ोंकी सेवामें खर्च किया है।

सीमान्तपाल अनाथके मुँहसे बंदियोंके बारेमें सुनकर बहुत खुश हुए और उन्होंने करतल-ध्वनि करके "उरा" का उद्घोष किया। नारबीबिश हर्षसे नाचती हुई पास जाकर अनाथके कानमें बोली—अब तेरे वचन पूरा करनेका समय भी आ गया।

—पूरा करूँगा—कहकर अनाथने उसके हाथोंको दृढ़तासे पकड़ लिया।

जिस समय सीमान्तपाल इस तरह प्रसन्नता प्रगट कर रहे थे, उसी

समय नदीके भीतरसे आवाज आयी—इस भगोड़ेको किनारेपर लानेमें मेरी मदद करो।

सभीने नदीकी तरफ नजर डाली, देखा कि नताशा पानीके भीतर नंगी डूबी हुई गुप्सरपर सवार एक व्यक्तिको पकड़े कीचड़के पास खड़ी है।

उसकी मददके लिये सीना दौड़ा और गुप्सर-सवारको गुप्सरके साथ ले आकर बंदियोंके पास खड़ा कर दिया।

इस व्यक्तिकी पोशाक स्थानीय स्त्रियों-जैसी थी। उसका शिर और मुंह रूमालसे बँधा था, सिर्फ आँखोंके सामने दो छेद खुले हुए थे।

—अपनेको छिपानेके लिये इस भगोड़ेने अच्छा ढंग निकाला है—निकितिनने कहा।

—मैं भगोड़ा नहीं हूँ, मैं इस आदमी (एशानकुल बायकी ओर इशारा करके) के हाथसे भागकर बोलशेविकोंकी शरणमें आयी हूँ।

आवाजको सुनते ही अनाथने—"मेरी मैया, मादर जानम्! तुझे देखे कितने दिन हो गये!" कहते दौड़कर उसे अपने अंकमें भर लिया।

इसी समय आकाशमें बहुत नीचेसे उड़ते विमान की घनघनाहट सुनाई दी, सबकी आँखें उधर गड़ गयीं। विमानने लोगोंके शिरके ऊपर आकर कुछ कागज फेंके। सीनाने एक कागज उठाकर ऊँची आवाजसे पढ़ा। उसमें लिखा था :

> "बासमचियोंका कूरबाशो इब्राहीम बेक जो बाबाताग-की ओर भगा घूम रहा था, कल काफिरनिहाँ नदीके किनारे लाल-भालादारोंके हाथों पकड़ा गया।"

सीमान्तपालोंने फिर हर्ष-ध्वनि, करतल-ध्वनि और "उरा" घोष किया। नताशा आज तक न हँसी थी, न उसने हँसी-मजाकमें भाग लिया था, किन्तु इस समय "मेरे प्यारे भाईका हत्यारा पकड़ा गया"

कह निकितिनके हाथोंको पकड़कर नाचने लगी। अनाथ भी मांके बँधे शिर और चेहरेको खोलकर उसके साथ नाचने लगा। नारबीबिश भी नाचके अखाड़ेमें उतरी और अनाथ माँको छोड़ उसके साथ नाचने लगा। बाकी साथी ताली बजाकर ताल देने लगे।

बोझा ढोनेवाली लारी भी पहुँच गयी और बंदियोंके साथ हथियार-को उसके ऊपर रख दिया गया।

भुवनभास्करने ऊँचे पर्वतोंके पीछेसे अपने मुखको ऊपर उठाया और उसकी किरणें भूमि और आमू नदीपर पड़ने लगीं।
